तत्त्वार्थसूत्र—
जैनागमसमन्वय

समन्वयकर्ता
साहित्यरत्न, जैनधर्मदिवाकर
उपाध्याय मुनि श्री आत्माराम जी महाराज
(पञ्जाबी)

प्रकाशिका
श्रीमती रत्नदेवी जैन
लुधियाना

द्वितीयावृत्ति ५००] १९४१ [वीर सम्वत् २४६७

FOREWORD

The Upadhyaya, Sri Atma Ram ji is a well known monk of the Sthanakavasi Sect Ever since his initiation into the order he has devoted himself to a study of Jaina Philosophy and literature He has done a useful work by translating the following Sutras into Hindi:—

1 The Anuyogadvara.
2 The Avasyaka
3 The Dasasrutaskandha
4 The Dasavaikalika
5 The Uttaradhyayana.

Besides these he compiled from the Sutras an original treatise entitled *Jaina-tattva-Kalika-vikasa* where the original texts have been translated into Hindi and explained fully

For use in Jain Schools the Upadhyaya compiled a set of readers wherein he has combined sacred and secular instruction.

Upadhyaya Atma Ram Ji is a thorough scholar of Jaina literature not only on the traditional lines, but on the comparative lines also Some years ago he published a valuable paper in the Hindi monthly "Saraswati" wherein he compared a number of passages from the Jaina Sutras with similar ones found in the Buddhist literature The present volume i. e, the *Tattvarthasutra-JainagamaS'amanavaya* is another work of this kind Here, of course, the material compared comes from the Jaina sources only The *Tattvartha* or the *Tattvarthadhigama Sutra* (also called the *Moksa-Sastra)* is the

earliest extant Jaina work in Sanskrit and is composed in the Sutra style It is regarded authoritative both by the Digambaras and the Svetambaras Its author Umasvati (according to the Digambaras, Umasvami) lived about 2,000years ago This Sutra was one of the most widely and deeply studied works in the past as the number of commentaries on it (about forty) shows Leaving aside the question whether the *Agamas* are older or later than the *Tattvartha Sutra*, Upadhyaya Atma Ram ji has been able to find out from the *Agamas* passages corresponding to all the individual sutras of the *Tattvartha*. For his comparison he has chosen the Digambara recension of the *Tattvartha*, perhaps to indicate that, so far as the fundamental

principles are concerned, there is not much difference of opinion between the Digambaras and the Svetambaras The passages quoted from the *Agamas* often have a striking similarity with the sutras of the *Tattvartha* both in words and meaning

It hardly needs to be added that the present work of Upadhyaya Atma Ram ji is a highly valuable apparatus for Research connected with Jaina philosophy and literature, and as such it will be fully appreciated by scholars working in that direction

Oriental College, LAHORE

BANARSI DAS JAIN

प्रस्तावना

इस अनादि संसार-चक्र में परिभ्रमण करते हुए आत्मा को मनुष्य जन्म और आर्यत्व भाव की प्राप्ति हो जाने पर भी श्रुतिधर्म की प्राप्ति दुर्लभ ही है। इस के अतिरिक्त सम्यग्दर्शन भी सम्यक् श्रुत पर ही निर्भर है। अतएव उक्त सर्व साधन मिल जाने पर भी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिये सम्यक्श्रुत का अध्ययन अवश्य करना चाहिये।

अब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि उक्त प्राप्ति के लिये अध्ययन करने योग्य कौन २ ग्रन्थ ऐसे हैं जिनको सम्यक्श्रुत का प्रतिपादक कहा जाए। इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि जिन ग्रथो के प्रणेता सर्वज्ञ अथवा सर्वज्ञसदृश महानुभाव हैं वे आगम ही

अध्ययन करने योग्य हैं। क्योंकि जिसका वक्ता आप्त होता है वही आगम सम्यग्दर्शन की प्राप्ति मे कारण होता है।

यद्यपि सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति क्षायिक, क्षायोपशमिक अथवा औपशमिक भाव पर निर्भर है तथापि सम्यक् श्रुत को उसकी उत्पत्ति मे कारण माना गया है। अतएव सिद्ध हुआ कि सम्यक् श्रुत का अध्ययन अवश्य करना चाहिये।

श्वेताम्बर—स्थानकवासी सम्प्रदाय के अनुसार सम्यक्श्रुत का प्रतिपादन करने वाले ३२ आगम ही प्रमाणकोटि मे माने जाते हैं। वे निम्न प्रकार हैं—

११ अङ्ग, १२ उपाङ्ग, ४ मूल, ४ छेद और ३२वां आवश्यकसूत्र।

इनके अतिरिक्त इन आगमों के आधार से एव इनके अविरुद्ध बने हुए ग्रन्थो को न मानने में भी उक्त सम्प्रदाय आग्रहशील नहीं है।

उक्त शास्त्रो के विषय मे विशेष परिचय प्राप्त करने के लिये इस विषय के जैन ऐतिहासिक ग्रंथ देखने चाहियें।

अनेक महानुभावों ने उक्त आगमों के आधार पर अनेक प्रकार के ग्रंथों की रचना की है, जिनका अध्ययन जैन समाज में अत्यन्त आदर और पूज्य भाव से किया जा रहा है। इन लेखकों में से भी जिन महानुभावो ने आगमों मे से आवश्यक विषयो का संग्रह कर जनता का परमोपकार किया है उन को अत्यन्त पूज्य दृष्टि से देखा जाता है और उनके ग्रन्थ जैन समाज मे अत्यन्त आदरणीय समझे जाते है। वर्तमान ग्रन्थ तत्त्वार्थ सूत्र (मोक्ष शास्त्र) की गणना उन्हीं आदरणीय ग्रथो मे है। इस ग्रन्थ में इस के रचयिता ने आगमों में से आवश्यक विषयों का संग्रह कर जनता का परमोपकार किया है। इसमे तत्त्वो का सग्रह समयोपयोगी तथा सूक्ष्म दृष्टि से किया गया है

इसके कर्ता ने आगमो की मूल भाषा अर्द्धमागधी से विषयों का संग्रह कर उनको सस्कृत भाषा के सूत्रों में प्रकट किया है। सूत्रकार ने अपने ग्रथ मे जैन तत्त्वों का दिग्दर्शन विद्वानो के भावानुसार सस्कृत भाषा में किया। प्राय: विद्वानो का मत है कि तत्त्वार्थसूत्र के रचयिता का समय विक्रम की प्रथम शताब्दी है। सस्कृत भाषा उस समय विकसित हो रही थी। जिस प्रकार इस ग्रंथ के कर्ता ने इस सग्रह मे अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया है उसी प्रकार अनेक विद्वानो ने इसके ऊपर भिन्न२ टीकाओं की रचना करके जैन तत्त्वों का महत्व प्रगट किया है। और इस ग्रथ को आगम के समान ही प्रमाण कोटि में स्थान देकर इसके महत्व को बहुत अधिक बढ़ा दिया है।

पूज्यपाद उमास्वातिजी महाराज ने जैन तत्त्वो को आगमों से संग्रह कर जैन और जैनेतर जनता का बडा भारी उपकार किया है।

इस सूत्र को सग्रह ही माना गया है । यह ग्रन्थ सूत्रकार की काल्पनिक रचना नहीं है। कारण कि इस ग्रन्थ मे जिन२ विषयों का संग्रह किया गया है, उन सब का आगमो में स्पष्ट रूप से वर्णन है। अत' स्वाध्याय प्रेमियों को योग्य है कि वे भक्ति और श्रद्धापूर्वक जैन आगम तथा तत्त्वार्थसूत्र दोनों का ही स्वाध्याय करें, जिससे भेद भाव मिट कर जैन समाज उन्नति के शिखर पर पहुँच जावे।

अब रहा यह प्रश्न कि क्या यह ग्रन्थ वास्तव मे सग्रह ग्रन्थ है? सो आगमो का स्वाध्याय करने वाले तो इस ग्रथ को आगमो से संग्रह किया हुआ मानते ही हैं। इसके अतिरिक्त आचार्यवर्य हेमचन्द्रसूरि ने अपने बनाये हुए 'सिद्धहेमशब्दानुशासन' नाम के व्याकरण मे पूज्यपाद उमास्वाति जी महाराज को संग्रह कर्ताओं में उत्कृष्ट संग्रहकर्ता माना है। जैसा कि उन्होने उक्त ग्रन्थ की स्वोपज्ञवृत्ति मे कहा है।

उत्कृष्टोऽनूपेन २ । २ । ३६

उत्कृष्टार्थादनूपाभ्या युक्ताद्द्वितीया स्यात् । अनु-सिद्धसेनं कवयः । उपोमास्वातिं संग्रहीतारः ॥३६॥

स्वोपज्ञ बृहद्वृत्ति में भी उक्त आचार्यवर्य ने उक्त सूत्र की व्याख्या में कहा है :—

"उत्कृष्टेऽर्थे वर्तमानात् अनूपाभ्या युक्ताद् गौणा-न्नाम्नो द्वितीया भवति । अनुसिद्धसेन कवय. । अनु-मल्लवादिन तार्किका । उपोमास्वाति सग्रहीतारः । उप-जिनभद्रक्षमाश्रमण व्याख्यातारः तस्मादन्ये हीना इत्यर्थ' ॥ ३६ ॥"

आचार्य हेमचन्द्र का समय विक्रम की १२ वीं शताब्दी सभी विद्वानो को मान्य है । आपके कथन से यह भली प्रकार सिद्ध हो जाता है कि पूज्यपाद उमा-स्वाति संग्रह करने वालो में सबसे बढ़कर सग्रह करने वाले माने गये हैं । आगमों से संग्रह किये जाने से यह ग्रन्थ भी संग्रह ग्रंथ माना गया है ।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि भगवान् उमास्वाति ने संग्रह किस रूप मे किया है ? इसका उत्तर यह है कि इस ग्रन्थ मे दो प्रकार से सग्रह किया गया है। कही पर तो शब्दशः सग्रह है अर्थात् आगम के शब्दों को संस्कृत रूप दे दिया गया है और कही पर अर्थ सग्रह है अर्थात् आगम के अर्थ को लक्ष्य मे रखकर सूत्र की रचना की गई है। कही २ पर आगम में आये हुए विस्तृत विषयो को सक्षेप रूप से वर्णन किया गया है।

आगमो से किस प्रकार इस शास्त्र का उद्धार किया गया है ? इस विषय को स्पष्ट करने के लिये ही वर्तमान ग्रन्थ विद्वत्समाज के सन्मुख रखा जा रहा है। इसका यह भी उद्देश्य है कि विद्वान् लोग आगमो के स्वाध्याय का लाभ उठा सके।

इस ग्रंथ में सूत्रो का आगमो से समन्वय किया गया है। इसमे पहले तत्त्वार्थसूत्र का सूत्र, दिया है

फिर आगम प्रमाण, जिससे पाठकवर्ग आगम और सूत्र के शब्द और अर्थों का भली प्रकार ज्ञान प्राप्त कर सके।

यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस ग्रन्थ में दिये हुए आगम प्रमाण आगमोद्धार समिति द्वारा मुद्रित हुए आगमो से दिये गये हैं।

यह ग्रन्थ इतना महत्त्वपूर्ण है कि प्रत्येक व्यक्ति के स्वाध्याय करने योग्य है। वास्तव में यह तत्त्वार्थसूत्र आगम ग्रन्थो की कुञ्जी है। अतः जिन २ विद्यालयों, हाईस्कूलों और कालेजों में तत्त्वार्थसूत्र पाठ्यक्रम से नियत किया हुआ है उन २ संस्थाओ के अध्यक्षो को योग्य है कि वह सूत्रो के साथ ही साथ बालको को आगम के समन्वय पाठो का भी अध्ययन करावें, जिससे उन बालको को आगमो का भी भली भांति ज्ञान हो जावे।

कुछ लोग यह शंका भी कर सकते हैं कि 'संभव

है कि श्वेताम्बर आगमों मे तत्त्वार्थसूत्र के इन सूत्रो की ही व्याख्या की गई हो । इस विषय मे यह बात स्मरण रखने की है कि जैन इतिहास के अन्वेषण से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि आगम ग्रन्थो का अस्तित्व उमास्वाति जी महाराज से भी पहले था इसके अतिरिक्त तत्त्वार्थसूत्र और जैन आगमों का अध्ययन करने से यह स्वत ही प्रगट हो जावेगा कि कौन किस का अनुकरण है । अतएव सिद्ध हुआ है कि आगमो का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये, जिस से सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की प्राप्ति होने पर निर्वाणपद की प्राप्ति हो सके । अन्त में आगमाभ्यासी सज्जनों से अनुरोध है कि वे कही पर यदि कोई त्रुटि देखें या किसी स्थल में आगमपाठो के साथ किये गये समन्वय मे कुछ न्यूनता देखें और उन की दृष्टि में कोई ऐसा आगम पाठ हो जिससे कि उस कमी की पूर्ति हो सके तो वे

महानुभाव हमे अवश्य सूचित करें ताकि इस ग्रन्थ की आगामी आवृत्ति मे उसका प्रबन्ध किया जावे। आशा है सज्जन पुरुष हमारे इस कथन पर अवश्य ध्यान देंगे।

श्री श्री श्री १००८ आचार्यवर्य श्री पूज्यपाद मोतीराम जी महाराज, उनके शिष्य श्री श्री श्री १००८ गणावच्छेदक तथा स्थविरपदविभूषित श्री गणपतिराय जी महाराज, उनके शिष्य श्री श्री श्री १०८ गणावच्छेदक श्री जयरामदास जी महाराज और उनके शिष्य श्री श्री श्री १०८ प्रवर्त्तकपदविभूषित श्री शालिगराम जी महाराज की ही कृपा से उनका शिष्य मैं इस महत्त्वपूर्ण कार्य को पूर्ण कर सका हूँ।

गुरुचरणरजः सेवी
जैनमुनि उपाध्याय आत्माराम

आवश्यक सूचना

स्वाध्याय के समान दूसरा कोई तप नहीं

स्वाध्याय सर्व दुःखों से विमुक्त करने वाला है

[सज्झाय सव्व दुक्ख विमोक्खणे]

प्रिय विज्ञ पुरुषो! आपको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि हमने, साहित्यरत्न जैनधर्मदिवाकर उपाध्याय मुनि श्री आत्माराम जी महाराज सगृहीत तत्त्वार्थसूत्र जैनागमसमन्वय में से केवल मूल-सूत्रों और मूल आगम-पाठों को, उनसे ही पुनः सम्पादित कराकर, स्वाध्यायप्रेमी महानुभावों के लिये, एक सुन्दर गुटका के आकार में प्रकाशित कर दिया है। इस स्वाध्याय गुटका में पूर्व प्रकाशित

बृहद् ग्रन्थ की अपेक्षा, उपाध्याय जी महाराज ने हमारी प्रार्थना पर इतनी और विशेषता कर दी है कि पहले संस्करण मे, जहां आगमो के कहीं उपयोगी मात्र आंशिक पाठ उद्धृत किये थे, अब वहां इस गुटके मे उनका सम्पूर्ण पाठ दे दिया है तथा कई एक आवश्यक पाठ अधिक बढा दिये हैं, ताकि स्वाध्याय प्रेमियों को आगम-पाठों के अधिक परामर्श का पुण्य अवसर प्राप्त हो सके। इसलिये सर्वज्ञ वीतराग प्रणीत धर्म में अभिरुचि रखने वाले प्रत्येक महानुभाव को, यह लघु पुस्तकरत्न, प्रतिदिन के स्वाध्याय के लिये, अवश्य अपने पास रखना चाहिये।

गुजरमल प्यारेलाल जैन
चौड़ा बाजार,
लुधियाना।

त्रिविध धर्म

तिविहे भगवता धम्मे पण्णत्ते, तंजहा—सुअधिज्झिते सुज्झातिते सुतवस्सिते, जया सुअधिज्झितं भवति तदा सुज्झातियं भवति जया सुज्झातियं भवति तदा सुतवस्सियं भवति, से सुअधिज्झिते सुज्झातिते सुतवस्सिते सुतक्खाते णं भगवता धम्मे पण्णत्ते।

टीका—'तिविहे' इत्यादि स्पष्टं, केवलं भगवता महावीरेणेत्येव जगाद सुधर्म्मस्वामी जम्बूस्वामिनं प्रतीति, सुष्टु-कालविनयाराधनेनाधीतं—गुरुसकाशात् सूत्रतः पठितं स्वधीत, तथा सुष्ठ-वि-

धिना तत एव व्याख्यानेनार्थतः श्रुत्वा ध्यातम्—
अनुप्रेक्षितं, श्रुतमिति गम्य सुध्यातम्, अनुप्रेक्ष-
णाभावे तत्त्वानवगमेनाध्ययनश्रवणयो प्रायो-
ऽकृतार्थत्वादिति, अनेन भेदद्वयेन श्रुतधर्म्म उक्तः,
तथा सुष्ठु-इह शोकाद्याशसारहितत्वेन तपस्यितं—
तपस्यनुष्ठान, सुतपस्यितमिति च चारित्रधर्म्म
उक्त इति, त्रयाणामप्येषामुत्तरोत्तरतोऽविनाभावं
दर्शयति—'जया' इत्यादि व्यक्त, पर निर्दोषाध्ययन
विना श्रुतार्थाप्रतीते. सुध्यान न भवति, तदभावे
ज्ञानविकलतया सुतपस्यित न भवतीति भाव, यदे-
तत्—स्वधीतादित्रय भगवता वर्द्धमानस्वामिना
धर्म्म. प्रज्ञप्त: 'से'त्ति स व्याख्यातः—सुष्ठूक्तः
सम्यग्ज्ञानक्रियारूपत्वात्, तयोश्चैकान्तिकात्यन्ति-
कसुखावन्ध्योपायत्वेन निरुपचरितधर्म्मत्वात्, सुग-
तिधारणाद्धि धर्म्म इति उक्त च—

'नाण पयासयं सोहओ तवो संजमो य गुत्तिकरो।
तिराहपि समाओगे मोक्खो जिणसासणे भणिओ॥'
ज्ञान प्रकाशक शोधकं तप. सयमस्तु गुप्तिकर।
त्रयाणामपि समायोगो मोक्षो जिनशासने भणितः॥
णमितिवाक्यालकारे। सुतपस्यितमितिचारित्रयुक्त।

स्वाध्याय का महाफल

सुयस्स आराहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सु०

अन्नाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ॥ २४ ॥

उत्तराध्ययन सू० अध्य० २६

सज्झाएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

स० नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ १८ ॥

उत्तरा० अ० २६

सज्झाए वा निउत्तेण सव्वदुक्खविमोक्खणे

उत्तरा० अ० २६ गा० १०

सज्झायं च तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं—

उत्तरा० अ० २६ गा० ३७

स्वाध्याय महातप है

बारसविहम्मिवि तवे,

अब्भितरबाहिरे कुसलदिट्ठे ।

नवि अत्थि नवि य होही,

सज्झायसमं तवोकम्मं ॥ १२६ ॥

धन्यवाद्

इस पुस्तक के संशोधन कार्य में पंडित मुनि श्री हेमचन्द्रजी महाराज ने विशेष भाग लिया है। एतदर्थ पण्डितजी महाराज का धन्यवाद किया जाता है।

निवेदक—

गुजरमल जैन

सम्मति पत्र

सुप्रसिद्ध श्रीमान् प० हंसराज जी शास्त्री

प्रस्तुत ग्रन्थ तत्त्वार्थसूत्र जैनागमसमन्वय स्वनामधन्य उपाध्याय मुनि श्री आत्मारामजी की प्रोज्ज्वल प्रतिभा तथा उनके दीर्घकालीन सतत जैनागमाभ्यास का सुचारु फल है। आप श्वेताम्बर जैनधर्म की स्थानकवासी सम्प्रदाय मे एक अद्वितीय विद्वान् हैं। यद्यपि आज तक आपने जैनधर्म से सबन्ध रखने वाली कई एक मौलिक पुस्तके लिखी तथा कई एक जैन आगमों का सुबोध हिन्दी भाषा मे अनुवाद भी किया तथापि प्रस्तुत ग्रथ के सकलन द्वारा आपने साहित्य-प्रेमी जैन तथा जैनेतर सभ्य ससार की जो अमूल्य सेवा की है उसके लिये आपको जितना भी धन्यवाद दिया जाय उतना ही कम है।

आपका यह सग्रह तत्वज्ञान के जिज्ञासुओं की अभिलाषा-

पूर्ति के लिये तो पर्याप्त है ही, परन्तु भारतीय तत्त्वज्ञान की ऐतिहासिक दृष्टि से गवेषणा करने वाले विद्वानो के लिये भी यह बड़े महत्व की वस्तु है।

जैनतत्वज्ञान के संस्कृत वाङ्मय मे तत्वार्थसूत्र का स्थान सबसे ऊंचा है। जैन तत्व ज्ञान विषयक संस्कृत भाषा का यह पहला ही ग्रन्थ है। जैनधर्म के प्रत्येक सम्प्रदायका इस के लिये बहुमान है। यही कारण है कि श्वेताम्बर और दिगम्बर आम्नाय के सभी विद्वानो ने, अपनी २ योग्यता के अनुसार इस पर अनेक भाष्य वार्त्तिक और विशद टीकाएँ लिखकर अपने स्वत्व एव श्रद्धा का परिचय दिया है।

तत्वार्थसूत्र के प्रणेता वाचकवर्य उमास्वाति भी अपनी कक्षा के एक ही विद्वान् हुए हैं। जैन विद्वानों में तत्त्वज्ञान सम्बन्धी संस्कृत रचना मे सबसे अग्रस्थान इन्हीं को ही प्राप्त हुआ है। इन्होंने अपनी उक्त रचना मे आगमों मे रहे हुए समग्र जैनतत्त्वज्ञान को प्राजल संस्कृत भाषा मे जिस खूबी से संग्रहीत किया है वह उनके प्रौढ पाण्डित्य, जैनागम

विषयिणी उनकी गम्भीरगवेषणा और लोकोत्तर प्रतिभा चमत्कार के लिये ही आभारी है।

प्रस्तुत ग्रन्थ मे तत्त्वार्थसूत्रान्तार्गत सूत्रो की रचना जिन२ आगम-पाठो के आधार पर की गई है उन सभी आगम-पाठो का उपयोगी अश उन२ सूत्रो के नीचे उद्धृत कर दिया गया है। कहीं २ पर तो तत्त्वार्थ के मूल सूत्र और आगे के मूलपाठ म अक्षरश समानता देखने मे आती है। केवल भाषा के उच्चारणमात्र मे ही अन्तर है तथा शब्दशः और भावश साम्य तो प्राय' है ही। इससे वाचकउमास्वातिजी की उक्त रचना का मूल जैनागमो के साथ कितना गहरा सम्बन्ध है इस बात के निर्णय के लिये किसी प्रमाणान्तर के ढूढने की आवश्यकता नहीं रहती। मुनिजी के इस समन्वय रूप सकलन को देखकर मेरी तो यह दृढ धारणा हो गई है कि तत्वार्थसूत्रों की आधारशिला निस्सन्देह प्राचीन श्वेताम्बर परम्परा में उपलब्ध जैनागम ही है।

मेरे विचार मे तत्वाथ का यह आगमसमन्वयसाम्प्रदायिक

व्यामोह के कारण अन्धकार मे रहे हुए बहुत से विवादास्पद उपयोगी विषयों की गुत्थी को सुलझानेमें भी सफल सिद्ध होगा। एव तत्त्वार्थसूत्र पर विशिष्ट श्रद्धा रखने वाले विद्वानों की उसके (तत्त्वार्थसूत्र के) मूल स्रोतरूप जैनागमों की तरफ अभिरुचि बढने की भी इससे पूर्ण आशा है। मेरी दृष्टि मे तत्त्वार्थसूत्र ही एक ऐसा ग्रन्थ है जो जैनधर्म की सभी शाखाओं को बिना किसी हिचकिचाहट के मान्य हो सकता है। इसलिये इस अमूल्य पुस्तक का सुचारु रूप से सम्पादन कर के उसका प्रचार करना चाहिये।

अन्त मे मुनि जी के इस उपयोगी और सुचारु समन्वय का अभिनन्दन करता हुआ मैं उनसे साग्रह प्रार्थना करता हूँ कि जिस प्रकार उन्होंने इस कार्य मे सब से प्रथम श्रेय प्राप्त किया है उसी प्रकार वे तत्त्वार्थ के सागोपाग सम्पादन में भी सबसे अग्रसर होने का स्तुत्य प्रयास करें।

PROF DR M WINTERNITZ
XIX, CECHOVA 15,
Prague, Czechoslovakia
October 26th 1936.

THE SECRETARY,
OFFICE OF JAIN BARADARI,
RAWALPINDI CITY,
India/Punjab

Dear sir,

I am greatly obliged to you sending me a copy of the Tattvarth-Sutra-Jainagamasamanvaya edited by the Upadhyaya Sri Atma Ram. This famous manual of Jaina Philosophy and ethics by the great Umasvati, in its beautiful new garb will certainly attract many readers who wish to be introduced into the Jainagama

Yours Faithfully,
M WINTERNITZ

WORLD CONFERENCE
For
International Peace Through Religion
(Formerly Universal Religious
Peace Conference)
"ECCLEPAX, NEW YORK."
October, 28, 1936.

KEVRA MALL JAIN, SECRETARY
JAIN BARADARI,
Rawalpindi City,
INDIA, PUNJAB

Dear Sir,

Thank you very much for the book of Tattavartha Sutra, edited by Uphadhaya Atma Ram Ji, Maharaj, which was received a few days ago We greatly appreciate this courtesy and have placed the book in our library

Cordially Yours
HENRY A. ATKINSON,
GENERAL SECRETARY

HAMBURGIFCHE UNIVERFITAT
Senior Fur Kultur Und
CEFCHICHTE INDIENS.

HAMPURG, 9TH NOVEMBER, 1936

MR KEVRA MALL JAIN,
Secretary, Jain Baradari,
RAWALPINDI CITY.

Dear Mr Jain,

I duly received a copy of the Tattavaitha Sutra edited by Upadhyaya Shri Atmaram Ji and want to express my best thanks for the same which please convey to the Upadhyaya Maharaj "His book is not only excellenty printed and can thus seive as a model volume to most printers of your country, but above all shows a great learning and intimate knowledge of the Agamas and is worth of being studied by all those who want to go back to the sources of Jain-

ism For there cannot be any doubt that Umasvati based his Sutras upon the prakrit texts The fact that these, though belonging to the Svetambaras, have been selected to illustrate the Digambara recension of the Tattvartha, seems most suitable to promote the harmony between both those creeds"

With best wishes,

I am

Yours Sincerely,

Dr W. Schubring,

PROFESSOR

फर्ग्युसन व विलिंग्डन कॉलिज त्रैमासिक पत्रिका

Tattavartha-Sutra. Jainagamasamanvayah Edited by Upadhyaya Jain Muni Atma-

ramaji, published by Chandrapatiji Suputri (daughter) of Lala Sher Sinhji Jain Rohtak, Feb 1936

Tattvartha Sutra or Tattvarthadhigama Sutra is a very important manual in Sanskrit on Jain philosophy composed in Sutra style by the well-known Jain writer Umasvati The authoritativeness of the manual is recognised by both the sects, the Svetambaras as well as the Digambaras, although the versions recognised by each of these sects are not without variations in the total number of Sutras as well as in the readings of individual Sutras, Similarly, there seems to be a difference of opinion regarding the authorship of the Bhashya on the Sutras

The special and the most attractive and useful feature of this edition is that the Editor has added after each Sutra the original passages in Ardhamagadhi Prakrit from the Jain Sacred Works— the passages which according to the editor formed as it were the basis for the Sutras composed by Umasvati The editor has taken care to give references to the editions of the agama works published by "Agamoddhra Samiti" Those who have the experience of editing works which require passages to be traced to the original sources can very well understand and appreciate not only the vast erudition of the learned editor but also the patient and laborious task which the editor must have willingly sub-

mitted himself to The editor has also given in an appendix a comparative statement of the Sutras admitted by the Digambaras as well as the Svetambaras

The present edition is printed in a very clear type and is very good, handy, pocket size edition with attractive binding and we have great pleasure in recommending it to students of Jainism We have no doubt that it will be specially welcomed by all students of Jain Philosophy who desire to go to the original sources

P. V BAPAT.

पं० सुखलालजी, प्रो० हिन्दू युनिवर्सिटी, बनारस

आपका तत्त्वार्थ विषयक गुटका मिला, तदर्थ कृतज्ञ हू। इसकी बाह्य रचना आकर्षक है, पर मैं तो इसके पीछे तो आपका आन्तरिक स्वरूप विषयक प्रयत्न है, उसका विशेष आदर करता हू। क्योकि इस प्रयत्न से तत्त्वार्थ के ऐतिहासिक और तुलनात्मक अभ्यासियो को बहुत कुछ मदद मिलेगी।

आपका यह समन्वय मेरे लिए बड़ा ही सन्तोषप्रद है। जिस एक परिशिष्ट मे समग्र आगमो और तत्त्वार्थ सूत्रों का समन्वय तोलन करने का स्वप्न चिरकाल से था, वह वस्तु विना प्रयत्न से अन्यसाधित सामने देखकर भला किसे आनन्द न होगा ? अतएव मेरी विशाल और माध्यमिक योजना के एक अश के पूरक रूप से आपके प्रयत्न का सविशेष आदर करना मेरे लिए तो स्वभाव से ही प्राप्त है।

पं० बेचरदास जी दोशी, भू० पू० प्रो० गुजरात विद्यापीठ (अहमदाबाद)

आगमों के मूल में तत्वार्थसूत्र सम्बन्धी जो सामग्री पाई, वह सब इस सग्रह मे सगृहीत कर दी है। प्राय' अनेक स्थानों म तो तत्वार्थ के मूल सूत्रो और आगमो के मूल पाठ के बीच शब्दशः और अर्थश' साम्य दृष्टिगोचर होता है। " तुलनात्मक दृष्टि से अभ्यास करने वालो के लिए तो यह सग्रह खास तौर पर उपयोगी सिद्ध होगा । आगम स्वाध्यायी समन्वयकार श्रीमान् उपाध्याय आत्मारामजी मुनिवर के हृदय को जहा तक मैं समझ सका हूँ, वहा तक मुझ पर उनके समदृष्टि गुण की ही अधिकाधिक छाप है। और इसी दृष्टि से मैं उनके इस सग्रह का प्रयोजन धार्मिक समभाव को उत्पन्न करना एव अधिकाधिक पुष्ट करना ही समझता हूँ, जो मेरे लिए तो सोलहो आने सन्तोषकारक है।

जैन इतिहासिक के प्रखर अभ्यासी विद्वान् पं० नाथूराम जी प्रेमी, बम्बई

यह एक बिल्कुल नई चीज है। तत्वार्थ सूत्र जैनागमों पर से किस प्रकार संगृहीत हुआ है, यह दृष्टि इस से प्राप्त होगी और जैन साहित्य के विकास क्रम को समझने के लिए यह बहुत उपयोगी होगा ।

कविरत्न उपाध्याय जैन मुनि श्री अमरचन्द्रजी

आपकी इस शोध ने भारतीय साहित्य में जैनागमों का मस्तक ऊंचा कर दिया है। तत्त्वार्थ सूत्र पर आज के इतिहास में इस प्रकार का तुलनात्मक प्रयत्न कभी नहीं हुआ। सुविस्तृत आगम साहित्य मे से प्रत्येक सूत्र का उद्गम स्रोत ढूंढ निकालना, वस्तुतः आपका ही काम है। आपकी यह अमर कृति युग युग चिरञ्जीवी रहे ' '।

सुप्रसिद्ध जैन विद्वान् मुनि श्री विद्याविजयजी

तत्वार्थ सूत्र पर क्या अभिप्राय लिखू ? ऐसे सर्वमान्य तात्विक ग्रन्थ को जिस सुन्दरता के साथ निकाला है, उसको देखकर हर किसी को प्रसन्नता हुए बिना नहीं रह सकती। खास कर प्रत्येक सूत्र का, आगमो के पाठों के साथ जो समन्वय किया गया है, वह सुवर्ण मे सुगन्ध के समान है।

शतावधानी प० श्री सौभाग्यचन्द्र जी, 'सन्तबाल'

मुझे कहना पडेगा कि यह प्रयत्न अत्यन्त सुन्दर है और नूतन है। साहित्यिक एव ऐतिहासिक दृष्टि से आज जैन साहित्य की खोज जो पाश्चात्य एव पौर्वात्य विद्वान कर रहे हैं, उनको इस कृति से बहुत सहायता मिलेगी। अतएव जैन इतिहास मे यह कृति अमर आधार रूप है।"

जैनशास्त्राचार्य आशुकवि प०श्री घासीलालजी महाराज

आपका सर्वाङ्ग सुन्दर तत्वार्थ समन्वय नामक ग्रन्थरत्न देखकर अतीव आनन्द प्राप्त हुआ। आगम साहित्य के अथाह समुद्र का आपने बुद्धि रूप मेरुदण्ड से मथन कर यह ग्रन्थरत्न आपने निकाला है। प्रस्तुत ग्रन्थरत्न के अध्ययन, मनन, एवं तदनुकूल आचरण तथा प्रचार करने से जैनशासन की अतीव उत्कृष्ट प्रभावना होगी ।

बाबू कीर्तिप्रसादजी जैन भू० पू० अधिष्ठाता जैन गुरुकुल गुजरानवाला (पंजाब)

आपने तत्वार्थ सूत्र के सब सूत्रों के मूल स्थान खूब ढूंढ निकाले हैं। आपका परिश्रम अतीव सराहनीय है। दिगम्बर और श्वेताम्बर मान्यताऽनुसार जो सूत्रों में न्यूनाधिकता है, उसको भी बड़ी खूबी के साथ अन्त में दिखा दिया है। महाराज श्री की आगमसम्बन्धी जानकारी का यह एक अच्छा नमूना है।

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
८	६	उद्द०	उद्दे०
६	१४	चरित्ताराहरण	चरित्ताराहणा
११	५	सू०	सू० ८
,,	१२	मणं०	ण०
,,	१३	श०	श० ८
१६	१५	इयि	इय
१७	५	अत्थ	अत्थु
१८	२	पव्विआ	पुव्विआ
२०	७	२	६
,,	११	७	७१
,,	१३	सपा	समा
,,	१५	खधे	खंधे
२१	८	दीवणेसु	दीवगेसु
,,	१५	त	तं
२२	४	णाण	णाण

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
,,	५	गरगा	गुरगा
२४	१५	असखि	असंखि
२५	५	निंग्गोए	निग्गोए
,,	१४	खओवसम	खओवसमे
३६	४	लद्धा	लद्धी
४४	१०	गवेसगा	गवेसणा
,,	१२	,,	,,
४७	४	बितए	बितिए
६१	१३	अंतोवट्ठा	अतोवट्टा
६२	८	अतिखहा	अतिखुहा
६३	३	पढविं	पुढवि
६८	१२	रूप्पिणाम	रूप्पिणाम
७५	११	पंचयएगूण	पंचय एगूण
७६	५	गण	गूण
८७	१	दसहा उभव	दसहा उभव

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
८८	१	अच्चत्ता	अच्चुत्ता
८६	१२	आणाइ	आणाइ
१००	६	६७	१७
१०१	३	केवज्य	केवइय
,,	१५	विमणाइं	विमाणाइं
१०२	,,	३३८	३३
पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
१०७	८	सणकुमारे	सणकुमारे
११५	१४	१४	४१
११८	३	संजत्तो	संजुत्ते
१३२	५	खद्दका	खुद्दका
,,	१५	जतना	जतूना
१३३	,,	स्थानाभ्यमनयर्वा	स्थानाभ्यामनयोर्वा
१३६	८	२५	२४
१४२	६	कम्प	कम्पा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
,,	१२	ज्जवयाए	ज्जुययाए
१५६	६	समणं	समणो
१६०	१३	पोसहा	पोसहो
१६२	८	उच्चय	दुच्चय
१८१	१	असर	असरणा
१८६	५	वित्त	विवित्त
१६२	१	स ज्झाए	सज्झाए
,,	११	अन्तमुहुत्त	अंतोमुहुत्त
२०३	,,	लबु	लाबु
२०४	१६	खल	खलु
२०७	१	सख्या	सखा
२११	११	निदश्य	निर्देश्य
२१२	१०	उववाइअ	उववाइअ
२२७	८	ओरलिय	ओरालिय
२२८	१५	अणादव्वेण	अएणादव्वेणं

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२३१	५	२५	२४
२४३	५	वेयरणत्ति	वेयरणित्ति
२४७	१४	४०	४
२४६	१६	दुग्गिा	दुग्गिा
२५३	५	ठाणग	ठाणाग
२५८	६	एय	रायं
२५६	०	५६	२५६
,,	१०	मणाणाणामणुणाइं	मणुणाणामणुणाइं
२६३	१४	अ०	अ० ७

परिशिष्ट नं० २ का शुद्धि पत्र

पृष्ठ	दि० सू० न०	अशुद्धि	शुद्धि
२०	४०	त्र्येकयाग	त्र्येकयोग

पृष्ठ	श्वे० सू० नं०	अशुद्धि	शुद्धि
२०	४२	तत्र्ये	ततृत्र्ये

धन्यवाद

इस तत्त्वार्थसूत्र जैनागम समन्वय की द्वितीयावृत्ति को श्रीमती रत्नदेवी जी (धर्मपत्नी स्वर्गीय लाला लब्भूराम सर्राफ फर्म लाला तोतामल तिलकराम जैन सर्राफ लुधियाना) अपने स्वर्गीय पतिजी की स्मृति मे निज व्यय से छपवा कर प्रकाशित कर रही है।

प्रत्येक महानुभाव को इनका अनुकरण करना चाहिये।

निवेदिका—

देवकीदेवी जैन

मुख्याध्यापिका

जैन गर्ल्स स्कूल

लुधियाना।

स्वर्गीय ला० लब्भूरामजी सर्राफ

आपकी धर्मपत्नी ने आपकी पवित्र स्मृति मे
यह पुस्तक प्रकाशित की है।

तत्त्वार्थसूत्र-
जैनागमसमन्वयः ।

तिविहे सम्मे पएणत्ते। तं जहा—नाणसम्मे, दसणसम्मे, चरित्तसम्मे।

स्था० स्थान ३ उद्देश ४ सू० १९४

दुविहे णाणे पएणत्ते। त जहा—पच्चक्खे चेव परोक्खे चेव १। पच्चक्खे णाणे दुविहे पएणत्ते। त जहा—केवलणाणे चेव णोकेवलणाणे चेव २। केवलणाणे दुविहे पएणत्ते। त जहा—भवत्थकेवलणाणे चेव सिद्धकेवलणाणे चेव ३। भवत्थकेवलणाणे दुविहे पएणत्ते। त जहा—सजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ४। सजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पएणत्ते। त जहा—पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ५। अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ६। एव अजोगिभवत्थकेवलणाणे वि ७-८। सिद्धकेवलणाणे दुविहे पएणत्ते। त जहा—अणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव परपरसिद्धकेवलणाणे चेव ९। अणंतरसिद्ध-

प्रथमोऽध्यायः ।

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि* मोक्ष-मार्गः ॥१॥

नादंसणिस्स नाणं नाणेण विना न हुन्ति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं॥

उत्त० अ० २८ गा० ३०

---

* **सम्मदंसणे** दुविहे पएणत्ते । त जहा—णिसग्गसम्म-दंसणे चेव अभिगमसम्मदंसणे चेव । णिसग्गसम्मदंसणे दुविहे पएणत्ते । त जहा—पडिवाई चेव अपडिवाई चेव । अभिगम सम्मदंसणे दुविहे पएणत्ते । त जहा—पडिवाई चेव अपडिवाई चेव ।

स्था० स्थान २ उद्दे० १ सू० ७०

तिविहे सम्मे पएणत्ते । त जहा–नाणसम्मं, दसणसम्मे, चरित्तसम्मे ।

स्था० स्थान ३ उद्देश ४ सू० १९४

दुविहे णाणे पएणत्ते । त जहा–पचक्खे चेव परोक्खे चेव १। पञ्चक्खे णाणे दुविहे पएणत्ते । त जहा–केवलणाणे णोव णाकेवलणाणे चेव २ । केवलणाणे दुविहे पएणत्ते । त जहा–भवत्थकेवलणाणे चेव सिद्धकेवलणाणे चेव ३ । भवत्थकेवल-णाणे दुविहे पएणत्ते । त जहा–सजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ४ । सजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पएणत्ते । त जहा–पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ५ । अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अचरिमसमयसजोगि-भवत्थकेवलणाणे चेव ६ । एव अजोगिभवत्थकेवलणाणे वि-७-८। सिद्धकेवलणाणे दुविहे पएणत्ते । त जहा–अणतरसिद्ध-केवलणाणे चेव परपरसिद्धकेवलणाणे चेव ९ । अणंतरसिद्ध-

मोक्खमग्गगइं तच्च, सुणेह जिणभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं, नाणदंसणलक्खणं ॥

केवलणाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-एक्काणंतरसिद्धकेवलणाणे अणेक्काणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव १० । परंपरसिद्धकेवल-णाणे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा—एक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव अणेक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव ११ । णोकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा—ओहिणाणे चेव मणपज्जवणाणे चेव १२ । ओहिणाणे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा—भवपच्चइए चेव खओ-वसमिए चेव १३ । दोण्हं भवपच्चइए पण्णत्ते। तं जहा-देवाणं चेव नेरइयाणं चेव १४ । दोण्हं खओवसमिए पण्णत्ते तं जहा—मणुस्साणं चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव १५ । मणपज्जवणाणे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा—उज्जुमति चेव विउलमति चेव १६ । परोक्खे णाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-आभिणिबोहियणाणे चेव सुयनाणे चेव १७। आभिणिबोहि-यणाणे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा—सुयनिस्सिए चेव असुय-

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एस मग्गु त्ति पएणत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥

निस्सिए चेव १८। सुयनिस्सिए दुविहे पएणत्ते। तं जहा-अत्थोग्गहे चेव वंजणोग्गहे चेव १९। असुयनिस्सिते वि एमेव २०। सुयनाणे दुविहे पएणत्ते। तं जहा-अंगपविट्ठे चेव अंगबाहिरे चेव २१। अंगबाहिरे दुविहे पएणत्ते। तं जहा-आवस्सए चेव आवस्सयवइरित्ते चेव २२। आवस्सयवतिरित्ते दुविहे पएणत्ते। तं जहा-कालिए चेव उक्कालिए चेव २३॥

स्था० स्थान २ उद्द० १ सू० ७१

दुविहे धम्मे पएणत्ते। तं जहा-सुयधम्मे चेव चरित्तधम्मे चेव। सुयधम्मे दुविहे पएणत्ते। तं जहा-सुत्तसुयधम्मे चेव अत्थसुयधम्मे चेव। **चरित्तधम्मे** दुविहे पएणत्ते। तं जहा-आगारचरित्तधम्मे चेव अणगारचरित्तधम्मे चेव।

दुविहे संजमे पएणत्ते*। तं जहा-सरागसंजमे चेव वीत-

* 'अणगारचरित्तधम्मे दुविहे पएणत्ते' इत्यपि पाठान्तरम्।

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एय मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छन्ति सोग्गइं॥

उत्त० अ० २८ गा० १-३

रागसंजमे चेव। सरागसंजमे दुविहे पएणत्ते। तं जहा-सुहुम-संपरायसरागसंजमे चेव बादरसंपरायसरागसंजमे चेव। सुहुम-संपरायसरागसंजमे दुविहे पएणत्ते। तं जहा-पढमसमयसुहुम-संपरायसरागसंजमे चेव अपढमसमयसु०। अथवा चरम-समयसु० अचरिमसमयेसु०। अहवा सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पएणत्ते। तं जहा-संकिलेसमाणए चेव विसुज्झमाणए चेव। बादरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पएणत्ते। तं जहा-पढ-मसमयबादर० अपढमसमयबादरस०। अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय०। अहवा बायरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पएणत्ते। तं जहा-पडिवाति चेव अपडिवाति चेव। वीयरागसंजमे दुविहे पएणत्ते। तं जहा-उवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव खीणकसाय-वीयरायसंजमे चेव। उवसंतकसायवीयरागसंजमे दुविहे पएणत्ते।

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥२॥

तहियाण तु भावाण, सब्भावे उवएसण ।
भावेणं सद्दहन्तस्स, सम्मत्त तं वियाहिय ॥

उ० अ० २८ गा० १५

तं जहा-पढमसमयउवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव अपढमसमय-उव० । अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय० । खीणकसायवीय-रागसंजमे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा छउमत्थखीणकसायवीय-रागसंजमेचेव केवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव । छउ-मत्थखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-सयं-बुद्धछउमत्थखीणकसाय० बुद्धबोहियछउमत्थ० । सयंबुद्धछ-उमत्थ० दुविहे पण्णत्ते । तं जहा पढमसमय० अपढमसमय० अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय० । केवलिखीणकसाय-वीतरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-सजोगिकेवलिखीण-कसाय० अजोगिकेवलिखीणकसायवीयराग० । सजोगिकेव-लिखीणकसायसंजमे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-पढमसमय०

तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥

सम्मद्दंसणे दुविहे पएणत्ते । त जहा–णिसग्ग-सम्मद्दंसणे चेव अभिगमसम्मद्दंसणे चेव ॥

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ७०

अपढमसमय० । अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय० । अजोगिकेवलिखीणकसाय० सजमे दुविहे पएणत्ते । त जहा पढमसमय० अपढमसमय० । अहवा चरिमसमय० अचरिम-समय० ॥

स्था०स्थान २ उद्दे० १ सू० ७२

कतिविहा ण भंते ! आराहणा पएणत्ता ? गोयमा ! ति-विहा आराहणा पएणत्ता । त जहा-णाणाराहणा दसणाराह-णा चरित्ताराहणा । णाणाराहणा ण भंते ? कतिविहा पएण-त्ता ? गोयमा ! तिविहा पएणत्ता । त जहा-उक्कोसिआ म-ज्झिमा जहन्ना । दसणाराहणाण भंते ? एव चेव तिवि-हावि, एव चरित्ताराहणावि ॥ जस्सणं भंते ? उक्कोसिया णा-

जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ॥४॥

णाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा, जस्स उक्कोसिआ दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया णाणाराहणा ? गोयमा ! जस्स उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसिया वा अजहन्न उक्कोसिया वा । जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा जहन्ना वा जहन्नमणुक्कोसा वा । जस्स णं भंते ? उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया णाणाराहणा, जहा उक्कोसिया णाणाराहणाय दंसणाराहणाय भणिया तहा उक्कोसिया नाणाराहणाय य चरित्ताराहणाय भणियव्वा । जस्स णं भंते ! उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया दंसणाराहणा ? गोयमा ? जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स चरित्ताराहण

नव सब्भावपयत्था पण्णत्ते । तं जहा-जीवा अजीवा पुण्णं पावो आसवो संवरो निज्जरा बंधो मोक्खो ॥ स्था० स्थान ६ सू० ६६५

उक्कोसा वा जहन्ना वा अजहन्नमणुक्कोसा वा । जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दंसणाराहणा नियमा उक्कोसा । उक्कोसियं णं भंते ? णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव अंतं करेंति ? गोयमा ! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणे णं सिज्झति जाव अंतं करेंति । अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणे णं सिज्झति जाव अंतं करेंति । अत्थगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जति । उक्कोसियं णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेता कतिहिं भवग्गहणेहिं एवं चेव उक्कोसियएणं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता एवं चेव, नवरं अत्थेगतिए कप्पातीय एसु उववज्जंति मज्झिमियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव अंतं करेंति ? गोयमा ? अत्थेगतिए

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥५॥

जत्थ य ज जाणेज्ज। निक्खेव निक्खिवे निरवसेस ।
जत्थवि अ न जाणेज्जा चउक्कग निक्खिवे तत्थ ॥

आवस्सयं चउव्विहं पण्णत्ते। त जहा—नामावस्सय ठवणावस्सय दव्वावस्सय भावावस्सय ॥अनु०सू०

प्रमाणनयैरधिगमः ॥६॥

दोच्चे ण भवग्गहणेण सिज्झइ जाव अत करेति त च्च पुण भवग्गहण नाइक्कमइ, मज्झिमिय भते ! दसणाराहण आराहेत्ता एव चेव, एव मज्झिमिय चरित्ताराहण पि। जहन्नियन्न-भते ? नाणाराहण आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव अत करेति ? गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेण भवग्गहणेण सिज्झइ जाव अत करेइ सत्तट्ठ भवग्गहणाइ पुण ना इक्कमइ। एव दसणाराहण पि एव चरित्ताराहण पि ॥ भग० श० उद्दे०१० सूत्र ३५५ ॥

दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहिं जस्स उवलद्धा ।
सव्वाहिं नयविहीहिं, वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥

उत्तरा० अ० २८ गाथा २४

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थि-तिविधानतः ॥७॥

१ समग्रपाठस्त्वयम्—

से किं त उवग्घाय निज्जुत्ति अणुगमे ? इमाहिं दोहिं गाहाहिं अणुगतव्वो । त जहा—उद्देसे १ निद्देसे अ २ निग्गमे ३ खेत्त ४ काल ५ पुरिसेय ६ कारण ७ पच्चय ८ लक्खण ९ नए १० समोआरणाणुमए ११॥१३३॥ किं १२ कइविह १३ कस्स १४ कहिं १५ केसु १६ कह १७ किच्चिर हवइ काल १८ कइ १९ संतर २० मविरहियं २१ भवा २२ गरिस २३ फासण २४ निरुत्ति २५ ॥१३४॥ सेत उवग्घाय निज्जुत्ति अणुगमे । स० १५१

निद्देसे पुरिसे कारण कहिं केसु काल कइविहं ॥

अनु० सू० १५१

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ॥८॥

से किं त अणुगमे? नवविहे पएणत्ते । त जहा–सतपयपरूवणाया १ दव्वपमाण च २ खित्त३ फुसणा य ४ कालो य ५ अतर ६ भाग ७ भाव ८ अप्पाबहु चेव ।

अनु० सू० ८०

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ॥९॥

पचविहे णाणे पएणत्ते । त जहा–आभिणिबोहियणाणे सुयणाणे ओहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे ॥

स्था० स्थान ५ उद्दे० ३ सू०४६३, अनु० सू०१, नन्दि १ भगवती शतक ८ उद्दे० २ सू० ३१८

तत्प्रमाणे ॥१०॥

आद्ये परोक्षम् ॥१०॥

प्रत्यक्षमन्यत् ॥१२॥

से किं त जीवगुणप्पमाणे ? तिविहे पण्णत्ते। त जहा-णाणगुणप्पमाणे दंसणगुणप्पमाणे-चरित्त गुणप्पमाणे। अनु० सू० १४४

दुविहे नाणे पण्णत्ते। त जहा-पच्चक्खे चेव परोक्खे चेव १। पच्चक्खे नाणे दुविहे पण्णत्ते। त जहा-केवलणाणे चेव णोकेवलणाणे चेव २।

णोकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते। त जहा-ओहिणाणे चेव मणपज्जवणाणे चेव। परोक्खे णाणे दुविहे पण्णत्ते। त जहा-आभिणिबोहियणाणे चेव, सुयणाणे चेव।

स्था० स्थान २ उद्दे० १ सू० ७१

मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ॥१३॥

ईहा अपोह वीमंसा मग्गणा य गवेसणा ।
सन्ना सई मई पन्ना सव्वं आभिणिबोहिअं ॥
नन्दि० प्र० मतिज्ञानगाथा ८०

तदिन्द्रियाऽनिन्द्रियनिमित्तम् ॥१४॥

से किं तं पच्चक्खं ? पच्चक्खं दुविहं पएणत्तं ।
तं जहा-इन्दियपच्चक्खं नोइन्दियपच्चक्खं च ।
नन्दि० ३ अनु०१४४.

अवग्रहेहावायधारणाः ॥१५॥

से किं तं सुअनिस्सिअं ? चउव्विहं पएणत्तं ।
तं जहा-१ उग्गहे २ ईहा ३ अवाओ ४ धारणा ।
नन्दि० २७

बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणाम् ॥१६॥

छव्विहा उग्गहमती पएणत्ता। त जहा-खिप्पमोगिएहइ बहुमोगिएहइ बहुविधमोगिएहइ धुवमोगिएहइ अणिस्सियमोगिएहइ असदिद्धमोगिएहइ। छव्विहा ईहामती पएणत्ता। त जहा-खिप्पमीहति बहुमीहति जाव असदिद्धमीहति। छव्विधा अवायमती पएणत्ता। त जहा-खिप्पमवेति जाव असदिद्ध अवेति। छव्विहा धारणा पएणत्ता। त जहा-बहु धारेति पोराण धारेति दुद्धर धारेति अणिस्सिय धारेति असदिद्ध धारेति।

स्था० स्थान ६, सू० ५१०

ज बहु बहुविह खिप्पा अणिस्सिय निच्छिय धुवेयर विभिन्ना, पुणरोग्गहादओ तो त छत्तीस त्तिसयभेदं। इयि भासयारेण

अर्थस्य ॥१७॥

से किं तं अत्थुग्गहे ? अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते। तं जहा-सोइन्दियअत्थुग्गहे, चक्खिदिय अत्थुग्गहे, घाणिंदियअत्थुग्गहे जिब्भिदियअत्थुग्गहे, फासिंदियअत्थुग्गहे, नोइन्दियअत्थुग्गहे ॥ नन्दि सू० ३०

व्यञ्जनस्यावग्रहः ॥१८॥

न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥१९॥

सुयनिस्सिए दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-अत्थोग्गहे चेव वंजणोवग्गहे चेव ॥

स्था० स्थान २ उद्दे० १ सू० ७१

से किं तं वंजणुग्गहे ? वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते। तं जहा-सोइन्दियवंजणुग्गहे, घाणिंदियवंजणुग्गहे, जिब्भिदियवंजणुग्गहे, फासिंदियवंजणुग्गहे से तं वंजणुग्गहे ॥ नन्दि सू० २९

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥२०॥

मईपुव्वं जेण सुअं न मई सुअपुव्विआ ॥

नन्दि० सू० २४

सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-अंगपविट्ठे चेव अंगबाहिरे चेव ॥

स्था० स्थान २, उद्दे० १, सू० ७१.

से किं तं अंगपविट्ठं ? दुवालसविहं पण्णत्तं । तं जहा-१ आयारो २ सुयगडो ३ ठाणं ४ समवाओ ५ विवाहपण्णत्ती ६ नायाधम्मकहाओ ७ उवासगदसाओ ८ अंतगडदसाओ ९ अणुत्तरोववाइअदसाओ १० पण्हावागरणाइं ११ विवागसुअं १२ दिट्ठिवाओ ॥

नन्दि० सू० ४४

भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥२१॥

दोण्हं भवपच्चइए पण्णत्ते । तं जहा-देवाणं चेव नेरइयाणं चेव ॥ स्था० स्थान २, उ० १, सू० ७१

से किं तं भवपच्चइअं ? दुण्हं । तं जहा–देवाण य नेरइयाण य ॥ नन्दि० सू० ७

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ॥२२॥

से किं तं खाओवसमिअं ? खाओवसमिअं दुण्हं । तं जहा–मणुस्साण य पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण य । को हेऊ खाओवसमिअं ? खाओवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिनाणं समुप्पज्जइ ॥ नन्दि० सू० ८

प्रज्ञापनासूत्रे–अवधिज्ञानस्याष्टौ भेदाः प्रदर्शिताः । यथा—
आणुगामिते अणाणुगामित्ते,
वड्ढमाणते हीयमाणए पडिवाई
अपडिवाई अवट्ठिए अणवट्ठिए ।

पद ३३ सू० ३१६

दोण्हं खओवसमिए पण्णत्ते। तं जहा-मणुस्साणं चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव॥

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ७१

छव्विहे ओहिनाणे पण्णत्ते। तं जहा-अणुगामिए, अणाणुगामिते, वड्ढमाणते, हीयमाणते, पडिवाई, अपडिवाई॥

स्था० स्थान ६ सू० ५२६

ऋजुविपुलमती मनःपर्ययः॥२३॥

मणपज्जवणाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-उज्जुमति चेव विउलमति चेव॥

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ७१

विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः॥२४॥

तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं। तं जहा-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ तत्थ दव्वओणं उज्जुमईणं अणंते अणंतपएसिए खंधे जाणइ पासइ ते

चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसु-द्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ खेत्तओण उज्जुमई अ जहन्नेण अंगुलस्स असंखे ज्जइभाग उक्कोसेण अहे जाव इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए उवरिम हेट्ठिल्ले खुड्डग पयरेउड्ढजाव जोइसस्स उवरिमतले तिरियं जाव अंतो मणुस्सखित्ते अड्ढा-इज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरस्सकम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पण्णाए अंतरदीवगेसु सण्णीणं पंचिंदियाण पज्जत्तयाण मणोगए भावे जाणइ पासइ तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहियतरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरागं खेत्तं जाणइ पा-सइ कालओण उज्जुमई जहण्णेणं पलिओवमस्स—

असंखिज्जइ भागं उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखिज्जइ भागं अतीयमणागयं वा कालं जाणइ पासइ तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विसुद्ध-तरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ भावओण

उज्जुमई अणंते भावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं जाणइ पासइ मणपज्जवणाणं पुण जणमणपरिचिंतिअत्थपागडणं माणुसखित्त निबद्धं गुणपच्चइय चरित्तवओ सेतं मणपज्जवणाणं ॥

नन्दि० सू० १८

विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्यययोः ॥२५॥

भेद विसय संठाणे अब्भिंतर बाहिरेय देसोही ।
उहिस्सय खयवुड्ढी पडिवाई चेव अपडिवाई ॥

प्रज्ञापना सू० पद ३३ गा० १

इड्ढीपत्त अपमत्तसंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्जवासाउअकम्मभूमिअ गब्भवक्कंतिअ मणुस्साणं मणपज्जवनाणं समुप्पज्जइ ॥

मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥२६॥

तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वाइं दव्वाइं जाणइ न पासइ, खेत्तओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ न पासइ, कालओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वकालं जाणइ न पासइ, भावओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ न पासइ ॥

नन्दि० सू० ३७

से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते। तं जहा-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ णं सुअणाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ, खित्तओ णं सुअणाणी उवउत्ते सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ कालओ णं सुअणाणी उवउत्ते सव्वं कालं जाणइ

पासइ, भावओ णं सुअणाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ ॥

नन्दि सू० ५८

रूपिष्ववधेः ॥२७॥

ओहिदंसणं ओहिदंसणिस्स सव्वरूविदव्वेसु न पुण सव्वपज्जवेसु ॥

अनु० सू० १४६

तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं। तं जहा दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ ओहिनाणी जहन्नेणं अणंताइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ उक्कोसेणं सव्वाइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ खेत्तओ णं ओहिनाणी जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जइ भागं जाणइ पासइ उक्कोसेणं असंखिज्जाइं अलोग-लोगपमाणमित्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ काल-ओ णं ओहिनाणी जहण्णेणं आवलिआए असंखि-

ज्जाइं भागं जाणइ पासइ उक्कोसेण असंखिज्जाओ उसप्पिणीओ ओसप्पिणीओ अईयं अणागयं च कालं जाणइ पासइ भावओण ओहिनाणी जहन्नेण अणंते भावे जाणइ पासइ उक्कोसेण वि अणंतभावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ ॥

तदनन्तभागे मनः पर्ययस्य ॥२८॥

सव्वत्थोवा मणपज्जवणाणपज्जवा । ओहिणाण-पज्जवा अनन्तगुणा, सुयणाणपज्जवा अनन्तगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा अनंतगुणा, केवलनाण-पज्जवा अनंतगुणा ॥ भग० श० ८ उ० २ सू० ३२३

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥२९॥

केवलदंसण केवलदंसणिस्स सव्वदव्वेसु अ, सव्वपज्जवेसु अ ॥ अनु० दर्शनगुणप्रमाण० सू० १४४

तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं । तं जहा-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, तत्थ दव्वओणं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ, खित्तओणं केवलनाणी सव्वं खित्तं जाणइ पासइ, कालओणं केवलनाणी सव्वं कालं जाणइ पासइ, भावओणं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ । अह सव्वदव्वपरिणामभावविण्णत्तिकारणमणतं । सासयमप्पडिवाई एगविहं केवलं नाणं ॥

नं० सू० २२

एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥३०॥

आभिणिबोहियनाणसाकारो व उत्ताण भंते ! चत्तारि णाणाइं भयणाए ॥

व्या० प्र० श० ८ उ० २ सू० ३२०

जे णाणी ते अत्थेगतिया दुणाणी अत्थेगतिया तिणाणी अत्थेगतिया चउणाणी अत्थेगतिया एगणाणी। जे दुणाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी य, जे तिणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुतणाणी ओहिणाणी य, अहवा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी मणपज्जवणाणी य, जे चउणाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुतणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी य, जे एगणाणी ते नियमा केवलणाणी॥ जीवाभि० प्रतिपत्ति० १ सू० ४१

मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥३१॥

सदसतोरविशेषाद् यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥३२॥

---

१ व्याख्याप्रज्ञप्तौ (८—२) राजप्रश्नीयसूत्रे चापि एतादृश एव पाठ।

अन्नाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते । तं जहा–मइअन्नाणे सुयअन्नाणे विभंगन्नाणे ॥

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ८ उ० २ सू० ३१८

अण्णाणपरिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते । तं जहा--मइअण्णाणपरिणामे, सुयअण्णाणपरिणामे, विभंगणाणपरिणामे ॥

प्रज्ञापना पद १३ ज्ञानपरिणामविषय

स्था० स्थान ३ उ० ३ सू० १८३

से किं तं मिच्छासुयं ? जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छंदबुद्धिमइ विगप्पिअं,इत्यादि ।

नन्दि० सू० ४२

अविसेसिआ मई मइनाणं च मइअन्नाणं च इत्यादि ॥

नन्दि० सू० २५

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसम-भिरूढैवम्भूताः नयाः ॥३३॥

सत्त मूलणया पण्णत्ता । त जहा-णेगमे, संगहे, ववहारे, उज्जुसुए, सद्दे, समभिरूढे, एवंभूए ॥

अनु० १३६

स्था० स्थान ७ सू० ५५२

इति श्री जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रे जैनागमसमन्वये प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ।

द्वितीयोऽध्यायः।

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च ॥१॥

छव्विहे भावे पगणत्ते। त जहा-ओदइए उवसमिते खत्तिने खओवसमिते पारिणामिते सन्निवाइए॥
स्था० स्थान ६ सू० ५३७

द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ॥२॥

सम्यक्त्वचारित्रे ॥३॥

ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवी-
र्याणि च ॥४॥

ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिप-
ञ्चभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमाऽसंय-
माश्च ॥५॥

गतिकषायलिङ्गमिथ्यादर्शनाज्ञाना-
संयतासिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकै-
कषड्भेदाः ॥६॥

जीवभव्याभव्यत्वानि च ॥७॥

से किं त उदइए ? दुविहे पएणत्ते । त जहा-
उदइए अ उदयनिप्फएणे अ । से किं तं उदइए ?

अट्ठएह कम्मपयडीण उदएण, से त उदइए। से किं त उदयनिप्फन्ने ? दुविहे पएणत्ते। त जहा-जीवोदयनिप्फन्ने अ अजीवोदयनिप्फन्ने अ। से किं त जीवोदयनिप्फन्ने ? अणेगविहे पएणत्ते। त जहा-णेरइए तिरिक्खजोणिए मणुस्से देवे पुढविकाइए जाव तसकाइए कोहकसाई जाव लोहकसाई इत्थी वेदए पुरिसवेदए णपुसगवेदए कण्हलेसे जाव सुक्कलेसे मिच्छादिट्ठी अविरए असएणी अएणाणी आहारए छउमत्थे सजोगी ससारत्थे असिद्धे, से त जीवोदयनिप्फन्ने। से किं त अजीवोदयनिप्फन्ने ? अणेगविहे पएणत्ते। त जहा—उरालिअ वा सरीर उरालिअसरीरपओगपरिणामिअ वा दव्व, वेउव्विअ वा सरीर वेउव्वियसरीरपओगपरिणामिअ वा दव्व, एव आहारग सरीर तेअग सरीर कम्मगसरीर च भाणिअव्व, पओगपरिणामिए वएणे गधे

रसे फासे, से त अजीवोदयनिप्फराणे। सेत उदय-निप्फराणे, से त उदइए।

से किं त उवसमिए? दुविहे पराणत्ते, त जहा-उवसमे अ उवसमनिप्फराणे अ। से किं त उवसमे? मोहणिज्जस्स कम्मस्स उवसमेणं, से त उवसमे। से किं त उवसमनिप्फराणे? अणेगविहे पराणत्ते, त जहा--उवसतकोहे जाव उवसतलोभे उवस-तपेज्जे उवसतदोसे उवसतदसणमोहणिज्जे उवस-तमोहणिज्जे उवसमिआ सम्मत्तलद्धी उवसमिआ चरित्तलद्धी उवसतकसायछउमत्थवीयरागे, से त उवसमनिप्फराणे। से त उवसमिए।

से किं त खइए? दुविहे पराणत्ते। त जहा—खइए अ खयनिप्फराणे अ। से किं त खइए? अट्ठराह कम्मपयडीण खएणं, से त खइए। से किं त खयनिप्फराणे? अणेगविहे पराणत्ते, त जहा—उप्पराणणाणदसणधरे अरहा जिणे केवली खीण-

आभिणिबोहियणाणावरणे खीणसुअणाणावरणे खीणओहिणाणावरणे खीणमणपज्जवणाणावरणे खीणकेवलणाणावरणे अणावरणे निरावरणे खीणावरणे णाणावरणिज्जकम्मविप्पमुक्के, केवलदंसी सव्वदंसी खीणनिद्दे खीणनिद्दानिद्दे खीणपयले खीणपयलापयले खीणथीणगिद्धी खीणचक्खुदंसणावरणे खीणअचक्खुदंसणावरणे खीणओहिदंसणावरणे खीणकेवलदंसणावरणे अणावरणे निरावरणे खीणावरणे दरिसणावरणिज्जकम्मविप्पमुक्के, खीणसायावेअणिज्जे खीणअसायावेअणिज्जे अवेअणे निव्वेअणे खीणवेअणे सुभासुभवेअणिज्जकम्मविप्पमुक्के, खीणकोहे जाव खीणलोहे खीणपेज्जे खीणदोसे खीणदंसणमोहणिज्जे खीणचरित्तमोहणिज्जे अमोहे निम्मोहे खीणमोहे मोहणिज्जकम्मविप्पमुक्के, खीणणेरइआउए खीणतिरिक्खजोणिआउए खीणमणुस्साउए खीणदेवाउए अणाउए निराउए खीणा-

उए आउकम्मविप्पमुक्के गइजाइसरीरंगोवंगबंधण-संघयणसंठाणअणेगबोंदिविंदसंघायविप्पमुक्के खीण-सुभनामे खीणअसुभणामे अणामे निणामे खीण नामे सुभासुभणामकम्मविप्पमुक्के खीणउच्चागोए खीणणीआगोए अगोए निग्गोए खीणगोए उच्च-णीयगोत्तकम्मविप्पमुक्के खीणदाणंतराए खीण-लाभंतराए खीणभोगंतराए खीणउवभोगंतराए खीणविरियंतराए अणंतराए णिरंतराए खीणंतराए अंतरायकम्मविप्पमुक्के सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिव्वुए अंतगडे सव्वदुक्खप्पहीणे, से तं खयनिप्फण्णे, से तं खइए ।

से किं तं खओवसमिए ? दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–खओवसमिए य खओवसमनिप्फण्णे य । से किं तं खओवसमे ? चउण्हं घाइकम्माणं खओव-समेणं, तं जहा–णाणावरणिज्जस्स दंसणावरणि ज्जस्स मोहणिज्जस्स अंतरायस्स खओवसमेणं, से

तं खओवसमे । से किं तं खओवसमनिप्फरणे ? अरणेगविहे पगणत्ते, तं जहा—खओवसमिआ आभिणिबोहिअ-णाणलद्धी जाव खओवसमिआ मणपज्जवणाणलद्धी खओवसमिआ मइअणाणलद्धा खओवसमिआ सुअ-अरणाणलद्धी खओवसमिआ विभंगणाणलद्धी खओवसमिआ चक्खुदंसणलद्धी अचक्खुदंसणलद्धी ओहिदंसणलद्धी एवं सम्मदंसणलद्धी मिच्छादंसणलद्धी सम्ममिच्छादंसणलद्धी खओवसमिआ सामाइअचरित्तलद्धी एवं छेदोवट्ठावणलद्धी परिहारविसुद्धिअलद्धी सुहुमसंपरायचरित्तलद्धीएवं चरित्ताचरित्तलद्धी खओवसमिआ दाणलद्धी एवं लाभ० भोग० उवभोगलद्धी खओवसमिआ वीरिअलद्धी एवं पंडिअवीरिअलद्धी बालवीरिअलद्धी बालपंडिअवीरिअलद्धी खओवसमिआ सोइन्दियलद्धी जाव खओवसमिआ फासिंदियलद्धी खओवसमिए आयारंगधरे एवं सु

अगडङ्गधरे ठाणंगधरे समवायगधरे विवाहपण्णत्ति-धरे नायाधम्मकहा० उवासगदसा० अंतगडदसा० अनुत्तरोववाइअ दसा० पण्हावागरणधरे विवागसु-अधरे खओवसमिए दिट्ठिवायधरे खओवसमिए णवपुव्वी खओवसमिए जाव चउद्दसपुव्वी खओव-समिए गणी खओवसमिए वायए, सेत खओवसम-मनिप्फण्णे। से त खओवसमिए।

से किं त पारिणामिए ? दुविहे पण्णत्ते त जहा–साइपारिणामिए अ अणाइपारिणामिए अ। से किं त साइपारिणामिए ? अणेगविहे पण्णत्ते, त जहा–

जुण्णसुरा जुण्णगुलो जुण्णघय जुण्णतंदुला चेव।
अब्भा य अब्भरुक्खा सझा गंधव्वणगरा य ॥२४॥

उक्कावाया दिसादाहा गज्जिय विज्जू णिग्घाया जूवया जक्खादित्ता धूमिआ महिआ रयुग्घाया चंदोव रागा सूरोवरागा चंदपरिवेसा सूरपरिवेसा पडिचंदा

पडिसूरा इन्दधणू उदगमच्छाकविहसिया अमोहा वासा वासधरा गामा णगरा घरा पव्वता पायाला भवणा निरया रयणप्पहा सक्करप्पहा वालुअप्पहा पंकप्पहा धूमप्पहा तमप्पहा तमतमप्पहा सोहम्मे जाव अच्चुए गेवेज्जे अणुत्तरे ईसिप्पभाए परमाणु-पोग्गले दुपएसिए जाव अणंतपएसिए, से तं साइ-परिणामिए। से किं तं अणाइपरिणामिए? धम्मत्थि-काए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पुग्गलत्थिकाए अद्धासमए लोए अलोए भवसिद्धि-आ अभवसिद्धिआ, से तं अणाइपरिणामिए। से तं परिणामिए।

अनु० षड्भावाधिकार०

उपयोगो लक्षणम् ॥८॥

उवओगलक्खणे जीवे।

भ० सू० श० २ उ० १०

जीवो उवओगलक्खणो ।

उत्त० मू० अ० २८ गा० १०

सद्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ॥९॥

कतिविहे णं भंते ! उवओगे पगणत्ते ? गोयमा ! दुविहे उवओगे पगणत्ते, तं जहा—सागारोवओगे, अणागारोवओगे य ॥ १ ॥ सागारोवओगे णं भंते ! कतिविहे पगणत्ते ? गोयमा ! अट्ठविहे पगणत्ते ।

प्रज्ञा० मू० पद २९

अणागारोवओगे णं भंते ! कतिविहे पगणत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पगणत्ते ।

प्रज्ञा० मू० पद २९

संसारिणो मुक्ताश्च ॥१०॥

दुविहा सव्वजीवा पगणत्ता, तं जहा—सिद्धा चेव असिद्धा चेव ।

स्था० स्थान २ उ० १ सू० १०१

समारसमावन्नगा चेव असंसारसमावन्नगा चेव ॥

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ५७

समनस्काऽमनस्काः ॥११॥

दुविहा नेरइया पण्णत्ता, तं जहा–सन्नी चेव असन्नी चेव, एवं पंचेंदिया सव्वे विगलिंदियवज्जा जाव वाणमंतरा वेमाणिया ।

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ७६

संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥१२॥

संसारसमावन्नगा तसे चेव थावरा चेव ।

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ५७

पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥

पंचथावरा काया पण्णत्ता, तं जहा–इंदे

थावरकाए (पुढवीथावरकाए) बंभेथावरकाए (आऊथावरकाए) सिप्पे थावरकाए (तेऊथावर काए) सम्मती थावरकाए (वाऊथावरकाए) पजावच्चेथावरकाए (वणस्सइथावरकाए)।

स्था० स्थान ५ उ० १ सू० ३६४

द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ॥१४॥

से किं त ओराला तसा पाणा? चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा–बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पचेंदिया

जीवा० प्रतिपत्ति० १ सू० २७

पञ्चेन्द्रियाणि ॥१५॥

कति णं भंते! इंदिया पण्णत्ता? गोयमा! पचेंदिया पण्णत्ता ।

प्रज्ञा० सू० १५ इन्द्रियपद० उ० १ सू० १६१

द्विविधानि ॥१६॥

कइविहा ण भंते ! इन्दिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-दव्विंदिया य भाविंदिया य। प्रज्ञा० पद १५ उ० १

निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥१७॥

कणविहे ण भंते ! इंदियउवकरण पण्णत्ते ? गोयमा ! पञ्चविहे इन्दियउवकरण पण्णत्ते।

कइविहे ण भंते ! इन्दियणिवत्तणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पञ्चविहा इन्दियणिवत्तणा पण्णत्ता।

प्रज्ञा० उ०२ पद १५

लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ॥१८॥

कतिविहा ण भंते ! इन्दियलद्धी पण्णत्ता ? गोयमा ! पञ्चविहा इन्दियलद्धी पण्णत्ता।

प्रज्ञा० उ० २ इन्द्रियपद० १५

कतिविहा णं भंते ! इन्दिय उवउगद्धा पराण-त्ता ? गोयमा ! पञ्चविहा इन्दियउवउगद्धा पराणत्ता ।

प्रज्ञा० उ० २ इन्द्रियपद० १५

स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि ॥१९॥

स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तदर्थाः ॥२०॥

सोइन्दिए चक्खिन्दिए घाणिंदिए जिब्भिंदिए फासिंदिए ।

प्रज्ञा० इन्द्रियपद १५

पञ्च इन्दियत्था पराणत्ता, तं जहा—सोइन्दि-यत्थे जाव फासिंदियत्थे ।

स्था० स्थान ५ उ० ३ सू० ४४३

श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥२१॥

सुणेइत्ति सुत्र । नन्दि सू० २४

वनस्पत्यन्तानामेकम् ॥२२॥

से किं तं एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपराण-

वणा ? एगिंदियससारसमावरणजीवपरणवणा पचविहा पराणत्ता, त जहा-पुढवीकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया ।

प्रज्ञा० प्रथम पद

कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ॥२३॥

किमिया-पिपीलिया-भमरा-मणुस्स इत्यादि ।

प्रज्ञा० प्रथम पद

संज्ञिनः समनस्काः ॥२४॥

जस्स णं अत्थि ईहा अवोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमसा से णं सगणीति लब्भइ । जस्स णं नत्थि ईहा अवोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमसा से णं असन्नीति लब्भइ ।

नन्दिसू० ४०

विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥२५॥

कम्मासरीरकायप्पओगे। प्रज्ञा० पद १६

अनुश्रेणिः गतिः ॥२६॥

परमाणुपोग्गलाणं भंते! किं अणुसेढी गती पवत्तति विसेढिगती पवत्तति? गोयमा! अणुसेढी गती पवत्तति नो विसेढि गती पवत्तति? दुपएसियाणं भंते! खंधाणं अणुसेढी गती पवत्तति विसेढी गती पवत्तति एवं चेव, एवं जाव अणंतपएसियाणं खंधाणं। नेरइयाणं भंते! किं अणुसेढी गती पवत्तति एवं विसेढी गती पवत्तति एवं चेव, एवं जाव वेमाणियाणं।

व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक २५ उ० ३ सू० ७३०

अविग्रहा जीवस्य ॥२७॥

उज्जूसेढीपडिवन्ने अफुसमाणगई उड्ढं एक्क-

समएण अविग्गहेण गता सागारोवउत्ते सिज्झि-
हिइ ।　　　　　औपपातिक सू० सिद्धाधिकार सू० ४३

विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ॥२८॥

णेरइयाणं उक्कोसेणं तिसमतीतेणं विग्गहेणं उववज्जंति एगिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ।

स्था० स्थान ३ उ० ४ सू० २२५

कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जंति ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जन्ति ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ३४ उ० १ सू० ८५१

एकसमया ऽविग्रहा ॥२९॥

एगसमइयो विग्गहो नत्थि ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ३४ सू० ८५१

एकं द्वौ त्रीन्वाऽनाहारकः ॥३०॥

जीवे ण भंते ! कं समयमणाहारए भवइ ? गोयमा ! पढमे समए सिय आहारए सिय अणाहारए बितए समए सिय आहारए सिय अणाहारए ततिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए—चउत्थे समए नियमा आहारए एवदंडओ, जीवा य एगिंदियाय चउत्थे समए सेसा ततिए समए।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ७ उ० १ सू० २६०

सम्मूर्छनगर्भोपपादाज्जन्म ॥३१॥

से बेमि संति मे तसापाणा। तं जहा—अंडया पोयया जराउया रसया ससेयया समुच्छिमा उब्भिया उववाइया एस संसारेत्ति पवुच्चई।

आचारांग सू० अ० १ उ० ६ सू० ४८

गब्भवक्कन्तिया

उत्तराध्ययन ३६ गाथा ११०

अडया पोयया जराउया समुच्छिमा उववाइया। दशवै० अ० ४ त्रसाधिकार

सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥३२॥

कइविहा ण भंते! जोणी पण्णत्ता? गोयमा! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा-सीया जोणी उसिणा जोणी सीओसिणा जोणी। तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा-सचित्ता जोणी, अचित्ता जोणी, मीसिया जोणी। तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा-संवुडा जोणी, वियडा जोणी, संवुडवियडा जोणी।

प्रज्ञापना योनिपद ६

जरायुजाण्डजपोतानां गर्भः ॥३३॥

अंडया पोयया जराउया। दशवैकालिक अ० ४

गब्भवक्कंतियाय। प्रज्ञापना १ पद

देवनारकाणामुपपादः ॥३४॥

दोराह उववाए पराणत्ते देवाणं चेव नेरयाण चेव ।

स्था० स्थान २ उ० ३ स० ८५

शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ॥३५॥

समुच्छिमाय प्रज्ञापना पद १

सूत्रकृताग श्रत० २ अ० ३

औदारिकवैक्रियिकाऽऽहारकतैजस-कार्मणानि शरीराणि ॥३६॥

कति णं भंते ! सरीरया पराणत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरा पराणत्ता, तं जहा-ओरालिये, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए ।

प्रज्ञापना शरीरपद २१

परं परं सूक्ष्मम् ॥३७॥

प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक्तैजसात्॥३८॥

अनन्तगुणे परे ॥३९॥

सव्वत्थोवा आहारगसरीरा दव्वट्ठयाए वेउव्वियसरीरा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ओरालियसरीरा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा तेयाकम्मगसरीरा दोवि तुल्ला दव्वट्ठयाए अणतगुणा, पदेसट्ठाए सव्वत्थोवा आहारगसरीरा पदेसट्ठाए वेउव्वियसरीरा पदेसट्ठाए असखेज्जगुणा ओरालियसरीरा पदेसट्ठाए असखेज्जगुणा तेयगसरीरा पदेसट्ठाए अणतगुणा कम्मगसरीरा पदेसट्ठाए अणतगुणा इत्यादि ।

प्रज्ञापना शरीर पद २१

अप्रतीघाते ॥४०॥

अप्पडिहयगई । राजप्रश्नीयसूत्र, सू० ६६

अनादिसम्बन्धे च ॥४१॥

सर्वस्य ॥४२॥

तेयासरीरप्पयोगबधे ण भन्ते ! कालओ केवि-चिरं होई ? गोयमा ! दुविहे पएणत्ते, त जहा-अणाइए वा अपज्जवसिए अणाइए वा सपज्जवसिए।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ८ उ० ६ सू० ३५०

कम्मासरीरप्पयोगबधे अणाइए सपज्जवसिए अणाइए अपज्जवसिए वा एव जहा तेयगस्स।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श०८ उ० ६ सू० ३५१

तेयगसरीरी दुविहे-अणादीए वा अपज्जवसिए अणादीए वा पज्जवसिए एव कम्मसरीरी वि इत्यादि।

जीवाभिगमसूत्र-सर्वजीवाभिगम प्रतिपत्ति ६ अ०४ सू० २६४

तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्या-

ऽऽचतुर्भ्यः ॥४३॥

जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि, जस्स वेउव्वियसरीरं तस्स ओरालियसरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि। जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स आहारगसरीरं जस्स आहारगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स आहारगसरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि, जस्स आहारगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं णियमा अत्थि। जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स तेयगसरीरं, जस्स तेयगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स तेयगसरीरं णियमा अत्थि, जस्स पुण तेयगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि। एवं कम्मसरीरे

वि। जस्स णं भंते! वेउव्वियसरीरं तस्स आहा-रगसरीरं, जस्स आहारगसरीरं तस्स वेउव्विय-सरीरं? गोयमा! जस्स वेउव्वियसरीरं तस्स आहारगसरीरं णत्थि, जस्स पुण आहारगसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं णत्थि। तेयाकम्माइं जहा ओरालिएण समं तहेव, आहारगसरीरेण वि समं तेयाकम्माइं तहेव उच्चारियव्वा। जस्स णं भंते! तेयगसरीरं तस्स कम्मगसरीरं जस्स कम्म-गसरीरं तस्स तेयगसरीरं? गोयमा! जस्स तेय-गसरीरं तस्स कम्मगसरीरं णियमा अत्थि, जस्स वि कम्मगसरीरं तस्स वि तेयगसरीरं णियमा अत्थि।

प्रज्ञा० प० २१

निरुपभोगमन्त्यम् ॥४४॥

विग्गहगइसमावन्नगाणं नेरइयाणं दोसरीरा

पएणत्ता त जहा–तेयए चेव कम्मए चेव। निरतर जाव वेमाणियाणं।

स्था० स्थान उद्दे० १ सू० ७६

जीवे ण भते ! गब्भ वक्कममाणे किं ससरीरी वक्कमइ, असरीरी वक्कमइ ? गोयमा ! सिय ससरीरी वक्कमइ सिय असरीरी वक्कमइ। से केणट्ठेण ? गोयमा ! ओरालियवेउव्विय-आहारयाइ पडुच्च असरीरी वक्कमइ। तेयाकम्माइ पडुच्च ससरीरी वक्कमइ।

भगवती० श० १ उद्दे० ७

गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यम् ॥४५॥

उरालिअसरीरे ण भते ! कतिविहे पएणत्ते ? गोयमा ! दुविहे पएणत्ते, त जहा–समुच्छिम गब्भवक्कतिय।

प्रज्ञा० पद २१

औपपादिकं वैक्रियिकम् ॥४६॥

णेरइयाण दो सरीरगा पएणत्ता, तं जहा–

अब्भतरगे चेव बाहिरगे चेव, अब्भतरए कम्मए बाहिरए वेउव्विए, एव देवाण।

स्था० स्थान २, उद्दे० १ सू० ७५

लब्धिप्रत्ययश्च ॥४७॥

वेउव्वियलद्धीए।

औप० सू० ४०

तैजसमपि ॥४८॥

तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे सखित्तविउलते-उलेस्से भवति, तं जहा-आयावणताते १ खति खमाते २ अपाणगेण तवो कम्मेण ३।

स्था० स्थान ३ उद्दे० ३ सू० १८२

शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ॥४९॥

आहारगसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते पमत्तसंजय सम-द्दिट्ठि समचउरंस संठाण संठिए पण्णत्ते।

प्रज्ञा० पद २१ सू० २७३

नारकसम्मूर्च्छिनो नपुंसकानि॥५०॥

तिविहा नपुंसगा पण्णत्ता, तं जहा–णेरतिय-नपुंसगा तिरिक्खजोणियनपुंसगा मणुस्सनपुंसगा।

स्था० स्थान ३ उद्दे० १ सू० १३१

न देवाः ॥५१॥

शेषास्त्रिवेदाः ॥५२॥

कइविहे णं भंते ! वेए पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे वेए पण्णत्ते, तं जहा–इत्थीवेए पुरिसवेए नपुंसकवेए। नेरइयाणं भंते ! किं इत्थीवेया पुरि-

सवेया णपुंसगवेया पराणत्ता ? गोयमा ! णो इत्थी वेया णो पुंवेए णपुंसगवेया पराणत्ता । असुरकुमारा णं भंते ! किं इत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसगवेया ? गोयमा ! इत्थीवेया पुरिसवेया जाव णो णपुंसग-वेया थणियकुमारा । पुढवी आऊ तेऊ वाऊ वण-स्सई बितिचउरिंदियसमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्ख-समुच्छिममणुस्सा णपुंसगवेया । गब्भवक्कंतिय-मणुस्सा पंचिंदियतिरिया य तिवेया । जहा असुर-कुमारा तहा वाणमंतरा जोइसियवेमाणियावि ।

समम० सू० १५६

औपपादिकचरमोत्तमदेहाऽसंख्येय-वर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥५३॥

दोअहाउयं पालेंति देवाणं चेव णेरइयाणं चेव ।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८५

देवा नेरइयावि य असंखवासाउया य तिरमणुआ ।
उत्तमपुरिसा य तहा चरमसरीरा य निरुवकम्मा ॥

इति ठाणांगवित्तीए

इति जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ।

तृतीयोऽध्यायः

रत्नशर्कराबालुकापंक धूमतमोमहा-तमःप्रभाभूमयो घनाम्बुवाताकाश-प्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः ॥१॥

कहि णंभते ! नेरइया परिवसंति ? गोयमा ! सट्ठाणे ण सत्तसु पुढविसु, त जहा-रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, बालुयप्पभाए, पकप्पभाए, धूमप्पभाए, तमप्पभाए, तमतमप्पभाए ।

प्रज्ञा० नरका० पद २

अत्थि ण भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, अहे घणोदधीति वा घणवातेति वा तणुवातेति

वा ओवासतरेति वा। हंता अत्थि एवं जाव अहे सत्तमाए।
जीवाभि० प्रतिप० २ सू० ७०-७१

तासु त्रिंशत्पञ्चविंशतिपञ्चदशदश-त्रिपञ्चोनैकनरकशतसहस्राणि पंच चैव यथाक्रमम् ॥२॥

तीसा य पन्नवीसा पराणरस दसेव तिरिण य हवंति।

पंचूणसहसहस्स पंचेव अणुत्तरा णरगा।

जीवा० प्रति० ३ सू० ६६

प्रज्ञा० पद० २ नरकाधिकार

व्या० प्र० श० १ उ० ५ सू० ४३

नारकाः नित्याऽशुभतरलेश्यापरि-णामदेहवेदनाविक्रियाः ॥३॥

परस्परोदीरितदुःखाः ॥४॥

अण्णमण्णस्स काय अभिहणमाणा वेयण उदीरेंति इत्यादि।

जीवाभिगम० प्रति० ३ उद्दे० २ सू० ८६

इमेहिं विविहेहिं आउहेहिं किं ते मोग्गरभुसंढिकरकय सत्तिहलगय मुसल चक्ककुन्त तोमर सूल लउड भिंडिमालि सब्बल पट्टिस चम्मिट्ठ दुहण मुट्ठिय असिखेडग खग्ग चाव नाराय कणगकप्पिणि वासि परसु टङ्क तिक्ख निम्मल अण्णेहिं एवमादिहिं असुभेहिं वेउव्विएहिं पहरणसतेहिं अणुबन्धतिव्ववेरा परोप्पर वेयण उदीरन्ति।

प्रश्न० अ० १ नरकाधिकार

ते णं णरगा अन्तोवट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया णिच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरणक्खत्तजोइसप्पहा, मेदवसापूयपडलरु-

हिरमसचिक्खललित्ताणुलेवणतला, असुईबीसा परमादुब्भिगंधा काऊगणिवएणाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा णरगा असुभाओ णरगेसु वेअणाओ इत्यादि। प्रज्ञा० पद २ नरकाधिकार

नेरइयाण तओ लेसाओ पएणत्ता, त जहा—कएहलेस्सा नीललेस्सा काऊलेस्सा।

स्था० स्थान ३ उ० १ सूत्र १३२

अतिसीत, अतिउएह, अतितएहा, अतिखहा, अतिभय वा, णिरएणोरइयाण दुक्खसयाइं अविस्साम।

जीवा० प्रतिपत्ति ३ उ० १ सू० १३२

संक्लिष्टाऽसुरोदीरितदुःखाश्च प्राक्चतुर्भ्यः ॥५॥

प्रश्न–किं पत्तिय ण भंते! असुरकुमारा देवा तच्च पुढविं गया य गमिस्संति य ?

उत्तर–गोयमा ! पुव्ववेरियस्स वा वेदणउदीरणयाए, पुव्वसंगइस्स वा वेदणउवसामणयाए, एवं खलु असुरकुमारा देवा तच्चं पढविं गया य, गमिस्सति य।

व्याख्या० श० ३ उ० २ सू० १४२

तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ॥६॥

सागरोवममेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया।
पढमाए जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥ १६० ॥
तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
दोच्चाए जहन्नेणं, एगं तु सागरोवमं ॥ १६१ ॥
सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
तइयाए जहन्नेणं, तिण्णेव सागरोवमा ॥ १६२ ॥

दस सागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
चउत्थीए जहन्नेणं, सत्तेव सागरोवमा ॥१६३॥
सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
पञ्चमाए जहन्नेण, दस चेव सागरोवमा ॥१६४॥
बावीस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
छट्ठीए जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ॥१६५॥
तेत्तीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
सत्तमाए जहन्नेण बावीस सागरोवमा ॥१६६॥

उत्तरा० अ० ३६

जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीप समुद्राः ॥७॥

असंखेज्जा जंबुद्दीवा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता, केवतिया णं भंते ! लवणसमुद्दा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा लवणसमुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता, एवं धायतिसंडावि, एवं जाव असंखेज्जा सूरदीवा नामधे-

ज्जेहिं य। एगे देवे दीवे पराणत्ते, एगे देवोदे समुद्दे पराणत्ते, एवं णागे जक्खे भूते जाव एगे सयंभूरमणे दीवे एगे सयंभूरमण समुद्दे णामधेज्जेणं पराणत्ते।

जीवा० प्रति० ३ उ० २ सू० १८६ द्वीप०

जावतिया लोगे सुभा णामा सुभा वराणा जाव सुभा फासा एवतिया दीव समुद्दा णामधेज्जेहिं पराणत्ता।

जीवा० प्रति० ३ उ० २ सू० १८६

द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः॥८॥

जंबुद्दीवं णाम दीवं लवणे णाम समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठति। जीवा० प्रति० ३ उ० २ सू० १५४

जंबुद्दीवाइया दीवा लवणादिया समुद्दा संठाणतो एकविहविधाणा वित्थारतो अणेगविधविधाणा

दुगुणादुगुणे पडुप्पाएमाणा पवित्थरमाणा ओभास-
माणवीचीया। जीवा० प्रति० ३ उ० २ सू० १२३

तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशत-
सहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥९॥

जबुद्दीवे सव्वद्दीवसमुद्दाण सव्वब्भतराए सव्व-
खुड्डाए वट्टे एग जोयणसयसहस्स आयाम-
विक्खभेण इत्यादि। जम्बू० सू० ३

जबुद्दीवस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण जम्बुद्दीवे
मन्दरे णामम पव्वए पराणत्ते। णवणउतिजोअणसह-
स्साइ उद्ध उच्चतेण एग जोअणसहस्स उव्वेहेण।
जम्बू० सू० १०३

भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्य-
वतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥१०॥

जम्बुद्दीवे सत्त वासा पराणत्ता, त जहा-भरहे

एरवने हेमवते हेरन्नवते हरिवासे रम्मगवासे महा-
विदेहे । स्था० स्थान ७ सू० ५५५

**तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिम-
वन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरि-
णो वर्षधरपर्वताः ॥११॥**

विभयमाणे । जम्बूद्वीप० सू० १५

पाईण पडीणायए । जम्बूद्वीप० सू० ७२

जम्बुद्दीवे छ वासहरपव्वता पराणत्ता, त जहा-
चुल्लहिमवंते महाहिमवने निसढे नीलवते रुप्पि
सिहरी ।

स्था० स्थान ६ सू० ५२४

**हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः
॥१२॥**

मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्ताराः॥१३॥

चुल्लहिमवन्ते जंबुद्दीवे सव्वकणगामए अच्छे सण्हे तहेव जाव पडिरूवे। इत्यादि।

जम्बू० वक्षस्कार ४ सू० ७२

महाहिमवन्ते णाम सव्वरयणामए।

जम्बू० सू० ७६

निसहे णाम सव्वतवणिज्जमए।

जम्बू० सू० ८३

णीलवन्ते णाम सव्ववेरुलिआमए।

जम्बू० सू० ११०

रूप्पिणाम सव्वरूप्पामए।

जम्बू० सू० १११

सिहरी णाम सव्वरयणामए।

जम्बू० सू० १११

बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्न णा-
तिवट्टंति आयामविक्खभउव्वेहसंठाणपरिणाहेणं ।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८७

उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइआहिं दोहि अ
वणसंडेहिं संपरिक्खित्ते । जम्बु० प्र० सू० ७२

**पद्ममहापद्मतिगिंछकेसरीमहापुण्ड-
रीकपुण्डरीकाह्रदास्तेषामुपरि ॥१४॥**

जंबुद्दीवे छ महद्दहा पण्णत्ता, तं जहा—पउमद्दहे
महापउमद्दहे तिगिच्छद्दहे केसरीद्दहे पोंडरीयद्दहे
महापोंडरीयद्दहे । स्था० स्थान० ६ सू० ५२४

**प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धवि-
ष्कम्भो ह्रदः ॥१५॥**

दशयोजनावगाहः ॥१६॥

तस्स ण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए इत्थ ण इक्के महे पउमद्दहे णाम दहे पण्णत्ते पाईणपडिणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे इक्क जोयणसहस्स आयामेणं पञ्च जोअण सयाइ विक्खभेणं दस जोअनाइं उव्वेहेण अच्छे ।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति पद्महृदाधिकार

तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ॥१७॥

तस्स पउमद्दहस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ महं एगे पउमे पण्णत्ते, जोअणं आयामविक्खभेण अद्धजोअण बाहल्लेण दसजोअणाइ उव्वेहेण दोकोसे ऊसिए जलताओ साइरेगाइ दसजोअणाइ सव्वग्गेण पण्णत्ता । जम्बू० पद्महृदाधिकार सू० ७३

तद्द्विगुणद्विगुणाह्रदाः पुष्कराणि च ॥१८॥

महाहिमवतस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगे महापउमद्दहे णामं दहे पण्णत्ते, दोजोअण सहस्साइं आयामेणं एग जोअणसहस्स विक्खभेण दस जोअणाइ उव्वेहेण अच्छे रययामयकूले एव आयामविक्खभविहूणा जा चेव पउमद्दहस्स वत्तव्वया सा चेव णेअव्वा, पउमप्पमाण दो जोअणाइं अट्ठो जाव महापउमद्दहवण्णाभाइ हिरी अ इत्थ देवी जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसइ ।

जम्बू० महा० सू० ८०

तिगिंछिद्दहे णाम दहे पण्णत्ते चत्तारि जोकणसहस्साइ आयामेण दोजोअणसहस्साइं विक्खंभेण दसजोअणणाइ उव्वेहेण ... धिई अ इत्थ देवी पलिओवमट्ठिइया परिवसइ ।

जम्बू० सू० ८३ से ११०. षड्ह्रदाधिकार

तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृति-

कीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिकपरिषत्काः ॥१९॥

तत्थ णं छ देवयाओ महड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीताओ परिवसति । त जहा-सिरि हिरि धिति कित्ति बुद्धि लच्छी ।

स्थानाग स्थान ६ सू० ५२४

गंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकांतासीतासीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ॥२०॥

द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ॥२१॥

शेषास्त्वपरगाः ॥२२॥

जंबुद्दीवे सत्त महानदीओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समुप्पेंति, तं जहा—गंगा रोहिता हिरी सीता णरकंता सुवण्णकूला रत्ता। जंबुद्दीवे सत्त महानदीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समुप्पेंति, तं जहा—सिंधू रोहितंसा हरिकंता सीतोदा णारीकंता रुप्पकूला रत्तवती।

स्थानांग स्थान ७ सू० ५५५

चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गंगासिन्ध्वादयो नद्यः ॥२३॥

जंबुद्दीवे भरहेरवएसु वासेसु कइ महाणईओ पण्णत्ताओ। गोअमा! चत्तारि महाणईओ पण्णत्ताओ, तं जहा—गंगा सिंधू रत्ता रत्तवई। तत्थ णं एगमेगा महाणई चउद्दसहिं सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं लवणसमुद्दं समुप्पेइ।

जम्बू० प्र० वक्षस्कार ६ सू० १२५

भरतः षड्विंशतिपञ्चयोजनशत-विस्तारः षट् चैकोनविंशतिभागा योज-नस्य ॥२४॥

जंबुद्दीवे दीवे भरहे णामं वासे जंबुद्दीवदीव-णउयसयभागे पंचछव्वीसे जोअणसए छच्च एगूण-वीसइ भाए जोअणस्स विक्खंभेणं ।

जम्बू० सू० १२

तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः ॥२५॥

जंबुद्दीवे दीवे चुल्लहेमवन्त णाम वासहरपव्वए पएणत्ते पाईण पडीणायए उदीण दाहिण विच्छिएणो दुहा लवणसमुद्द पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थि-मिल्लं लवणसमुद्द पुट्ठे पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्च-

त्थिमिल्लं लवणसमुद्द पुट्ठे एग जोयणसय उड्ढ उच्च-त्तेण पणवीस जोयणाइं उव्वेहण-एग जोयण-सहस्स वावन्न जोयणाइ दुवालसय एगूण वीसई भाए जोयणस्स विक्खभेण ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति चूलवताधिकार

जबूद्दीवे दीवे हेमवए णाम वासे पण्णत्ते–पाईण पडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे पलियकसठाण—सठिए दुहालवणसमुद्द पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्ल लवणसमुद्द पुट्ठे–पच्चत्थिमिल्लाए को-डीए पच्चत्थिमिल्ल लवणसमुद्द पुट्ठे–दोण्णि जोयण-सहस्साइ एग च पचुत्तर जोयणसयपचयए गूण-वीसईभाए जोयणस्स विक्खभेण ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति हेमवर्षाधिकार

जम्बूद्दीवे दीवे महाहिमवते णाम वासहरपव्वए पण्णत्ते–पाईण पडिणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे

दुहा लवणसमुद्दे पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे पच्चत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठे दोजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पणासं जोयणं उव्वेहणं-चत्तारि जोयणसहस्साइं दोण्णिय दसुत्तर जोयणसए दसयएगणवीसई भाए जोयणस्स विक्खभेणं।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिमहाहिमवताधिकार

जंबुद्दीवे दीवे हरिवासं णामं वासे पण्णत्ते-एवं जाव पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे-अट्ठजोयणसहस्साइं चत्तारि एगवीसे जोयणसए एग च एगूणवीसइभागं जोयणस्स विक्खभेणं।

जम्बूद्वीप हरिवर्षाधिकार-

जंबुद्दीवे दीवे णिसहणामं वासहरपव्वए पण्णत्ते पाईण पडिणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे दुहा-लवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठे चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि गाउयसयाइं

उव्वेहणं--सोलसजोयणसहस्साइ अट्ठयवयाले जोयणसए दोण्णि य एगूणवीसइ भाए जोयणस्स विक्खभेणं ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति निषधाधिकार २

जंबुद्दीवे दीवे-महाविदेहवासे पण्णत्ते-पाईण पडिणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे पलियकसठाण सठिए दुहा लवणसमुद्द पुट्ठे पुरत्थ जाव पुट्ठे पच्च-त्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिल्ल जाव पुट्ठे ।

तित्तीस जोयणसहस्साइ छच्च चुलसीए--जोय-णसए चत्तारिय एगूणवीसइ भाए जोयणस्स विक्खंभेण ।

जम्बू० महाविदेहाधिकार

उत्तरा दक्षिणतुल्याः ॥२६॥

जंबुमंदरस्स पव्वयस्स य उत्तरदाहिणे ण दो वासहरपव्वया बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्न-

मन्न णातिवट्टंति आयामविक्खम्भुच्चतोव्वेहसठाण-परिणाहेण, त जहा -चुल्लहिमवते चेव सिहरिच्चेव, एव महाहिमवते चेव रुप्पिच्चेव, एव निसड्ढे चेव णीलवते चेव इत्यादि ।

स्था० स्थान २ उद्देश्य २ सूत्र ८७

भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ॥२७॥

ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ॥२८॥

जबुद्दीवे दीवे दोसु कुरासु मणुआसया सुसमसुसममुत्तमिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा-देवकुराए चेव, उत्तरकुराए चेव ॥

जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुयासया सुसममुत्तमिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा-हरिवासे चेव रम्मगवासे चेव ॥

जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुयासया सुसमदुस्समुत्तममिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा--हेमवए चेव एरन्नवए चेव॥

जंबुद्दीवे दीवे दोसु खित्तेसु मणुयासया दुसमसुसममुत्तममिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा--पुव्वविदेहे चेव अवरविदेहे चेव॥

जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया छव्विहं पि कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा--भरहे चेव एरवए चेव॥

स्थानांग स्थान २ सूत्र ८९

जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वस्स पुरच्छिमपच्चत्थिमेणवि, णेवत्थि ओसप्पिणी णेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते॥

व्या० प्र० श० ५ उद्देश्य १ सू० १७८

एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हैमवत-

पुष्करार्द्धे च ॥३४॥

पुक्खरवरदीवड्ढे पुरच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता, बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरावए चेव तहेव जाव दो कुडाओ पण्णत्ता।

स्था० स्थान २ उद्दे० ३ सू० ९३

प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ॥३५॥

माणुसुत्तरस्स णं पव्वयस्स अंतो मणुआ।

जीवा० प्रति० ३ मानुषोत्तरा० उद्दे० २ सू० १७८

आर्या म्लेच्छाश्च ॥३६॥

ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--आरिआ य मिलक्खू य।

प्रज्ञा० पद १ मनुष्याधिकार

भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ॥३७॥

से किं तं कम्मभूमगा ? कम्मभूमगा पराणरस-विहा पराणत्ता, तं जहा--पचहिं भरहेहिं पचहिं एरावएहि पचहिं महाविदेहेहिं ।

से किं तं अकम्मभूमगा ? अकम्मभूमगा तीसइ विहा पराणत्ता, तं जहा--पचहिं हेमवएहिं, पचहिं हरिवासेहिं, पचहिं रम्मगवासेहिं, पचहिं एरगण-वएहिं, पचहिं देवकुरुहिं, पचहिं उत्तरकुरुहिं । सेतं अकम्मभूमगा ।

प्रज्ञा० पद १ मनुष्याधि० सूत्र ३२

नृस्थिती पराऽवरे त्रिपल्योपमान्त-र्मुहूर्ते ॥३८॥

पलिओवमाउ तिन्नि य, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्ठिई मणुयाणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥

उत्तरा० अध्याय ३६ गाथा १६८

मणुस्साणं भंते ! केवइयं कालट्ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ।

प्रज्ञा० पद ४ मनुष्याधिकार

तिर्यग्योनिजानाञ्च ॥३९॥

असंखिज्जवासाउय सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पन्नत्ता ।

समवा० सू० समवाय ३

पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्ठिई थलयराणं अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥

उत्तरा० अध्याय ३६ गाथा १८३

गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय ति-

रिक्ख जोणियाए पच्छा ? जहएणेण अंतोमुहुत्तं उक्कोस्सेण तिरिण पलिओवमाइ ।

प्रज्ञापना स्थितिपद ४ तिर्यगधिकार

इति श्री जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-संगृहीत तत्वार्थसूत्र जैनागमसमन्वये

तृतीयोऽध्याय समाप्त ।

चतुर्थोऽध्यायः

देवाश्चतुर्णिकायाः ॥१॥

चउव्विहा देवा पण्णत्ता, त जहा-भवणवई वाणमन्तर जोइस वेमाणिया।

व्याख्या० श० · उ० ७

आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्या ॥२॥

भवणवइ वाणमतर चत्तारि लेस्साओ जोतिसियाण एगा तेउलेसा वेमाणियाण तिन्नि उवरिमलेसाओ। स्था० स्थान १ उ० ५१

दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ॥३॥

दसहा उभवणवासी अट्ठहा वणचारिणो ।
पञ्चविहा जोइसिया दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०३॥
वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगायबोधव्वा कप्पाईया तहेव य ॥२०७॥
कप्पोवगा बारसहा सोहम्मीसाणगा तहा ।
सणकुमारमाहिंदा बम्भलोगा य लतगा ॥२०८॥
महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा ।
आरणा अच्चुया चेव इह कप्पोवगासुरा ॥२०९॥

उत्तराध्ययन सूत्र अध्या० ३६

भवणवइ दसविहा पराणत्ता वाणमन्तरा अट्ठविहा पराणत्ता, जोइसिया पञ्चविहा पराणत्ता वेमाणिया दुविहा पराणत्ता, त जहा–कप्पोववराणगा य कप्पाइया य । से किं त कप्पोववराणगा? बारसविहा पराणत्ता, त जहा–सोहम्मा, ईसाणा, सणंकुमारा, माहिंदा, बभलोगा, लतया, महासुक्का,

सहस्सारा, आणया पाणया, आरणा, अच्चुत्ता।

प्रज्ञा० प्रथमपद देवाधिकार

इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदा-त्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियो-ग्यकिल्विषिकाश्चैकशः॥ ४ ॥

देविंदा एव सामाणिया तायत्तीसगा लोगपाला परिसोववन्नगा अणियाहिवई आयरक्खा।

स्था० स्थान ३ उ० १ सू० १३४

देवकिब्बिसिए आभिओगिए।

औपपा० जीवोप० सू० ४१

चउव्विहा देवाण ठिती पण्णत्ता, त जहा—देवे णाममेगे देवसिणाते णाममेगे देवपुरोहिते णाममेगे देवपज्जलणे णाममेगे।

स्था० स्थान ४ उ० १ सू० २४८

अवसेसाय देवा देवीओ

जम्बू० प्र० सू० ११७ (आगमोदय समिति)

त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यंतर-ज्योतिष्काः ॥५॥

कहि णं भंते! वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहिणं भंते! वाणवंतरा देवा परिवसंति? ... साणं २ सामाणिय साहस्सीणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ सपरिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणि आहिवईणं साणं २ आयरक्ख देवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाइसरसेणावच्चं

प्रज्ञापना सूत्र पद २ सू० ३७

जोसियाणं देवाणं तत्थ साणं २ विमाणं

वास सहस्साण साण २ सामाणिय साहस्सीण साणं २ अग्गमहिसीण सपरिवाराण साण परिसाण साण २ अणियाण साण २ अणियाहिवईण साण २ आयरक्ख देव साहस्सीण अण्णे सिंच बहुण जोइसियाण देवाण देवीणय आहेवच्च जाव विहरति ।

प्रज्ञापना सूत्र पद २ सू० ४२

पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥६॥

दो असुरकुमारिंदा पण्णत्ता त जहा—चमरे चेव बली चेव । दो णागकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा—धरणे चेव भूयाणंदे चेव । दो सुवन्नकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा—वेणुदेवे चेव वेणुदाली चेव । दो विज्जकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा—हरिच्चेव हरिसहे चेव । दो अग्गिकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा—अग्गिसिहे चेव अग्गिमाणवे चेव । दो दीवकुमारिंदा

पएणत्ता, त जहा-पुन्ने चेव विसिट्ठे चेव दो उद-हिकुमारिंदा पएणत्ता, त जहा-जलकते चेव जल-प्पभे चेव। दो दिसाकुमारिंदा पएणत्ता, त जहा-अमियगती चेव अमियवाहणे चेव। दो वातकुमा-रिंदा पएणत्ता, त जहा-वेलबे चेव पभजणे चेव। दो थणियकुमारिंदा पएणत्ता, त जहा-घोसे चेव महाघोसे चेव। दो पिसाइंदा पएणत्ता, त जहा-काले चेव महाकाले चेव। दो भूइंदा पएणत्ता, तं जहा-सुरूवे चेव पडिरूवे चेव। दो जक्खिंदा पएणत्ता, तं जहा-पुन्नभद्दे चेव माणिभद्दे चेव। दो रक्खसिंदा पएणत्ता, त जहा-भीमे चेव महाभीमे चेव। दो किन्नरिंदा पएणत्ता, त जहा-किन्नरे चेव किंपुरिसे चेव। दो किंपुरिसिंदा पएणत्ता, त जहा-सप्पुरिसे चेव महापुरिसे चेव। दो महोरगिंदा पएणत्ता, तं जहा अतिकाए चेव महाकाए चेव। दो गंधव्विंदा

पण्णत्ता, त जहा--गीनरती चेव गीयजसे चेव।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ६४

कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ॥७॥

शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराः ॥८॥

परेऽप्रवीचाराः ॥९॥

कतिविहा ण भंते ! परियारणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पञ्चविहा पण्णत्ता, त जहा--कायपरियारणा, फासपरियारणा, रूवपरियारणा सद्दपरियारणा, मणपरियारणा भवणवासि वाणमतरजोतिसि सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवा कायपरियारणा, सणं कुमारमाहिंदेसु कप्पेसु देवा फासपरियारणा, बंभलोयलतगेसु कप्पेसु देवा रूवपरियारणा, महासुक्कसहस्सारेसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारणा, आण-

यपाणयआरणअच्चुएसु देवा मणपरियारणा, गवे-ज्जग अणुत्तरोववाइया देवा अपरियारगा।

प्रज्ञापना पद ३४ प्रचारणा विषय
स्था० स्थान २ उ० ४ स० ११६

भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः॥

भवणवई दसविहा पगणत्ता, तं जहा--असुर-कुमारा, नागकुमारा, सुवरणकुमारा, विज्जुकुमारा। अग्गीकुमारा, दीवकुमारा, उदहिकुमारा, दिसा-कुमारा, वाउकुमारा, थणियकुमारा।

प्रज्ञापना प्रथम पद देवाधिकार

व्यन्तराः किन्नरकिम्पुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः॥११॥

वाणमन्तरा अट्ठविहा पगणत्ता, त जहा--किन्नरा

रा, किम्पुरिसा, महोरगा, गंधव्वा, जक्खा, रक्खसा, भूया, पिसाया। प्रज्ञापना प्रथमपद देवाधिकार

ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ॥१२॥

जोइसिया पंचविहा पएणत्ता, तं जहा–चंदा-सूरा, गहा, णक्खत्ता, तारा।

प्रज्ञापना प्रथमपद देवाधिकार

मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ॥१३॥

ते मेरु परियडंता पयाहिणावत्तमंडला सव्वे।
अणवट्ठियजोगेहिं चंदा सूरा गहगणा य ॥१०॥

जीवाभि० तृतीय प्रति० उद्दे० २ सू० १७७

तत्कृतः कालविभागः ॥१४॥

से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—"सूरे आइच्चे सूरे", गोयमा ! सूरादिया णं समयाइ वा आवलयाइ वा जाव उस्सप्पिणीइ वा अवसप्पिणीइ वा से तेणट्ठेण जाव आइच्चे ।

व्या० प्रज्ञप्ति शत० १२ उ० ६

से किं तं पमाणकाले ? दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–दिवसप्पमाणकाले राइप्पमाणकाले इच्चाइ ।

व्या० प्र० श० ११ उ० ११ सू० ४२४

जम्बू० प्र० सूर्यप्र० चन्द्रप्र०

बहिरवस्थिताः ॥१५॥

अंतो मणुस्सखेत्ते हवति चारोवगा य उववण्णा ।
पञ्चविहा जोइसिया चंदा सूरा गहगणा य ॥२१॥
तेण परं जे सेसा चंदाइच्चगहतारणक्खत्ता ।
नत्थि गई नवि चारो अवट्ठिया ते मुणेयव्वा ॥२२॥

जीवाभिगम तृतीय प्रतिपत्ति उद्दे० २ सूत्र १७७

वैमानिकाः ॥१६॥

वेमाणिया ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति० शतक २० सूत्र ६७५-६८०

कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ॥१७॥

वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--कप्पोव-वण्णगा य कप्पाईया य ।

प्रज्ञापना प्रथम पद सूत्र ५०

उपर्युपरि ॥१८॥

ईसाणस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं इत्यादि ।

प्रज्ञापना पद २ वैमानिक देवाधिकार

सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्टशुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्यु-

तयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्तजयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥१९॥

सोहम्म ईसाण सणकुमार माहिंद बम्भलोय लन्तग महासुक्क सहस्सार आणय पाणय आरण अच्चुय हेट्ठिमगेवेज्जग मज्झिमगेवेज्झग उवरिम-गेवेज्झग विजय वेजयन्त जयन्त अपराजिय सव्वट्ठ-सिद्धदेवा य ।

प्रज्ञा० पद ६ अनुयोग० सू० १०३ औप० सिद्धाधिकार

स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधिकाः ॥२०॥

गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः॥

महिड्ढीया महज्जुइया जाव महाणुभागा

इड्ढीए पण्णत्ते, जाव अच्चुओ. गेवेज्जणुत्तरा य सव्वे महिड्ढीया ।

जीवाभिगम० प्रतिपत्ति ३ सूत्र २१७ वैमानिकाधिकार

सोहम्मीसाणेसु देवा केरिसए कामभोगे पच्च-णुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! इट्ठा सद्दा इट्ठा रूवा जाव फासा एवं जाव गेवेज्जा अणुत्तरोववातिया णं अणुत्तरा सद्दा एवं जाव अणुत्तरा फासा ।

जीवाभिगम० प्रतिपत्ति ३ उद्दे० २ सूत्र २१६

प्रज्ञापना पद २ देवाधिकार

असुरकुमार भवणवासि देव० पंचि० वेउव्विय सरीरस्स णं भंते ! के महा० ? गो० ? असुरकुमा-राणं देवाणं दुविहा सरीरोगाहणा प०, तं०—भव-धारणिज्जा य उत्तर वेउव्विया य तत्थ णं जासा भवधारणिज्जा सा ज० अंगुल० अस० उक्को० सत्त-रयणीओ, तत्थ णं जासा उत्तर वेउव्विता सा, जह० अंगुल० सखे० उक्को० जोयणसतसहस्सं, एवं जाव

थणिय कुमाराणं, एवं ओहियाणं वाणमंतराणं एवं जोइसियाणवि, सोहम्मीसाणं देवाणं एवं चेव उत्तरवेउव्विया जाव अच्चुओ कप्पो, नवरं सणं कुमारे भवधारणिज्जा जह० अगु० अस० उक्को० छरयणीओ, एवं माहिंदेवि, बंभलोयलंतगेसु पंच-रयणीओ, महासुक्कसहस्सारेसु चत्तारि रयणीओ, आणय पाणय आरणच्चुएसु तिणि रयणीओ गेवि-ज्जगकप्पातीत वेमाणिय देव पंचिंदिय वेउ० सरी० के महा० ? गो० ! गेवेज्जगदेवाणं एगा भवणिज्जा सरीरोगाहणा प० सा जह० अगुल० अस० उक्को० दो० रयणी, एवं अणुत्तरोववाइयदेवाणवि णवरं एक्का रयणी ।

प्रज्ञापना सूत्र शरीर पद २१ सूत्र २७२

तओ विसुद्धाओ ।

प्रज्ञापना १७ लेश्यापद उद्देश ३

देवाणं पुच्छा—गो० ! छ एयाओ चेव देवीणं

पुच्छा, गो० ! चत्तारि कण्ह० जाव तेउलेस्सा, भवणवासीणं भंते ! देवाणं पुच्छा, गोयमा ! एवं चेव एवं भवणवासिणीणवि वाणमंतरा देवाणं पुच्छा, गो० ! एवं चेव, वाणमंतरीणवि जोइसियाणं पुच्छा, गो० ! एगा तेउलेस्सा, एवं जोइसिणीणवि।

वेमाणियाणं, पुच्छा, गो० ? तिन्नि त०—तेउ० पम्ह० सुक्कलेस्सा वेमाणिणीणं पुच्छा, गो० ? एगा-तेउलेस्सा।

प्रज्ञापना १७ लेश्या पद उद्देश २ सूत्र २१६

असुरकुमाराणं पुच्छा, गो० ! पल्लगसंठिते, एवं जाव थणियकुमाराणं , वाणमंतराणं पुच्छा, गो० ! पडहग सं० जोतिसियाणं पुच्छा ? गो० ! झल्लरिसंठाणसं० प० सोहम्मगदेवाणं पुच्छा! गो० ! उड्ढमुयंगागारसंठिए प० एवं जाव अच्चुयदेवाणं गेवेज्जगदेवाणं पुच्छा गो० ! पुप्फचंगेरि संठिए प० अणुत्तरोववाइयाणं पुच्छा ?

गो० ! जवनालिया सठिते ओही प० ।

प्रज्ञपना सूत्र पद ३३ (सूत्र ३१९)

असुरकुमाराण भंते ! ओहिणा केवइय खेत्त जा० पा० ? गोयमा ! जह० पणवीस जोयणाइ उक्को० असखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जा० पा० नागकुमाराण-जह० पणवीस जोयणाइ उ० सखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जा० पा० एव जाव थणिय-कुमारा। वाणमंतराण जहा नाकुमारा, जोइ-सियाण भंते ! केवतित खेत्त ओ० जा० पा० ? गो० ! ज० सखेज्जे दीवसमुद्दे उक्कोसेण वि सखेज्जे दीवसमुद्दे, सोहम्मगदेवाण भंते ! केव० खेत्त ओ० जा० पा० ? गो ! ज० अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्को० अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए हिट्ठिले चर-मंते तिरिय जाव असंखिज्जे दीवसमुद्दे उड्ढ जाव सगाइं विमणाइं ओहिणा जाणति पासति, एव ईसाणग देवावि सणंकुमारदेवावि एव चेव, नवर

जाव अहे दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए हिट्ठिल्ले चरमंते, एव माहिंददेवावि, बभलोयलंतगदेवा तच्चाए पुढवीय हिट्ठिल्ले चरमते महासुक्कसहस्सार-गदेवा चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरमते आणय पाणय आणच्चुयदेवा अहे जाव पचमाए धूमप्पभाए हेट्ठिल्ले चरमते हेट्ठिममज्झिमगे-वेज्जगदेवा अधे जाव छुट्ठाए तमाए पुढवीए हेट्ठिल्ले जाव चरमते उवरिमगेविज्जगदेवाण भंते ! केव-तिय खेत्त ओहिणा जा० पा० ? गो० ! ज० अगु लस्स असखेज्जतिभागे उ० अधे सत्तमाए हे० च० तिरिय जाव असखेज्जे दीवसमुद्द उड्ढ जाव सयाइ विमाणाइ ओ० जा० पा० अणुत्तरोववा-इयदेवाण भन्ते के० खेत्त ओ० जा० पा० ? गो० सभिन्न लोगनालिं ओ० जा० पा०

प्रज्ञापना अवधिपद ३३ सू० ३१८

पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ॥२२॥

सोहम्मीसाणदेवाणं कति लेस्साओ पन्नत्ताओ? गोयमा! एगा तेऊलेस्सा पएणत्ता। सणंकुमारमाहिंदेसु एगा पम्हलेस्सा एवं बंभलोगे वि पम्हा। सेसेसु एक्का सुक्कलेस्सा अणुत्तरोववातियाणं एक्का परमसुक्कलेस्सा।

जीवाभिगम० प्रतिपत्ति ३ उद्दे० १ सूत्र २१८

प्रज्ञापना पद १७ उद्दे० १ लेश्याधिकार

प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥२३॥

कप्पोपवरणगा बारसविहा पएणत्ता।

प्रज्ञापना प्रथम पद सूत्र ४६

ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः ॥२४॥

बंभलोए कप्पे लोगंतिता देवा पएणत्ता।

स्थानांग स्थान ८ सूत्र ६२३

सारस्वतादित्यवन्ह्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ॥२५॥

सारस्सयमाइच्चा वरहीवरुणा य गद्दतोया य।
तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥
स्थानांग स्थान ६ सूत्र ६८४

एएसुणं अट्ठसु लोगंतिय विमाणेसु अट्ठविहा लोगंतिया देवा परिवसन्ति, तं जहा--
सारस्सयमाइच्चा वण्हीवरुणा य गद्दतोया य।
तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठाए ॥२८॥
भगवती सूत्र ६ शतक ५ उद्देश

विजयादिषु द्विचरमाः ॥२६॥

विजय वेजयंत जयंत अपराजिय देवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पराणत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा इत्यादि। प्रज्ञापना० पद १५ इन्द्रियपद

औपपादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ॥२७॥

उववाइया . मणुश्रा (सेसा)तिरिक्खजोणिया।

दशवैका० अध्याय षट्कायाधिकार

स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनमिता ॥२८॥

असुरकुमाराण भंते ! देवाण केवइय कालट्ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! उक्कोसेण साइरेग सागरोवम .. ।

नागकुमाराण देवाण भंते ! केवइय काल ठिई पन्नता ? गोयमा ! उक्कोसेण दोपलिओवमाइं देसुणाइं सुवण्णकुमाराण भंते ! देवाण केवइय काल ठिई पन्नता? गोयमा ! उक्कोसेण दोपलिओव-

माइं देसूणाइं । एवं एएणं अभिलावेणं जाव थणियकुमाराणं जहा नागकुमाराणं ।

प्रज्ञापना० पद ४ भवनपत्यधिकार, स्थिति विषय

सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके ॥२६॥

सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ॥३०॥

त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपञ्चदशभिरधिकानि तु ॥३१॥

आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥३२॥

अपरा पल्योपममधिकम् ॥३३॥

परतःपरतःपूर्वा पूर्वाऽनन्तरा ॥३४॥

दो चेव सागराइ, उक्कोसेण वियाहिआ ।
सोहम्ममम्मि जहन्नेण, एग च पलिओवम ॥ २२० ॥
सागरा साहिया दुन्नि, उक्कोसेण वियाहिया ।
ईसाणम्मि जहन्नेण, साहिय पलिओवम ॥ २२१ ॥
सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे ।
सणकुमारे जहन्नेण, दुन्नि ऊ सागरोवमा ॥२२२॥
साहिया सागरा सत्त, उक्कोसेण ठिई भवे ।
माहिन्दम्मि जहन्नेण,साहिया दुन्नि सागरा ॥२२३॥
दस चेव सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
बम्भलोए जहन्नेण, सत्त ऊ सागरोवमा ॥ २२४ ॥
चउदस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
लन्तगम्मि जहन्नेण, दस ऊ सागरोवमा ॥ २२५ ॥

सत्तरस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे।
महासुक्के जहन्नेण, चोद्दस सागरोवमा ॥ २२६ ॥
अट्ठारस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे।
सहस्सारम्मि जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ॥२२७॥
सागरा अउणवीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
आणयम्मि जहन्नेण, अट्ठारस सागरोवमा ॥२२८॥
वीस तु सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे।
पाणयम्मि जहन्नेण, सागराअउणवीसई ॥२२९ ॥
सागरा इक्कवीस तु उक्कोसेण ठिई भवे।
आरणम्मि जहन्नेण, वीसई सागरोवमा ॥२३०॥
बावीस सागराइ, उक्कोसेण ठिईभवे।
अच्चुयम्मि जहन्नेण, सागरा इक्कवीसई ॥ २३१ ॥
तेवीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे।
पढमम्मि जहन्नेणं, बावीस सागरोवमा ॥ २३२ ॥
चउवीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे।
बइयम्मि जहन्नेण, तेवीस सागरोवमा ॥ २३३ ॥

पणवीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
तइयम्मि जहन्नेण, चउवीस सागरोवमा ॥ २३४ ॥
छवीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउत्थम्मि जहन्नेण, सागरा पणुवीसई ॥ २३५ ॥
सागर सत्तवीस तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
पञ्चमम्मि जहन्नेण, सागरा उ छव्वीसइ ॥ २३६ ॥
सागरा अट्ठवीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
छट्ठम्मि जहन्नेण, सागरा सत्तवीसइ ॥ २३७ ॥
सागरा अउणतीस , उक्कोसेण ठिई भवे ।
सत्तमम्मि जहन्नेण, सागरा अट्ठवीसइ ॥ २३८ ॥
तीस तु सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
अट्ठमम्मि जहन्नेण, सागरा अउण तीसई ॥ २३९ ॥
सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
नवमम्मि जहन्नेण, तीसई सागरोवमा ॥ २४० ॥
तेत्तीसा सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउसुवि विजयाईसु, जहन्नेणेक्कत्तीसई ॥ २४१ ॥

अजहन्नमणुक्कोसा, तेत्तीस सागरोवमा ।
महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ॥२४३॥

उत्तराध्ययन सूत्र अ० ३६

नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥३५॥

दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ॥३६॥

सागरोवममेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
पढमाए जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥१६०॥
तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
दोच्चाए जहन्नेणं, एगं तु सागरोवमं ॥१६१॥

उत्तराध्ययन सूत्र अ० ३६

एवं जा जा पुव्वस्स उक्कोसठिई अत्थि ताओ ताओ परओ परओ जहण्णठिई णेअव्वा ।

(समन्वयकार)

भवनेषु च ॥३७॥

भोमेज्जाण जहण्णेण, दसवाससहस्सिया।

उत्तरा० अ० ३६ गाथा २१७

व्यन्तराणाञ्च ॥३८॥

परा पल्योपमाधिकम् ॥३९॥

वाणमंतराणं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पलिओवमं।

प्रज्ञापना० स्थितिपद ४

ज्योतिष्काणाञ्च ॥४०॥

तदष्टभागोऽपरा ॥४१॥

पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं।
पलिओवमट्ठभागो, जोइसेसु जहन्निया ॥ २१९ ॥

उत्तरा० अ० ३६

लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ॥४२॥

लोगंतिकदेवाणं जहण्णमणुक्कोसेणं अट्ठसागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।

स्था० स्थान ८ सू० ६२३

व्याख्या० श० ६ उ० ५

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीत तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः ।

पञ्चमोऽध्यायः

अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः ॥१॥

चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया पराणत्ता, त जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए ।

स्थानांग स्थान ४ उद्दे० १ सूत्र २५१

व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक ७ उद्दे० १० सूत्र ३०५

द्रव्याणि ॥२॥

जीवाश्च ॥३॥

कइविहाणं भंते ! दव्वा पराणत्ता ? गोयमा !

दुविहा पण्णत्ता, त जहा--"जीवदव्वा य अजीव-दव्वा य।"

अनुयोग० सूत्र १४१

नित्यावस्थितान्यरूपाणि ॥४॥

रूपिणः पुद्गलाः ॥५॥

पंचत्थिकाए न कयाइ नासी न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ भुविं च भवइ अ भविस्सइ अ धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए, निच्चे अरूवी।

नंदि सूत्र० सूत्र ५८

पोग्गलत्थिकायं रूविकाय।

स्थानांगसूत्र स्थान ५ उद्दे० ३ सू०१

व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक ७ उद्देश्य १०

आ आकाशादेकद्रव्याणि ॥६॥

निष्क्रियाणि च ॥७॥

धम्मो अधम्मो आगास दव्व इक्किक्कमाहियं।
अणंताणि य दव्वाणि कालो पुग्गलजंतवो॥

उत्तराध्ययन अध्य० २८ गाथा ८

अवट्ठिए निच्चे।

नन्दि० द्वादशाङ्गी अधिकार सूत्र ५८

असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम् ॥८॥

चत्तारि पएसग्गेणं तुल्ला असंखेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, लोगागासे, एगजीवे।

स्थानांग० स्थान ४ उद्देश्य ३ सूत्र ३३४

आकाशस्याऽनन्ताः ॥ ९ ॥

आगासत्थिकाए पएसट्ठयाए अणंतगुणे।

प्रज्ञापना पद ३ सूत्र १४

संख्येयाऽसंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ॥ १० ॥ नाणोः ॥११॥

रूवी अजीवदव्वाण भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—"खधा, खधदेसा, खधप्पएसा, परमाणुपोग्गला, अणता परमाणुपुग्गला, अणता दुप्पएसिया खधा जाव अणता दसपएसिया खधा अणता सखिज्जपएसिया खधा, अणता असखिज्जपएसिया खंधा, अणता अणतपएसिया खधा ।

प्रज्ञापना ५ वा पद

लोकाकाशेऽवगाहः ॥१२॥

कतिविहेण भंते ! आगासे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे आगासे प०, त जहा—लोयागासे य अलोयागासे य । लोयागासे ण भंते ? किं जीवा जीवदेसा

जीवपदेसा अजीवा अजीवदेसा अजीवपएसा? गोयमा! जीवावि जीवदेसावि जीवपदेसावि अजीवावि अजीवदेसावि अजीवपदेसावि जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पचेंदिया अणिंदिया, जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा, जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, त जहा--रूवीय अरूवी य जे रूवि ते चउव्विहा पराणत्ता, त जहा--खधा खधदेसा खधपदेसा परमाणुपोग्गला--जे अरूवी ते पचविहा पराणत्ता, त जहा--धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपदेसा अधम्मत्थिकाए-नोधम्मत्थिकायस्स देसे अधम्मत्थिकायस्स पदेसा अद्धा समए ॥

व्याख्या० श० २ उ० १० सूत्र १२१

अलोगागासे णं भते! किं जीवा? पुच्छा तह

चेव गोयमा ! नो जीवा जाव नो अजीवप्पएसा एगं अजीवदव्वदेसे अगुरुयलहुए अणंतेहिं अगुरुलहुय-गुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे।

व्याख्या० श० २ उ० १० सू० १२२

धम्मो अधम्मो आगास कालो पुग्गलजंतवो।
एस लोगोत्ति पण्णत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं॥

उत्तराध्ययन अध्य० २८ गाथा ७

धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ॥१३॥

धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहया।
लोगालोगे य आगासे, समए समयखेत्तिए॥

उत्तराध्ययन अध्ययन ३६ गाथा ७

एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गला-नाम् ॥१४॥

एगपएसो गाढा सखिज्जपएसो गाढा असखिज्जपएसो गाढा।

प्रज्ञा० पञ्चम पर्यायपद अजीवपर्यवाधिकार

असंख्येयभागादिषु जीवानाम् ॥१५॥

लोअस्स असखेज्जइभागे।

प्रज्ञापना पद २ जीवस्थानाधिकार

प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ॥१६॥

दीव व जीवेवि ज जारिसय पुव्वकम्म-निबद्ध बोंदिं णिवत्तेइ तं असखेज्जेहिं जीवपदेसेहिं सचित्त करेइ खुड्डिय वा महालिय वा।

राजप्रश्नीयसूत्र सूत्र ७४

गतिस्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुप-कारः ॥१७॥

आकाशस्यावगाहः ॥१८॥

शरीरवाङ्मनःप्राणापानाः पुद्गलानाम् ॥१९॥

सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च ॥२०॥

परस्परोपग्रहो जीवानाम् ॥२१॥

धम्मत्थिकाए णं जीवाणं आगमणगमणभासुम्मेसमणजोगा वइजोगा कायजोगा जे यावन्ने तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तंति। गइलक्खणे णं धम्मत्थिकाए।

अहम्मत्थिकाए णं जीवाणं किं पवत्तति? गोयमा! अहम्मत्थिकाएणं जीवाणं ठाणनिसीयणतुयट्टणमणस्स य एगत्तीभावकरणता जे यावन्ने तहप्पगारा थिरा भावा सव्वे ते अहम्मत्थिकाये

पवत्तति। ठाणलक्खणे ण अहम्मत्थिकाए।

आगासत्थिकाए णं भंते! जीवाण अजीवाण य किं पवत्तति? गोयमा! आगासत्थिकाएण जीवदव्वाण य अजीवदव्वाण य भायणभूए एगेण वि से पुन्ने दोहिवि पुन्ने सयपि माएज्जा। कोडिसएणवि पुन्ने कोडिसहस्सवि माएज्जा ॥१॥ अवगाहणालक्खणे ण आगासत्थिकाए।

जीवत्थिकाएण भंते! जीवाण किं पवत्तति? गोयमा! जीवत्थिकाएण जीवे अणंताण आभिणिबोहियनाणपज्जवाण अणंताण सुयनाणपज्जवाण, एवं जहा बितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव उवओगं गच्छति, उवओगलक्खणे णं जीवे।

व्या० प्र० शतक १३ उ० ४ सू० ४८१

जीवे ण अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाण एवं सुयनाणपज्जवाण ओहिनाणपज्जवाणं मणपज्जवनाणप० केवलनाणप० मइअन्नाणप० सुयअन्नाण-

णाए० विभंगणाणाए० चक्खुदंसणाए० अचक्खुदंसणाए० ओहिदंसणाए० केवलदंसणपज्जवाणं उवओगं गच्छइ० ।

व्या० प्र० शतक २ उ० १० सू० १२०

जीवो उवओगलक्खणो । नाणेणं दंसणेणं च सुहेण य दुहेण य । उत्त० अध्य० २८ गाथा १०

पोग्गलत्थिकाए णं पुच्छा ? गोयमा ! पोग्गलत्थिकाए णं जीवाणं ओरालियवेउव्विय आहारए तेयाकम्मए सोइंदियचक्खिंदियघाणिंदियजिब्भिंदिय फासिंदियमणजोगवयजोगकायजोगआणापाणाणं च गहणं पवत्तति । गहणलक्खणे णं पोग्गलत्थिकाए ।

व्या० प्र० शतक १३ उ० ४ सू० ४८१

वर्तनापरिणामक्रियाः परत्वापरत्वे च कालस्य ॥२२॥

वत्तना लक्खणो कालो०।

उत्तरा० अध्य० २८ गाथा १०

स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ॥२३॥

पोग्गले पञ्चवण्णे पञ्चरसे दुगंधे अट्ठफासे पण्णत्ते। व्या० प्र० शतक १२ उ० ५ सू० ४५०

शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायाऽऽतपोद्योतवन्तश्च ॥२४॥

सद्दन्धयार-उज्जोओ पभा छाया तवो इ वा।
वण्णरसगन्धफासा पुग्गलाण तु लक्खणं ॥१२॥
एगत्तं च पुहत्तं च संखा संठाणमेव च।
संजोगा य विभागा य पज्जवाणं तु लक्खणं ॥१३॥

उत्तरा० अध्य० २८

अणवः स्कन्धाश्च ॥२५॥

दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—परमाणु पोग्गला नोपरमाणुपोग्गला चेव ।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८२

भेदसङ्घातेभ्यः उत्पद्यन्ते ॥२६॥

भेदादणुः ॥२७॥

दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहण्णंति, तं जहा-सइं वा पोग्गला साहन्नति परेण वा पोग्गला साहन्नति । सइं वा पोग्गला भिज्जति परेण वा पोग्गला भिज्जति ।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८२

एगत्तेण पुहत्तेण खंधाय परमाणु य ।

उत्तरा० अध्य० ३६ गा० ११

भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषः ॥२८॥

चक्खुदंसणं चक्खुदंसणिस्स घड पड कड रहाइएसु दव्वेसु ।

अनुयोग० दर्शन गुणप्रमाण सू० १४४

सद्द्रव्यलक्षणम् ॥२९॥

सद्दव्व वा ।

व्या० प्र० शत० ८ उ० ६ सत्पदद्वार

उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ॥३०॥

माउयाणुओगे (उपन्ने वा विगए वा धुवे वा)।

स्थानांग स्थान १०

तद्भावाऽव्ययं नित्यम् ॥३१॥

परमाणुपोग्गलेणं भंते ! किं सासए असासए ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए वन्नपज्जवेहिं जाव फास-पज्जवेहिं असासए ।

व्या० प्र० शतक १४ उ० ४ सू० ५१२

जीवा० प्र० ३ उ० १ सूत्र ७७

जीवाणं भंते ! किं सासया असासया ? गोयमा !

जीवा सियसासया सियअसासया से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जीवा सियसासया सिय असासया ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया भावट्ठयाए असासया से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ सियसासया सियअसासया ! नेरइयाएा भते ! किं सासया असासया ? एव जहा जीवा तहा नेरइयावि एव जाव वेमाणिया जाव सियसासया सियअसासया । से व भते ! से व भते ! व्या० श० ७ उ० २ सू० २७४

अर्पिताऽनर्पित सिद्धेः ॥३२॥

अप्पिनणप्पिते । स्था० स्थान० १० सूत्र ७२७

स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्धः ॥३३॥

न जघन्यगुणानाम् ॥३४॥

गुणसाम्ये सदृशानाम् ॥३५॥

द्व्यधिकादिगुणानान्तु ॥३६॥

बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ॥३७॥

बंधणपरिणामे णं भंते! कतिविहे पएणत्ते? गोयमा! दुविहे पएणत्ते, तं जहा–णिद्धबंधणपरिणामे लुक्खबंधणपरिणामे य—

समणिद्धयाए बंधो न होति समलुक्खयाएवि ण होति
वेमायणिद्धलुक्खत्तणेण बंधो उ खंधाणं ॥१॥
णिद्धस्स णिद्धेण दुयाहिएणं,
लुक्खस्स लुक्खेण दुयाहिएणं।
निद्धस्स लुक्खेण उवेइ बंधो,
जहएणवज्जो विसमो समो वा ॥२॥

प्रज्ञा० परि० पद १३ सूत्र १८५

गुणपर्यायवद्द्रव्यम् ॥३८॥

गुणाणमासओ दव्वं, एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाण तु, उभओ अस्सिया भवे ॥

उत्तरा० सूत्र अध्य० २८ गाथा ६

कालश्च ॥३६॥

छव्विहे दव्वे पण्णत्ते, तं जहा--धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पुग्गलत्थिकाए, अद्धासमये अ, सेतं दव्वणामे ।

अनुयोग० द्रव्यगुण० सू० १२४

सोऽनन्तसमयः ॥४०॥

अणंता समया ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शत २५ उ० ५ सू० ७४७

द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ॥४१॥

दव्वस्सिया गुणा ।

उत्तराध्ययन अध्ययन २८ गाथा ६

तद्भावः परिणामः ॥४२॥

दुविहे परिणामे पएणत्ते, त जहा-जीवपरिणामे य अजीवपरिणामेय ।

प्रज्ञापना परिणाम पद १३ सू० १८१

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-

सगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये

पञ्चमोऽध्याय समाप्त. ।

षष्ठोऽध्यायः

कायवाङ्मनःकर्मयोगः ॥१॥

तिविहे जोए पराणत्ते, तंजहा-मणजोए, वइजोए कायजोए।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक १६ उद्दे० १ सूत्र ५६४

स आस्रवः ॥२॥

पंच आसवदारा पराणत्ता, तं जहा-मिच्छत्त, अविरई, पमाया, कसाया, जोगा।

समवायांग समवाय ५

शुभः पुण्यस्याऽशुभः पापस्य ॥३॥

पुराणं पावासवो तहा।

उत्तराध्ययन २८ गाथा १४

सकषायाऽकषाययोः साम्परायिकेर्यापथयोः ॥४॥

जस्स णं कोहमाणमायालोभा वोच्छिन्ना भवन्ति तस्स णं ईरियावहिया किरिया कज्जइ, नो सपराइया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोहमाणमायालोभा अवोच्छिन्ना भवन्ति तस्स णं सपरायकिरिया कज्जइ नो ईरियावहिया ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक ७ उद्दे० १ सूत्र २६७

इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पञ्चचतुःपञ्चपञ्चविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः ॥५॥

पंचिंदिया पराणत्ता चत्तारि कसाया पराणत्ता पंच अविरय पराणत्ता पचवीसा किरिया पराणत्ता स्थानाम स्थान २ उद्देश्य १ सूत्र ६०

इन्दिय १ कसाय २ अव्वय ३ जोगा ६ पच १

चऊ २ पच ३ तिन्निकसाया किरियाओ पणवीस
इमाओ अणुक्कमसो। नव तत्व प्रकरण गा० १४

तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवी-र्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः ॥६॥

जे केइ खद्दका पाणा अदु वा सति महालया।
सरिस तेहिं वेरति असरिस नी व णेवदे ॥६॥
एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं तु जाणए* ॥७॥
सूत्रकृताग श्रुतस्कन्ध २ अ० ५ गाथा ६-७

---

* व्याख्या—ये केचन क्षुद्रका सत्त्वा प्राणिन एके-न्द्रियद्वीन्द्रियादयोऽल्पकाया वा पञ्चेन्द्रिया अथवा महालया महाकाया सति विद्यन्ते, तेषा च क्षुद्रकाणामल्पकायाना कुन्थ्वादीना महानालया शरीरं येषा ते महालया' हस्त्या-दयस्तेषा च व्यापादने, सदृश, वैरमिति, वज्र कर्मविरोध-लक्षण वा वैर तत्सदृश समानम्, अल्पप्रदेशत्वात्सर्वजतना-

अधिकरणं जीवाऽजीवाः ॥७॥

जीवे अधिकरण ।

व्या० प्रज्ञ० श० १६ उ० १

एव अजीवमवि ।

स्थानाग स्थान २ उ० १ सू० ६०

मित्येवमेकान्तेन नो वदेत्। तथा विसदृशम् असदृश तद्व्यापत्तौ वैर कर्मबन्धो विरोधो वा इन्द्रियविज्ञानकायाना विसदृशत्वात् सत्यपि प्रदेश अल्पत्वेन सदृश वैरमित्येवमपि नो वदेत्। यदि हि वध्यापेक्ष एव कर्मबन्ध स्यात्तदा तत्तद्वशात्कर्मणोऽपि सादृश्यमसादृश्य वा वक्तु युज्यते। न च तद्वशादेव बधः, अपित्वध्यवसायवशादपि। ततश्च तीव्राध्यवसायिनोऽल्पकाय-सत्त्वव्यापादनेऽपि महद्वैरम्। अकामस्य तु महाकायसत्त्वव्यापादनेऽपि स्वल्पमिति ॥६॥

एतदेव सूत्रेणैव दर्शयितुमाह आभ्यामनन्तरोक्ताभ्या स्थानाभ्यामनयर्वा स्थानयोरल्पकायमहाकायव्यापादनापादित-

आद्यं संरम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारिताऽनुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥८॥

कर्मबन्धसदृशत्वयोर्व्यवहरणं व्यवहारो निर्युक्तिकत्वान्नयुज्यते। तथाहि—न वध्यस्य सदृशत्वमसदृशत्वं चैकमेव। कर्मबन्धस्य कारणम्। अपि तु वधकस्य **तीव्रभावो मन्दभावो ज्ञातभावोऽज्ञातभावो** महावीर्यत्वमल्पवीर्यत्वं चेत्येतदपि। तदेव वध्यवधकयोर्विशेषात्कर्मबन्धविशेष इत्येवं व्यवस्थिते वध्यमेवाश्रित्य, सदृशत्वासदृशत्वव्यवहारो न विद्यत इति। तथाऽनयोरेव स्थानयोः प्रवृत्तस्यानाचारं विजानीयादिति। तथाहि—यज्जीवसाम्यात्कर्मबन्धसदृशत्वमुच्यते, तदयुक्तम्। यतो न हि जीवव्यापत्त्या हिंसोच्यते, तस्य शाश्वतत्वेन व्यापादयितुमशक्यत्वात्। अपि त्विन्द्रियादिव्यापत्त्या तथाचोक्तम्—पञ्चेन्द्रियाणि, त्रिविधं बलं च उच्छ्वासनिःश्वासमथान्यदायुः। प्राणा

सरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।

उ० अध्य० २४ गाथा २१

तिविह तिविहेण मणेण वायाए कायएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि ।

दशवैकालिक अ० ४

दशैते भगवद्भिरुक्तास्तेषा वियोजीकरण तु हिंसा ॥१॥ इत्यादि । अपि च भावमव्यपेक्षस्यैव,कर्मबन्धोऽभ्युपेतु युक्त । तथाहि—वैद्यस्यागमसव्यपेक्षस्य, सम्यक् क्रिया कुर्वतो,यद्यप्या-तुरविपत्तिर्भवति, तथापि न वैरानुषङ्गो भावदोषाभावाद् । अपरस्य तु सर्पबुद्धया रज्जुमपि घ्नतो भावदोषात्कर्मबन्ध. । तद्रहितस्य तु न बन्ध इति । उक्त चागमे, उच्चालयमिपाए। इत्यादि तण्डुलमत्स्याख्यानक तु सुप्रसिद्धमेव । तदेवविधवध्य-वधकभावापेक्षया स्यात् । सदृश स्यादसदृशत्वमिति । अन्य-थाऽनाचार इति ॥७॥

वृत्ति शीलाङ्काचार्य कृत

जस्स णं कोहमाणमायालोभा अवोच्छिन्ना भवंति तस्स णं संपराइया किरिया।

व्या० प्रज्ञप्ति श० ७ उ० १ सूत्र १८

निवर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम् ॥९॥

णिवत्तणाधिकरणिया चेव संजोयणाधिकरणिया चेव। स्था० स्थान २ सू० ६०

आइये निक्खिवेज्जा। उत्तरा० अ० २५ गाथा १४

पवत्तमाणं। उत्तरा० अ० २४ गाथा २१-२३

तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयोः॥१०॥

णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधेणं भंते! कस्स कम्मस्स उदएणं? गोयमा! नाणपडिणीययाए णाणनिण्हवणयाए णाणंतराएणं णाणप्पदोसेणं

णाणच्चासायणाए णाणविसंवादणाजोगेणं,
एवं जहा णाणावरणिज्जं नवरं दंसणनाम घेत्तव्वं।

व्या० प्रज्ञप्ति श० ८ उ० ९ सू० ७५-७६

दुःखशोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवना-
न्यात्मपरोभयस्थान्यसद्वेदस्य ॥११॥

परदुक्खणयाए परसोयणयाए परजूरणयाए परतिप्पणयाए परपिट्टणयाए परपरियावणयाए बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परियावणयाए एवं खलु गोयमा! जीवाणं अस्साया-वेयणिज्जा कम्मा किज्जन्ते।

व्याख्या० श० ७ उ० ६ सू० २८६

भूतव्रत्यनुकम्पादानसरागसंयमादि-
योगःक्षान्तिःशौचमिति सद्वेदस्य ॥१२॥

पाणाणुकपाए भूयाणुकपाए जीवाणुकपाए सत्ताणुकपाए बहूण पाणाण जाव मत्ताण अदुक्खणयाप असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए अपरियावणयाए एव खलु गोयमा! जीवाण सायावेयणिज्जा कम्मा किज्जति।

व्या० प्रज्ञप्ति शतक ७ उ० ६ सू० २८६

केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥१३॥

पचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लभबोधियत्ताए कम्म पकरेंति, त जहा-अरहताण अवन्नं वदमाणे १, अरहतपन्नतस्स धम्मस्स अवन्नं वदमाणे २, आयरियउवज्झायाण अवन्न वदमाणे ३, चउवण्णस्स सघस्स अवण्ण वदमाणे ४, विवक्कतवंभचेराणं देवाण अवन्न वदमाणे।

स्था० स्थान ५ उ० २ सू० ४२६

कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ॥१४॥

मोहणिज्जकम्मासरीरप्पयोगपुच्छा, गोयमा ! तिव्वकोहयाए तिव्वमाणयाए तिव्वमायाए तिव्वलोभाए तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए तिव्वचारित्तमोहणिज्जाए। व्या० प्र० शतक ८ उ० ९ सू० ३५१

बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ॥१५॥

चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरतियत्ताए कम्मं पकरेंति, त जहा–महारम्भताते महापरिग्गहयाते पञ्चिंदियवहेणं कुणिमाहारेणं।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सूत्र ३७३

माया तैर्यग्योनस्य ॥१६॥

चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पगरेंति, त जहा-माइल्लताते णियडिल्लताते अलियवयणेण कूडतुलकूडमाणेण।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सू० ३७३

अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य ॥१७॥
स्वभावमार्दवञ्च ॥१८॥

अप्पारम्भा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया।

औपपातिक सूत्र संख्या १२४

चउहिं ठाणेहिं जीवामणुस्सत्ताते कम्म पगरेंति, त जहा-पगतिभद्दताते पगतिविणीययाए साणुक्कोसयाते अमच्छरिताते।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सू० ३७३

वेमायाहिं सिक्खाहिं जे नरा गिहिसुव्वया।
उवेंति माणुस जोणिं कम्मसच्चाहु पाणिणो॥

उत्तरा० सू० अध्य० ७ गाथा २०

निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ॥१६॥

एगतबाले णं मणुस्से नेरइयाउयंपि पकरेइ तिरियाउयंपि पकरेइ मणुस्साउयंपि पकरेइ देवाउयंपि पकरेइ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० १ उ० ८ सूत्र ६३

सरागसंयमसंयमाऽसंयमाऽकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य ॥२०॥

चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा–सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेणं, अकामणिज्जराए।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सूत्र ३७३

सम्यक्त्वं च ॥२१॥

वेमाणियावि जइ सम्मदिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कतियमणुस्सेहिंतो उवव-

ज्जति किं संजतसम्मद्दिट्ठीहिंतो असंजयसम्मद्दिट्ठी-
पज्जत्तएहिंतो संजयासंजयसम्मद्दिट्ठीपज्जत्तस-
खेज्ज० हिंतो उववज्जति ? गोयमा ! तीहिंतोवि उव
वज्जति एवं जाव अच्चुगो कप्पो ।

प्रज्ञापना पद ६

योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ॥२२॥

तद्विपरीतं शुभस्य ॥२३॥

सुभनामकम्म सरीरपुच्छा ? गोयमा ! काय-
उज्जुययाए भावुज्जुययाए भासुज्जुययाए अविस-
वादणजोगेण सुभनामकम्मा सरीरजावप्पयोगबन्धे,
असुभनामकम्मा सरीरपुच्छा ? गोयमा ! कायअणु-
ज्जुवयाए जाव विसंवायणाजोगेण असुभनामकम्मा
जाव पयोगबन्धे । व्या० श० ८ उ० ६

दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शील-
व्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसं-
वेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमा-
धिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रव-
चनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्गप्रभा-
वना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकर-
त्वस्य ॥२४॥

अरहंतसिद्धपवयणगुरुथेरबहुस्सुए तवस्सीसु।
वच्छलया य तेसिं अभिक्ख णाणोवओगे य ॥१॥
दंसण विणए आवास्सए य सीलव्वए निरइयारं।
खणलव तव च्चियाए वेयावच्चे समाहीय ॥२॥

अप्पुव्वणाणगहणे सुयभत्ती पवयणे पभावणया ।
एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्त लहइ जीवो ॥३॥

ज्ञाताधर्म कथांग अ० ८ सू० ६४

परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्‌गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ॥२५॥

जातिमदेण कुलमदेण बलमदेण जाव इस्सरियमदेण णीयागोयकम्मासरीरजावपयोगबन्धे ।

व्या० शतक ८ उ० ६ सूत्र ३५१

तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ॥२६॥

जातिअमदेण कुलअमदेण बलअमदेण रूवअमदेण तवअमदेण सुयअमदेण लाभअमदेणं इस्सरियअमदेण उच्चागोयकम्मासरीरजावपयोगबंधे ।

व्या० शतक ८ उ० ६ सू० ३५१

विघ्नकरणमन्तरायस्य ॥ २७ ॥

दाणंतराएण लाभंतराएण भोगंतराएण उवभोगंतराएण वीरियंतराएणं अंतराइयकम्मा सरीरप्पयोगबन्धे । व्या० प्र० श० ८ उ० ६ सू० ३५१

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
सप्तमोऽध्यायः समाप्त ।

सप्तमोऽध्यायः

हिंसाऽनृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ॥१॥

देशसर्वतोऽणुमहती ॥२॥

पंच महव्वया पण्णत्ता, तं जहा-सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं। जाव सव्वातो परिग्गहातो वेरमणं। पंचाणुव्वता पण्णत्ता, तं जहा-थूलातो पाणाइवायातो वेरमणं थूलातो मुसावायातो वेरमणं थूलातो अदिन्नादाणातो वेरमणं सदारसंतोसे इच्छापरिमाणे। स्था० स्थान ५ उ० १ सू० ३८९

तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ॥३॥

पञ्चजामस्स पणवीसं भावणाओ पण्णत्ता ।

समवायांग समवाय २५

(१) तस्स इमा पञ्च भावणातो पढमस्स वयस्स होति पाणातिवाय वेरमण परिरक्खणट्ठयाए ।

प्रश्न व्या० १ संवर० सू० २३

(२) तस्स इमा पञ्च भावणा तो बितियस्स वयस्स अलिय वयणस्स वेरमण परिरक्खणट्ठयाए ।

प्र० व्या० २ संवर० सू० २५

(३) तस्स इमा पञ्च भावणातो ततियस्स होति परदव्वहरण वेरमणपरिरक्खणट्ठयाए ।

प्र० व्या० ३ संवर० सू० २६

(४) तस्स इमा पञ्च भावणाओ चउत्थयस्स होति अबम्भचेर वेरमणपरिरक्खणट्ठयाए ।

प्र० व्या० ४ संवर० सू० २७

(५) तस्स इमा पंच भावणाओ चरिमस्स

वयस्स होंति परिग्गह वेरमणपरिरक्खणट्ठयाए।

प्रश्न व्या० ५ संवरद्वार सू० २६

वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमित्यालोकितपानभोजनानि पञ्च ॥४॥

ईरिया समिई मणगुत्ती वयगुत्ती आलोयभायणभोयण आदाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई।

समवायांग, समवाय २५

क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषणं च पञ्च ॥५॥

अणुवीति भासणया कोहविवेगे लोभविवेगे भयविवेगे हासविवेगे। समवायांग, समवाय २५

शून्यागारविमोचितावासपरोपरोधाकरणभैक्ष्यशुद्धिसद्धर्माऽविसंवादाः पञ्च ॥६॥

उग्गह अणुण्णवणाया उग्गहसीमजाणणाया सयमेव उग्गहं अणुगिण्हणाया साहम्मियउग्गह अणुण्णविय परिभुंजणाया साहारणभत्तपाण अणुण्णविय पडिभुंजणाया । समः समय २५

स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहराङ्गनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागाः पञ्च ॥७॥

इत्थीपसुपंडगससत्तगसयणासणवज्जणाया इत्थीकहवज्जणाया इत्थीणं इन्दियाणमालोयणवज्जणाया पुव्वरयपुव्वकीलिआण अणणुसरणाया पणीताहारवज्जणाया । समः समवाय २५

मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेषवर्जनानि पञ्च ॥८॥

सोइन्दियरागोवरई चक्खिदियरागोवरई घाणिं-दियरागोवरई जिब्भिदियरागोवरई फासिंदियरागो-वरई ।

सम० समवाय २५

हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम् ॥९॥ दुःखमेव वा ॥१०॥

संवेगिणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा-इहलोगसंवेगणी परलोगसंवेगणी आतसरीरसंवे गणी परसरीरसंवेगणी । णिव्वेयणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा-इहलोगे दुच्चिन्ना कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ॥१॥ इहलोगे दुच्चिन्ना कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ॥२॥ परलोगे दुच्चिन्ना कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसं-जुत्ता भवंति ॥३॥ परलोगे दुच्चिन्ना कम्मा परलोये दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ॥४॥

इहलोगे सुचिन्ना कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसजुत्ता भवति ॥१॥ इहलोगे सुचिन्ना कम्मा परलोगे सुहफलविवागसजुत्ता भवति, एव चउभगो।

स्था० स्थान ४ उ० २ सूत्र २८२

मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थानि च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाऽविनयेषु ११

मित्तिं भूएहिं कप्पए

सूत्र कृताग० प्रथम श्रुतस्कध अध्या० १५ गाथा ३

सुप्पडियाणदा। औप० सू० १ प्र० २०

साणुकोस्सयाए। आ० भगवदुपदेश

मज्झत्थो निज्जरापेही समाहिमणुपालए।

आचाराग प्र० श्रुतस्कध अ० ८ उ० ७ गाथा ५

जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्यार्थम् ॥१२॥

संवेगकारणत्था ।

समवाय सू० विपाकसूत्राधिकार

भावणाहिं य सुद्धाहिं, सम्म भावेत्तु अप्पय ।

उत्तरा० अध्य० १६ गाथा० ६४

अणिच्चे जीवलोगम्मि ।

जीविय चेव रूव च, विज्जुसपायचचलम् ।

उत्तरा० अध्य० १८ गाथा ११, १३

प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा ॥१३॥

तत्थ ण जेते पमत्तसजया ते असुह जोग पडुच्च आयारभा परारभा जाव णो अणारभा ।

व्या० प्र० शतक १ उ० १ सूत्र ४८

असदभिधानमनृतम् ॥१४॥

अलिय असच्च सधत्तण असब्भाव ..
अलिय । प्र० व्या० आस्रव० २

अदत्तादानं स्तेयम् ॥१५॥

अदत्त तेणिक्को । प्र० व्या० आस्रव० ३

मैथुनमब्रह्म ॥१६॥

अबम्भ मेहुण । प्र० व्या० आस्रवद्वार ४

मूर्च्छा परिग्रहः ॥१७॥

मुच्छा परिग्गहो वुत्तो ।
दश० अध्ययन ६ गाथा २१

निश्शल्यो व्रती ॥१८॥

पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं–मायासल्लेणं नियाण सल्लेणं मिच्छादसणसल्लेण ।
आवश्यक० चतु० आवश्य० सूत्र ७

आगार्यनगारश्च ॥१६॥

चरित्तधम्मे दुविहे पन्नत्तं, त जहा-आगार-चरित्तधम्मे चेव, अणगारचरित्तधम्मे चेव ।

स्थानाग स्थान २ उ० १

अणुव्रतोऽगारी ॥२०॥

आगारधम्म अणुव्वयाइ इत्यादि ।

औपपातिक सूत्र श्रीवीरदेशना

दिग्देशानर्थदण्डविरतिसामायिक-प्रोषधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणा-तिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ॥२१॥

आगारधम्म दुवालसविह आइक्खइ, त जहा पच अणुव्वयाइ तिण्णि गुणवयाइं चत्तारि सिक्खा-वयाइ ।

तिण्णि गुणव्वयाइं, तं जहा-अणत्थदंडवेरमणं दिसिव्वयं, उपभोगपरिभोगपरिमाणं । चत्तारि सिक्खावयाइं, तं जहा-सामाइयं देसावगासियं पोसहोववासे अतिहिसंविभागे ।

ओपपातिक श्रीवीरदेशना सूत्र ५७

मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ॥२२॥

अपच्छिमा मारणंतिआ संलेहणा जूसणाराहणा ।

ओपपा० सू० ५७

शङ्काकांक्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतिचाराः॥२३॥

सम्मत्तस्स पञ्च अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा-संका कंखा वितिगिच्छा,

परपासडपसंसा, परपासडसंथवो।

उपासकदशांग अध्याय १

व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ॥२४॥

बन्धवधच्छेदातिभारारोपणान्नपान-निरोधाः ॥२५॥

थूलगस्स पाणाइवायवेरमणस्स समणोवासएणं पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा। तं जहा-बंधवधच्छविच्छेए अइभारे भत्तपाणवोच्छेए।

उपा० अ० १

मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेख-क्रियान्यासापहारसाकारमन्त्रभेदाः २६

थूलगमुसावायस्स पंच अइयारा जाणियव्वा। न समायरियव्वा। तं जहा-सहस्साभक्खाणे रहसा-

भक्खाणे, सदारमतभेए मोसोवएसेए कूडलेहकरणे य । उपा० अ० १

स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः ॥२७॥

थूलगअदिराणादाणस्स पच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—तेनाहडे, तक्करप्पउगे विरुद्धरज्जाइक्कमे, कूडतुल्लकूडमाणे, तप्पडिरूवगववहारे ।

परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीताऽपरिगृहीतागमनाऽनङ्गक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशाः ॥२८॥

सदारसंतोसिए पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा-इत्तरियपरिग्गहियागमणे, अपरिग्गहियागमणे, अणंगकीडा, परविवाहकरणे कामभोएसु तिव्वाभिलासो। उपा० अध्या० १

क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः ॥२६॥

इच्छापरिमाणस्स समणोवासएणं पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा। तं जहा-धणधन्नपमाणाइक्कमे खेत्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे हिरण्णसुवण्णपरिमाणाइक्कमे दुपयचउप्पयपरिमाणाइक्कमे कुवियपमाणाइक्कमे। उपा० अध्या० १

ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तराधानानि ॥३०॥

दिसिव्वयस्स पंच अइयारा जाणियव्वा। न

समायरियव्वा, तं जहा–उड्ढदिसिपरिमाणाइक्कमे, अहोदिसिपरिमाणाइक्कमे, तिरियदिसिपरिमाणाइक्कमे, खेत्तवुड्ढिस्स, सइअंतरड्ढा।

उपा० अ्या० १

आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ॥३१॥

देसावगासियस्स समणोवासएण पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा–आणवणप्पओगे पेसवणपओगे, सद्दाणुवाए, रूवाणुवाए, बहियापोग्गलपक्खिवे।

उपा० अ्या० १

कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्याऽसमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ॥३२

अणट्ठादंडवेरमणस्स समणोवासएण पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा–कन्दप्पे

कुक्कुइए मोहरिए सजुत्ताहिगरणे उवभोगपरि-
भोगाइरित्ते । उपा० अध्या० १

योगदुष्प्रणिधानानादरस्मृत्यनुप-स्थानानि ॥३३॥

सामाइयस्स पंच अइयारा समणोवासएणं जाणियव्वा । न समायरियव्वा, तं जहा—मणदुप्पणि-हाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइ-यस्स सति अकरणयाए, सामाइयस्स अणवट्ठि-यस्स करणया । उपा० अध्या० १

अप्रत्यवेक्षिताऽप्रमार्जितोत्सर्गादान-संस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थाना-नि ॥३४॥

पोसहोववासस्स समणोवासएणं पंच अइयारा

जाणियव्वा न समायरियव्वा, त जहा-अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सिज्जासथारे, अप्पमज्जियदुप्पमज्जिय-सिज्जासथारे, अप्पडिलेहियहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार-पासवणभूमी, अप्पमज्जियदुप्पमज्जिय उच्चारपास-वणभूमी पोसहोववासस्स सम्म अणणुपालणया ।

उपा० अध्या० १

सचित्तसम्बन्धसम्मिश्राभिषवदुःपक्वाहाराः ॥३५॥

भोयणतो समणोवासएण पञ्च अइयारा जाणि-यव्वा, न समायरियव्वा, त जहा-सचित्ताहारे सचित्तपडिबद्धाहारे उप्पउलिओसहिभक्खणया, दुप्पोलितोसहिभक्खणया, तुच्छोसहिभक्खणया ।

उपा० अध्या० १

सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः ॥३६॥

अहासंविभागस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा-सचित्तनिक्खेवणया, सचित्तपेहणया, कालाइक्कमदाणे परोवएसे मच्छ-रिया। उपा० अध्या० १

जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि ॥३७॥

अपच्छिममारणंतियसंलेहणा झूसणाराहणाए पच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा,त जहा-इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे,जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे। उपा० अध्या० १

अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ॥३८॥

समणोवासए णं तहारूवं समणं वा जाव पडि-लाभेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पाएति, समाहिकारएणं तमेव समाहिं पडिलभइ।

व्या० श० ७ उ० १ सूत्र २६३

समणो वासए ण भंते! तहारूव समण वा जाव पडिलाभेमाणे किं चयति? गोयमा! जीविय चयति उच्चय चयति दुक्कर करेति दुल्लह लहइ वोहिं बुज्झइ तओ पच्छा सिज्झति जाव अतं करेति।

व्या० प्र० शत० ७ उ० १ सू० ३६४

विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ॥३६॥

दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं तवस्सिविसुद्धेण तिक-

रणसुद्धेण पडिगाहसुद्धेण तिविहेण तिकरणसुद्धेण दाणेण। व्या० प्र० शत० १५ सू० ५४१

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये

सप्तमोऽध्याय समाप्त।

अष्टमोऽध्यायः

मिथ्यादर्शनाऽविरतिप्रमादकषाय-योगा बन्धहेतवः ॥१॥

पंच आसवदारा पण्णत्ता, तं जहा-मिच्छत्त अविरई पमाया कसाया जोगा। समवा० समवाय ५

सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते स बन्धः ॥२॥

जोगबंधे कसायबंधे। समवा० समवाय ५

दोहिं ठाणेहिं पापकम्मा बंधति, त जहा-रागेण य दोसेण य। रागे दुविहे पण्णत्ते, त जहा-माया

य लोभे य। दोसे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-कोहे य माणे य। स्था० स्थान २ उ० २

प्रज्ञापना पद २३ सू० ५

प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ॥३॥

चउव्विहे बन्धे पण्णत्ते, तं जहा-पगइबधे ठिइबन्धे अणुभावबन्धे पएसबन्धे।

समवायांग समवाय ४

आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः ॥४॥

अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा-णाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं, वेदणिज्जं, मोहणिज्जं, आउयं, नामं, गोयं, अंतराइयं।

प्रज्ञापना पद २१ उ० १ सू० २८८

पञ्चनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपञ्चभेदा यथाक्रमम् ॥५॥

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानाम् ॥६॥

पचविहे णाणावरणिज्जे कम्मे पराणत्ते, त जहा— आभिणिबोहियणाणावरणिज्जे सुयणाणावरणिज्जे, ओहिणाणावरणिज्जे, मणपज्जवणाणावरणिज्जे केवलणाणावरणिज्जे ।

स्थानाग स्थान ५ उ० ३ सू० ४६४

चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ॥७॥

णवविधे दरिसणावरणिज्जे कम्मे पराणत्ते, त जहा–निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला थीण-गिद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे, अव-धिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे।

स्थानांग स्थान ९ सू० ६६८

सदसद्वेद्ये ॥८॥

सातावेदणिज्जे य असायावेदणिज्जे य ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २ सू० २९३

दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषाय-वेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः स-म्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषा-यौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्री-

पुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः ॥६॥

मोहणिज्जे ण भंते ! कम्मे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा-दंसणमोहणिज्जे य चरित्तमोहणिज्जेय । दंसणमोहणिज्जे ण भंते ! कम्मे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा-सम्मत्तवेदणिज्जे, मिच्छत्तवेदणिज्जे, सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जे ।

चरित्तमोहणिज्जे ण भंते ! कम्मे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा-कसायवेदणिज्जे नोकसायवेदणिज्जे ।

कसायवेदणिज्जे ण भंते ! कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविधे पण्णत्ते, त जहा-अण-

ताणुबधीकोहे अणताणुवधी माणे अ० माया अ० लोभे, अपच्चक्खाणे कोहे एव माणे माया लोभे, पच्चक्खणावरणे कोहे एव माणे माया लोभे संजल णकोहे एव माणे माया लोभे ।

नोकसायवेयणिज्जे णं भते ! कम्मे कतिविधे पराणत्ते ?

गोयमा ! णवविधे पराणत्ते, त जहा–इत्थीवेय वेयणिज्जे, पुरिसवे० नपुंसगवे० हासे रती अरती भए सोगे दुगुछा ।

प्रज्ञा० कर्मबन्ध० २३ उ० २

नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ॥१०॥

आउएण भते ! कम्मे कइविहे पराणत्ते ? गोयमा ! चउविहे पराणत्ते, तं जहा--णेरइयाउए, तिरिय आउए, मणुस्साउए, देवाउए ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २

गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धनसंघातसंस्थानसंहननस्पर्शरसगन्धवर्णानुपूर्व्यागुरुलघूपघातपरघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयःप्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययशःकीर्तिसेतराणि तीर्थकरत्वं च॥ ११

णामेण भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! वायालीसतिविहे पण्णत्ते, त जहा-१ गतिणामे, २ जातिणामे, ३ सरीरणामे, ४ सरीरोवगणामे, ५ सरीरबंधणणामे, ६ सरीरसघयणणामे, ७ सघायणणामे, ८ सठाणणामे, ९ वण्णणामे, १० गधणामे, ११ रसणामे, १२ फासणामे, १३ अगुरुलघुणामे,

१४ उवघायणामे, १५ पराघायणामे, १६ आणुपुव्वी-णामे, १७ उस्सासणामे, १८ आयवणामे, १९ उज्जो-यणामे, २० विहायगतिणामे, २१ तसणामे, २२ थावरणामे, २३ सुहुमणामे, २४ बादरणामे, २५ पज्जत्तणामे, २६ अपज्जत्तणामे, २७ साहारणस-रीरणाम, २८ पत्तेयसरीरणामे, २९ थिरणामे, ३० अथिरणामे, ३१ सुभणामे, ३२ असुभणामे, ३३ सुभगणामे, ३४ दुभगणामे, ३५ सूसरणामे, ३६ दूसरणामे, ३७ आदेज्जणामे, ३८ अणादेज्जणामे, ३९ जसोकित्तिणामे, ४० अजसोकित्तिणामे, ४१ णिम्माणणामे, ४२ तित्थगरणामे ।

प्रज्ञापना उ० २ पद २३ सू० २९३

समवाय सू० स्थान ४२

उच्चैर्नीचैश्च ॥१२

गोए णं भंते ! कम्मे कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा !

दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-उच्चागोए य नीयागोए य ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २ सू० २९३

दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम् ॥१३॥

अंतराए णं भंते! कम्मे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा! पञ्चविधे पण्णत्ते, तं जहा-दाणंतराइए, लाभंतराइए, भोगंतराइए, उवभोगंतराइए, वीरियंतराइए ।

प्रज्ञापना पद २३ उद्दे० २ सू० २९३

आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः परा स्थितिः ॥१४॥

उदहीसरिसनामाण, तीसई कोडिकोडीओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९॥

आवरणिज्जाण दुराहपि, वेयणिज्जे तहेव य ।
अन्तराए य कम्मम्मि, ठिई एसा वियाहिया ॥२०॥

उत्तराध्ययन अध्ययन ३३

सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥१५॥

उदहीसरिसनामाण, सत्तरिं कोडिकोडीओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥

उत्तराध्ययन अध्ययन ३३ गाथा २१

विंशतिर्नामगोत्रयोः ॥१६॥

उदहीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडीओ ।
नामगोत्ताण उक्कोसा, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥

उत्तराध्ययन अध्य० ३३ गाथा २३

त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः ॥१७॥

तेत्तीस सागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिइ उ आउकम्मस्स, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

उत्तराध्ययन अ० ३३ गाथा २२

अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य ॥१८॥

सातावेदणिज्जस्स... . जहन्नेणं बारसमुहुत्ता ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २ सू० २९३

नामगोत्रयोरष्टौ ॥१९॥

नामगोयश्राण जहण्णेण अट्ठमुहुत्ता ।

भगवतीसूत्र शतक ६ उ० ३ सू० २३६

जसोकित्तिनामाएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णे- अट्ठमुहुत्ता । उच्चगोयस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अट्ठमुहुत्ता ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २ सूत्र २९४

शेषाणामन्तर्मुहूर्ताः ॥२०॥

अन्तोमुहुत्त जहन्निया ।

उत्तराध्ययन अ० २३ गाथा १९ २२

विपाकोऽनुभवः ॥२१॥

स यथानाम ॥२२॥

अणुभागफलविवागा । समवायाग वियाकश्रुत वर्णन

सव्वेसिं च कम्माणं ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २

उत्तराध्ययन अ० ३३ गाथा १७

ततश्च निर्जरा ॥२३॥

उदीरिया वेइया य निज्जिन्ना ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शत० १ उ० १ सू० ११

नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात् सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः ॥२४॥

सव्वेसिं चेव कम्माणं पएसग्गमणन्तगं ।

गण्ठियसत्ताईयं अन्तो सिद्धाण आउयं ॥

सव्वजीवाण कम्म तु, संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥

उत्तराध्ययन अ० ३३ गाथा १७-१८

सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ॥२५॥

अतोऽन्यत्पापम् ॥२६॥

सायावेदणिज्ज तिरिआउए मणुस्साउए देवाउए, सुहणामस्सणं उच्चागोत्तस्स असाया वेदणिज्ज इत्यादि ।

प्रज्ञापना सूत्र पद २३ उ० १

एगे पुण्णे एगे पावे । स्थानांग स्थान १ सूत्र १६

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये अष्टमोऽध्यायः समाप्तः ।

नवमोऽध्यायः

आस्रवनिरोधः संवरः ॥१॥

निरुद्धासवे (संवरो)।

एगे * संवरे।

स्थाना० स्था० १ उत्तराध्ययन अ० २६ सूत्र १०

स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः ॥२॥

तपसा निर्जरा च ॥३॥

* संव्रियते कर्मकारणं प्राणातिपातादि निरुध्यते येन परिणामेन स संवरः आश्रवनिरोध इत्यर्थः। इति वृत्तिकारः ॥

समई गुत्ती धम्मो अणुपेह परीसहा चरित्त च ।
सत्तावन्न भेया पणतिगभेयाइ सवरणे ॥
स्थानाग वृत्ति स्थान १

एव तु सजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसचियं कम्म, तवसा निज्जरिज्जइ ॥
उत्तराध्ययन अ० ३० गाथा ६

सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ॥४॥

गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ।
उत्तराध्ययन अ० २४ गाथा २६

ईर्याभाषैषणाऽऽदाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥५॥

पच समिईओ पण्णत्ता, त जहा—ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभडमत्तनिक्खे-

वणासमिई उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठा-
वणियासमिई। समवायांग समवाय ५

उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥६॥

दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तं जहा—१ खंती, २ मुत्ती, ३ अज्जवे, ४ मद्दवे ५ लाघवे, ६ सच्चे, ७ संजमे, ८ तवे ९ चियाए, १० बंभचेरवासे।

समवायांग समवाय १०

अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः ॥७

१ अणिच्चाणुप्पेहा, २ असरणुप्पेहा, ३ एग-त्ताणुप्पेहा, ४ संसाराणुप्पेहा ।

स्थानांग स्थान ४ उ० १ सू० २४७

अण्णत्ते [अणुप्पेहा] ५—अन्ने खलु णाति-संजोगा अन्नो अहमंसि । असुइअणुप्पेहा ६ ।

सूत्रकृतांग श्रुतस्कंध २ अ० १ सू० १३

इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभवं ।
असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥

उत्तराध्ययन अ० १९ गाथा १२

आसवाणुप्पेहा ७ ।

स्थानांग स्थान ४ उ० १ सू० २४७

संवरे [अणुप्पेहा] ८—

जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी ।
जा निस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥

उत्तराध्ययन अध्ययन २३ गाथा ७१

णिज्जरे [अणुप्पेहा] ९ । स्थानांग स्थान १ सू० १६

लोगे [अणुप्पेहा] १० ।

स्थानांग स्थान ४ उ० ५

बोहिदुल्लहे [अणुप्पेहा] ११ ।

संबुज्झह किं न बुज्झह संबोही खलु पेच्च दुल्लहा ।
णो हूवणमंति राइओ नो सुलभं पुणरावि जीवियं ॥

सूत्रकृतांग प्रथम श्रुतस्कन्ध गाथा १

धम्मे [अणुप्पेहा] १२—
उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा ।

उत्तराध्ययन अ० १० गाथा १८

मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ॥८॥

नो विनिहन्नेज्जा ।

उत्तराध्ययन अ० २ प्रथम पाठ

सम्मं सहमाणस्स णिज्जरा कज्जति ।

स्थानांग स्थान ५ उ० १ सू० ४०६

क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाचनाऽलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाऽज्ञानाऽदर्शनानि ॥९॥

बावीसं परिसहा पण्णत्ता, तं जहा—१ दिगिंछापरीसहे, २ पिवासापरीसहे, ३ सीतपरीसहे, ४ उसिणपरीसहे, ५ दसमसगपरीसहे, ६ अचेलपरीसहे, ७ अरइपरीसहे, ८ इत्थीपरीसहे, ९ चरिआपरीसहे, १० निसीहियापरीसहे, ११ सिज्जापरीसहे, १२ अक्कोसपरीसहे, १३ वहपरीसहे, १४ जायणापरीसहे, १५ अलाभपरीसहे, १६ रोगपरीसहे, १७ तणफासपरीसहे, १८ जल्लपरीसहे, १९ सक्कारपुरक्कारपरीसहे, २० पण्णापरीसहे, २१ अण्णाणपरीसहे, २२ दंसणपरीसहे ।

सूक्ष्मसाम्परायछद्मस्थवीतरागयो-श्चतुर्दश ॥१०॥

एकादश जिने ॥११॥

बादरसाम्पराये सर्वे ॥१२॥

ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥१३॥

दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ॥१४॥

चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्या-क्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः ॥१५॥

वेदनीये शेषाः ॥१६॥

एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नै-कोनविंशतेः ॥१७॥

नाणावरणिज्जे ण भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! दो परीसहा समोयरंति, तं जहा--पन्नापरीसहे नाणपरीसहे य। वेयणिज्जे ण भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एक्कारसपरीसहा समोयरंति, तंजहा–

पंचेव आणुपुव्वी, चरिया सेज्जा वहे य रोगे।
तणफास जल्लमेव य, एक्कारस वेदणिज्जंमि ॥ १ ॥

दंसणमोहणिज्जे ण भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एगे दंसणपरीसहे समोयरइ। चरित्तमोहणिज्जे ण भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! सत्तपरीसहा समोयरंति, तं जहा—

अरती अचेल इत्थी निसीहिया जायणा य अक्कोसे ।
सक्कारपुरक्कारे चरित्तमोहंमि सत्ते ते ॥१॥

अंतराइए णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समो-यरंति ? गोयमा ! एगे अलाभपरीसहे समोयरइ । सत्तविहबंधगस्स णं भंते ! कति परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता, वीसं पुण वेदेइ, जं समयं सीयपरीसहं वेदेति णो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ णो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरिया-परीसहं वेदेति णो तं समयं निसीहियापरीसहं वेदेति जं समयं निसीहियापरीसहं वेदेइ णो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ ।

अट्ठविहबंधगस्स णं भंते ! कतिपरीसहा पण्ण-त्ता ? गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता, तं जहा-छुहापरीसहे पिवासापरीसहे सीयप० दंसप०

मसगप० जाव अलाभप० एव अट्ठविहबधगस्स वि सत्तविहबधगस्स वि ।

छव्विहबधगस्स ण भते ! सरागछउमत्थस्स कति परीसहा पगणत्ता ? गोयमा ! चोद्दस परीसहा पगणत्ता । बारस पुण वेदेइ । ज समयं सीयपरीसह वेदेइ णो त समय उसिणपरीसह वेदेइ । ज समय उसिणपरीसह वेदेइ नो त समय सीयपरीसह वेदेइ । ज समय चरिय.परिसह वेदेइ णो त समय सेज्जापरीसह वेदेइ । ज समय सेज्जापरीसह वेदेति णो त समय चरियापरीसह वेदेइ ।

एक्कविहबधगस्स ण भते ! वीयरागछउमत्थस्स कति परिसहा पगणता ? गोयमा ! एव चेव जहेव छव्विहबधगस्स ण । एगविहबधगस्स ण भते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परिस्सहा पगणता ? गोयमा ! एकारस परीसहा पगणता, नव पुण वेदेइ, सेस जहा छव्विहबधगस्स ।

अबधगस्स ण भंते ! अजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एक्कारस्स परीसहा पण्णत्ता, नव पुण वेदेइ । जं समयं सीयपरीसहं वेदेति नो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ । जं समयं उसिणपरीसहं वेदेति नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ । जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेति । जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ । व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ८ उ० ८ सू० ३४३

सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसाम्पराययथाख्यातमिति चारित्रम् ॥१८॥

सामाइयत्थ पढमं, छेदोवट्ठावणं भवे वीयं ।
परिहारविसुद्धीयं, सुहुमं तह संपरायं च ॥ ३२ ॥

अकसायमहक्खाय, छउमत्थस्स जिणस्स वा ।
एव चयरित्तकर, चारित्त होइ आहिय ॥३३॥

उत्तराध्ययन अ० २८ गाथा ३२-३३

अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ॥ १९ ॥

बाहिरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, त जहा-अणसण ऊणोयरिया भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ । काय किलेसो पडिसलीणया वज्झो (तवो होई) ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्त्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ॥ २० ॥

अब्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, त जहा—

पायच्छित्त विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ झाण विउस्सग्गो ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

नवचतुर्दशपंचद्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥ २१ ॥

आलोचनाप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः २२

णवविधे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा-आलोअणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे विवेगारिहे विउसग्गारिहे तवारिहे छेदारिहे मूलारिहे अणवट्ठप्पारिहे ।

स्थानांग स्थान ६ सू० ६८८

ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ॥ २३ ॥

विणए सत्तविहे, पण्णत्ते तं जहा-णाणविणए

दंसणविणए चरित्तविणए मणविणए वइविणए कायविणए लोगोवयारविणए ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानाम् ॥ २४ ॥

वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते, तं जहा-आयरियवेआवच्चे उवज्झायवेआवच्चे सेहवेआवच्चे गिलाणवेआवच्चे तवस्सिवेआवच्चे थेरवेआवच्चे साहम्मिअवेआवच्चे कुलवेआवच्चे गणवेआवच्चे संघवेआवच्चे ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः ॥ २५ ॥

सज्झए पञ्चविहे पएणत्ते, तं जहा-वायणा पडि-पुच्छणा, परिअट्टणा अणुप्पेहा धम्मकहा।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ॥२६॥

विउसग्गे दुविहे पएणत्ते, त जहा-दव्वविउसग्गे य भावविउसग्गे य।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्त्तात् ॥२७॥

केवतिय काल अवट्ठियपारिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेण एक्क समय उक्कोसेण अन्तमुहुत्तं।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ६ सू० ७७०

अंतोमुहुत्तमित्त चित्तावत्थाणमेगवत्थुम्मि।
छउमत्थाण झाण जोगनिरोहो जिणाण तु॥

स्थानांगवृत्ति० स्थान ४ उ० १ सू० २४७

आर्त्तरौद्रधर्मशुक्लानि ॥२८॥

चत्तारि झाणा पराणता, तं जहा-अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

परे मोक्षहेतुः ॥२९॥

धम्मसुक्काइं झाणाइं झाणं तं तु बुहा वए ।

उत्तराध्ययन अ० ३० गाथा ३५

आर्त्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ॥३०॥

अट्टे झाणे चउव्विहे पराणत्ते, तं जहा-अमणुन्न संपयोगसंपउत्ते तस्स विप्पयोग सति समन्नागए यावि भवइ ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू०८०३

विपरीतं मनोज्ञस्य ॥३१॥

मणुन्नसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओग सति समण्णागते यावि भवति ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

वेदनायाश्च ॥३२॥

आयकसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओग सति समण्णागए यावि भवति ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

निदानञ्च ॥३३॥

परिजुसितकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओग सति समण्णागए यावि भवइ ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७सू० ८०३

तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् ॥३४

अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, भाएज्जा सुसमाहिये ।
धम्मसुक्काइं झाणाइं झाणं तं तु बुहावए ॥
उत्तराध्ययन अध्ययन ३० गाथा ३५

हिंसानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः ॥३५॥

रोद्दज्झाणे चउव्विहे पएणत्ते, तं जहा-हिंसाणुबंधी मोसाणुबंधी तेयाणुबंधी सारक्खणाणुबंधी ।
व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम् ॥३६॥

धम्मे झाणे चउव्विहे पएणत्ते, तं जहा-आणाविजए, अवायविजए, विवागविजए, संठाणविजए ।
व्याख्याप्रज्ञप्तिश० २५ उ० ७ सू० ८०३

शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥३७॥

सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य बायरसंपरायसरागचरित्तारिया य, उवसंतकसायवीयरायचरित्तारिया य खीणकसाय वीयरायचरित्तारिया य।

प्रज्ञापना सूत्र पद १ चारित्रार्यविषय

परे केवलिनः ॥३८॥

सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य।

प्रज्ञापनासूत्र पद १ चारित्रार्यविषय

पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्त्तीनि ॥३९॥

सुक्के झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–१ पुहुत्तवितक्के सवियारी, २ एगत्तवितक्के अवियारी,

३ सुहुमकिरिते अणियट्टी, ४ समुच्छिन्नकिरिए अप्पडिवाती ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

त्र्येकयोगकाययोगायोगानाम् ॥४०॥

सुहमसपरायसरागचरित्तारिया य बायरसपरायसरागचरित्तारिया य, उवसतकसायवीयरायचरित्तारिया य खीणकसायवीयरायचरित्तारिया य ।

सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य ।

प्रज्ञापना सूत्र पद १ चारित्रार्यविषय

एकाश्रये सवितर्कविचारे पूर्वे ॥४१॥

अविचारं द्वितीयम् ॥ ४२ ॥

वितर्कः श्रुतम् ॥४३॥

विचारोऽर्थव्यञ्जनयोगसंक्रान्तिः॥४४

उप्पायट्ठितिभंगाइ पज्जयाणं जमेगदव्वंमि ।
नाणानयाणुसरणं पुव्वगयसुयाणुसारेणं ॥१॥
सवियारमत्थवंजणजोगंतरओ तयं पढमसुक्कं ।
होति पुहुत्तवियक्कं सवियारमरागभावस्स ॥२॥
जं पुण सुनिप्पकंपं निवायसरणप्पईवमिव चित्तं ।
उप्पायठिइभंगाइयाणमेगंमि पज्जाए ॥३॥
अवियारमत्थवंजणजोगंतरओ तयं बिइयसुक्कं ।
पुव्वगयसुयालंबणमेगत्तवियक्कमवियारं ॥४॥

स्थानांग सूत्र वृत्ति स्था० ४ उ० १ सू० २४७

सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽ-

संख्येयगुणनिर्जराः ॥४५॥

कम्मविसोहिमग्गणं पडुच्च चउदस जीवट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा- अविरयसम्मदिट्ठी विरयाविरए पमत्तसजए अप्पमत्तसजए निअट्टीबायरे अनिअट्टिबायरे सुहुमसपराए उवसामए वा खवए वा उवसंतमोहे खीणमोहे सजोगी केवली अजोगी केवली ।

समवायाग समवाय १४

पुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ॥४६॥

पंच णियठा पन्नत्ता, तं जहा-पुलाए बउसे कुसीले णियठे सिणाए ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ५ सू० ७५१

संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलेश्योपपादस्थानविकल्पतः साध्याः ॥४७॥

पडिसेवणा णाणे तित्थे लिंग-खेत्ते काल गइ सजम लेसा।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ५ सू० ७५१

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-सगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये

नवमोऽध्याय समाप्त ।

दशमोऽध्यायः

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम् ॥१॥

खीणमोहस्स णं अरहओ ततो कम्मंसा जुगवं खिज्जंति, तं जहा–नाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं अंतरातियं ।

स्थानांग स्थान ३ उ० ४ सू० २२६

तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठवीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ, पञ्चविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दंसणावरणिज्जं, पञ्चविहं अन्तराइयं, एए तिन्नि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ ।

उत्तराध्ययन अध्ययन २६ सू० ७१

बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्म विप्रमोक्षो मोक्षः ॥२॥

अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ।

उत्तराध्ययन अध्ययन २६ सू० ७२

औपशमिकादिभव्यत्वानाञ्च ॥३॥

नोभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए।

प्रज्ञापना पद १८

अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शन-सिद्धत्वेभ्यः ॥४॥

* खीणमोहे (केवलसम्मत्त) केवलणाणी,

---

* सिद्धा सम्मदिट्ठी (सिद्धाः सम्यग्दृष्टिः) प्रज्ञापना १६ सम्यक्त्व पद।

केवलदंसी सिद्धे ।

अनुयोगद्वारसूत्र षण्णामाधिकार सू० १२६

तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ॥५॥

अणुपुव्वेण अट्ठ कम्मपगडिओ खवेत्ता गगण-तलमुप्पइत्ता उप्पिं लोयग्गपतिट्ठाणा भवन्ति ।

ज्ञाताधर्मकथांग अध्ययन ६ सू० ६२

पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बंधच्छेदात्तथा-गतिपरिणामाच्च ॥६॥

आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपा-लाबुवदेरण्डबीजावदग्निशिखावच्च॥७॥

अत्थि णं भंते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ? हंता अत्थि, कहन्न भंते! अकम्मस्स गतीपण्णायति ?

गोयमा! निस्संगयाए निरंगणयाए गतिपरिणामेण बंधणछेयणयाए निरंधणयाए पुव्वपओगेण अकम्मस्स गती पन्नत्ता। कहन्न भंते! निस्संगयाए निरंगणयाए गइपरिणामेण बंधणछेयणयाए निरंधणयाए पुव्वप्पओगेण अकम्मस्स गती पन्नायति? से जहानामए, केई पुरिसे सुक्कं तुंबं निच्छिड्डं निरुवहयं आणुपुव्वीए परिकम्मेमाणे २ दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ २ अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं लिंपइ २ उण्हे दलयति भूतिं २ सुक्कं समाणं अत्थाहमतारमपोरसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवेणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुसंभारियत्ताए सलिलतलमतिवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवइ? हंता भवइ, अहे णं से तुंबे अट्ठण्हं मट्टियालेवेणं परिक्खएणं धरणितलमतिवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवइ? हंता भवइ, एवं खलु गोयमा! निस्संगयाए निरंगणयाए

गइपरिणामेण अकम्मस्स गई पन्नायति । कहन्न भंते ! बंधणछेदणयाए अकम्मस्स गई पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए—कलसिंबलियाइ वा मुग्गसिंबलियाइ वा मासंसिंबलियाइ वा सिंबलिसिंबलियाइ वा एरंडमिंजियाइ वा उण्हे दिन्ना सुक्का समाणी फुडित्ताणं एगंतमंत गच्छइ, एवं खलु गोयमा ! ०। कहन्न भंते ! निरंधणयाए अकम्मस्स गती ? गोयमा ! से जहानामए—धूमस्स इंधणविप्पमुक्कस्स उड्ढं वीससाए निव्वाघाएणं, गती पवत्तति, एवं खलु गोयमा ! ०। कहन्न भंते ! पुव्वपओगेणं अकम्मस्स गती पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए—कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुही निव्वाघाएणं गती पवत्तइ, एवं खलु गोयमा ! नीसंगयाए निरंगणयाए जाव पुव्वपओगेणं अकम्मस्स गति पण्णत्ता ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ७ उ० १ सू० २६५

धर्मास्तिकायाभावात् ॥८॥

चउहिं ठाणेहिं जीवाय पोग्गला य णो सचातेंति बहिया लोगता गमणताते, तं जहा—गतिअभावेण णिरुवग्गहताते लुक्खताते लोगाणुभावेणं।

स्थानांगस्थान ४ उ० ३ सू० ३३७

क्षेत्रकालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनान्तरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥९॥

खेत्तकालगईलिङ्गतित्थे चरित्ते।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ६ सू० ७५१

पत्तेयबुद्धसिद्धा बुद्धबोहियसिद्धा।

नन्दिसूत्र केवलज्ञानाधिकार

नाणे खेत्त अन्तर अप्पाबहुय।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ६ सू० ७५१

सिद्धाणोगाहणा संख्या ।

उत्तराध्ययन अध्ययन ३६ गाथा ५३

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
दशमोऽध्याय' समाप्त ।

गुरुप्पसत्थी

नायसुओ वद्धमाणो नायसुओ महामुणी ।
लोगे तित्थयरो आसी अपच्छिमो सिवकरो ॥१॥

सतित्थे ठविओ तेण पढमो अणुसासगो ।
सुहम्मो गणहरो नाम तेअसी समणाधिओ ॥२॥

तत्तो पवट्टिओ गच्छो सोहम्मो नाम विस्सुओ ।
परम्पराए तत्थासी सूरी चामरसिंघओ ॥३॥

तस्स सतस्स दंतस्स मोतीरामाभिहो मुणी ।
होत्थ सीसो महापन्नो गणिपयविभूसिओ ॥४॥

तस्स पट्टे महाथेरो गणावच्छेअगो गुणी ।
गणपतिसन्निओ साहू सामण्णगुणसोहिओ ॥५॥

तस्स सीसो गुरुभत्तो सो जयरामदासओ ।
गणावच्छेअगो अत्थि समो मुत्तो व्व सासणे ॥६॥

तस्स सीसो सब्बसंधो पवट्टगपयंकिओ ।
सालिग्गामो महाभिक्खू पावयणी धुरंधरो ॥७॥
तस्सतेवासिणा भिक्खुअप्पारामेण निम्मिओ ।
उवज्झायपयकेण तत्तत्थस्स समन्नओ ॥८॥
तत्तत्थमूलसुत्तस्स ज बीअ उवलब्भइ ।
जिणागमेसु तं सव्व सखेवेणेत्थ दंसिअ ॥६॥
इगुणवीसानवइ विक्कमवासेसु निम्मिओ एस ।
दिल्लीनामयनयरे मुक्ख सत्थस्स य समन्नयो ॥१०॥

परिशिष्ट नं० १

तदिन्द्रियानिन्द्रियानिमित्तम् ॥१४॥

तत्र 'नोइंदियअत्थावग्गहो' त्ति नोइन्द्रिय मनः, तच्च द्विधा द्रव्यरूप भावरूप च, तत्र मनःपर्याप्तिनाम-कर्मोदयतो यत् मन प्रायोग्यवर्गणादलिकमादाय मनस्त्वन परिणामित तद्द्रव्यरूप मनः, तथा चाह चूर्णिकृत्-' मणपज्जत्तिनामकम्मोदयओ तज्जोग्गे मणोदव्वे घेत्तु मणत्तेण परिणामिया दव्वा दव्व-मणो भगणइ ।" तथा द्रव्यमनोऽवष्टम्भेन जीवस्य यो मननपरिणामः स भावमनः, तथा चाह चूर्णि कार एव—"जीवो पुण मणणपरिणामगिरियापन्नो

भावमनो, किं भणियं होइ ?—मणदव्वालंबणो जीवस्स मणणवावारो भावमणो भण्णइ" तत्रेह भावमनसा प्रयोजनं, तद्ग्रहणे ह्यवश्यं द्रव्यमनसोऽपि ग्रहणं भवति, द्रव्यमनोऽन्तरेण भावमनसोऽसम्भवात्, भावमनो विनापि च द्रव्यमनो भवति, यथा भवस्थकेवलिनः, तत उच्यते—भावमनसेह प्रयोजनं, तत्र नोइन्द्रियेण—भावमनसाऽर्थावग्रहो द्रव्येन्द्रियव्यापारनिरपेक्षो घटाद्यर्थस्वरूपपरिभावनाभिमुखः प्रथममेकसामयिको रूपाद्यर्थाकारादिविशेषचिन्ताविकलोऽनिर्देश्यसामान्यमात्रचिन्तात्मको बोधो नोइन्द्रियार्थावग्रहः ।

नन्दिसूत्र वृत्ति मतिज्ञान वर्णन

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥२०॥

अगबाहिर दुविह पराणत्त, तं जहा—आवस्सय च आवस्सयवइरित्त च । से किं त आवस्सय ? आवस्सय छव्विह पराणत्त, त जहा--सामाइय चउवीसत्थवो वदणय पडिक्कमण काउस्सग्गो पच्चक्खाण, सेत्त आवस्सय । से किं त आवस्सयवइरित्त ? आवस्सयवइरित्त दुविह पराणत्त, त जहा कालिअ च उक्कालिअ च ! से किं त उक्कालिअ ? उक्कालिअ अणेगविह पराणत्त, त जहा--दसवेआलिय कप्पिआकप्पिअ चुल्लकप्पसुअ महाकप्पसुअ उववाइअ रायपसेणिअ जीवाभिगमो पराणवणा महापराणवणा पमायप्पमाय नन्दी अणुओगदाराइ देविंदत्थओ तदुलवेआलिअ चदाविज्झय सूरपराणत्ति पोरिसिमडल मडलपवेसो विज्जाचरणविणिच्छओ गणिविज्जा झाणविभत्ती मरणविभत्ती आयविसोही वीयरागसुअ संलेहणासुअ विहारकप्पो चरणविही आउरपच्चक्खाण महा-

पच्चक्खाणं एवमाइ, से तं उक्कालिअं । से किं तं कालिअं ? कालिअं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा-- उत्तरज्झयणाइं दसाओ कप्पो ववहारो निसीहं महानिसीहं इसिभासिआइं जंबूदीवपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती चंदपन्नत्ती खुड्डिआ विमाणपविभत्ती महल्लिआ विमाणपविभत्ती अंगचूलिआ वग्गचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए नागपरिआवणिआओ निरयावलिआओ कप्पिआओ कप्पवडिंसिआओ पुप्फिआओ पुप्फचूलिआओ वण्हीदसाओ, एवमाइयाइं चउरासीइं पइन्नगसहस्साइं भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स तहा संखिज्जाइं पइन्नगसहस्साइं मज्झिमगाणं जिणवराणं चोद्दसपइन्नगसहस्साणि भगवओ वद्धमाणसामिस्स, अहवा जस्स जत्तिआ सीसा

उप्पत्तिआए वेणइआए कम्मियाए पारिणामिआए चउव्विहाए बुद्धिए उववेआ तस्स तत्तिआइं पइण्णगसहस्साइ, पत्तेअबुद्धावि तत्तिआ चेव, सेत्त कालिअ, सेत्त आवस्सयवइरित्त, से त अणगपविट्ठ ।

नन्दी सूत्र ४४

संज्ञिनः समनस्काः ॥२४॥

जीवा ण भते ! किं सरणी असरणी नोसरणी-नोअसरणी ? गोयमा ! जीवा सरणीवि असरणीवि नोसरणीनोअसरणीवि । नेरइयाण पुच्छा ? गोयमा ! नेरइया सरणावि असरणीवि नो नोसरणी-नोअसरणी, एव असुरकुमारा जाव थणियकुमारा । पुढविकाइयाण पृच्छा ? गोयमा ! नो सरणी असरणी, नो नोसरणी नोअसरणी । एव बेइदियतेइदियचउरिंदियावि । मणुसा जहा जीवा,

पचिंदियतिरिक्खजोणिया वाणमंतरा य जहा नेर-इया, जोतिसियवेमाणिया सण्णी नो असण्णी नो नोसण्णीनोअसण्णी । सिद्धाणपुच्छा ? गोयमा ! नो सण्णी नो असण्णी नोसण्णीनोअसण्णी । नेर-इयतिरियमणुया य वणयरगसुरा इ सण्णीऽस-ण्णी य । विगलिंदिया असण्णी जोतिसवेमाणिया सण्णी । पण्णवणाए सण्णीपयं समत्त ।

प्रज्ञापना ३१ संज्ञापद सूत्र ३१५

परिशिष्ट नं० १ (शेषभाग)

निम्नलिखित पाठ पृष्ठ १७६ अ० ८ सूत्र २४ के साथ सम्बन्ध रखता है

कतिरण भंते कम्म पगडीओ पण्णत्ताओ, गोयमा! अट्ठ कम्म पगडिओ पण्णत्ताओ जहा—णाणावरणिज्ज जाव अंतराइयं। नेरइयाणं, भते ? कइ कम्म पगडीओ पण्णत्ताओ गोयमा-अट्ठ एवं सव्वजीवाणं अट्ठ कम्म पगडीओ ठावेयव्वाओ जाव वेमाणियाण णाणावरणिज्जस्स णं भते कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता गोयमा अणंता अविभाग-पलिच्छेदा पण्णत्ता नेरइयाण भते णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवितया अविभाग पलिच्छेदा पण्णत्ता गोयमा अणता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता एव सव्व जीवाणं जाव वेमाणियाणं पुच्छा गोयमा

अणंता अविभागपलिच्छेदा पएणत्ता एव जहा नाणा वरणिज्जस्स अविभाग पलिच्छेदा भणिया तहा अट्ठएहवि कम्म पगडीण भाणियव्वा जाव वेमाणि-याण अतराइयस्स एगमेगस्स ण भते जीवस्स एगमेगे जीवपएसे णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं अविभाग पलिच्छेदेहिं आवेढिए परिवे-ढिए सिया गोयमा सिए आवेढिय परिवेढिए सिय नो आवेढिए परिवेढिए जइ आवेढिय परिवेढिए नियमा अणतेहिं एगमेगस्सण भते नेरइयस्स एग-मेगे जीवपएसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइ-एहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढिए परिवेढिते गोयमा नियमा अणतेहिं जहा नेरइयस्स एव जाव वेमाणियस्स नवर मणुसस्स जहा जीवस्स ! एग मेगस्स ण ! भते जीवस्स ! एगमेगे ! जीवपएसे ! दरिसणावरणिज्जिस्स ! कम्मस्स ! केवतिएहिं ! एवं ! जहेव ! नाणावरणिज्जस्स ! तहेव दंडगो !

भाणियव्वो ! जाव ! वेमाणियस्स एव ! जाव ! अतराइयस्स ! भाणियव्व नवर वेयणिज्जस्स ! आउयस्स ! णामस्स गोयस्स ! एएसि ! चउएह-वि ! कम्माण मणूसस्स जहा ! नेरइयस्स ! तहा ! भाणियव्व ! सेसतं ! चेव।

व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक ८ उद्देश १० सू० ३५६

निम्नलिखित पाठ पृष्ठ २०० अध्याय ६ सूत्र ४७ के साथ सम्बन्ध रखता है।

१ पएणवण २ वेद ३ रागे ४ कप्प ५ चरित्त ६ पडिसेवणा ७ णाणे ८ तित्थे ६ लिंग १० सरीरे ११ खेत्ते १२ काल १३ गइ १४ संजम १५ निगासे ॥१॥ १६ जोगु १७ वयोग १८ कसाए १६ लेसा २० परिणाम २१ बध २२ वेदेय २३ कम्मोदीरण २४ उवसपजहन्न २५ सन्नाय २६ आहारे ॥२॥ २७ भव २८ आगरिसे २६ काल ३० आहारे ३१ समुग्घाय

३२ खेत्त ३३ फुसणाय ३४ भावे ३५ परिणामे ३६ विय अप्पाबहुअ (य) ३७ नियठाण ॥३॥

निम्नलिखित पाठ पृष्ठ ५६ तृतीयोऽध्याय प्रथम सूत्र के साथ सम्बन्ध रखता है।

अहोलोगेण सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ। सत्त-घणोदहीओ पण्णत्ताओ सत्त घणवायाओ प०। सत्त तणुवाया प०। सत्त उवासतरा। प० एए सुण सत्तसु उवासतरेसु सत्त तणुवाया पइट्ठिया। एएसुण सत्तसु तणुवाएसु सत्त घण वाया पइट्ठिया, सत्तसु घणवाएसु सत्त घणोदही पइट्ठिया, एएसुण सत्तसु घणोदहीसु पिंडलग पिहुल सठाण सठियाओ सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ तं-जहा पढमा जाव सत्तमा। एयासिण सत्तण्ह पुढ-वीण सत्तणाम धेज्जा पण्णत्ता त जहा घम्मा वसा सेला अजणा रिट्ठा मघा माघवई। एयासिण सत्तण्हं पुढवीण सत्त गोत्ता पण्णत्ता त जहा रयणप्पभा

सक्करप्पभा वालुयप्पभा पंकप्पभा धूमप्पभा तमा तमतमा ।

ठाणांग सूत्र, ठाणा ७

निम्नलिखित पाठ पहिला अध्याय पृष्ठ २८ की अन्तिम पंक्तियों के साथ सम्बन्ध रखता है ।

अविसेसिआ मइ मइ नाणंच । मइ अन्नाणं च ॥ विसेसिआ सम्मदिट्ठिस्स मई । मइ नाण । मिच्छादिट्ठिस्स । मइ मइ अन्नाण अविसेसिअ सुयं सुय-नाण च सुय अन्नाण च विसेसिअं सुय सम्मदिट्ठिस्स सुय सुअनाण मिच्छादिट्ठिस्स सुय सुय अन्नाणं ॥

नन्दिसूत्र सूत्र २५ ॥

निम्नलिखित पाठ अध्याय २ सूत्र ५३ पृ० ५७ से सम्बन्ध रखता है ।

नेरइयाणं भते ! कइया भागावसेसाउया पर-भविआउय पकरेंति ? गोयमा ! नियमा छम्मासा-

वसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ? एव असुर-कुमाराचि जाव थणियकुमारा ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! कइया भागा वसेसाउया परभवियाउय पक-रेंति ? गोयमा ! पुढविकाइया दुविहा पराणत्ता ? त जहा सोवक्कम्माउयाय निरुवक्कम्माउयाय, तत्थणं जेते निरुवक्कमाउया ते नियमा तिभागा वसेसाउया परभवियाउय पकरेंति ॥ तत्थण जेते सोवक्कमा उया तेण सिय तिभाग बसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, सियतिभागतिभागावसेसाउय परभ-वियाउय पकरेंति, सियतिभागतिभागतिभागा-वसेसाउया परभवियाउय पकरेंति, आउतेउवाउ वणस्सइ काइयाण बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाणवि एव चेव ॥

पंचेंदिय तिरिक्खजोणियाण भंते ! कइभागा वसेसाउया परभवियाउय पकरेंति, ? गोयमा ! पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पराणत्ता तं जहा

सखिज्ज वासाउयाय असखिज्जवासाउयाय ॥ तत्थण जेते असखेज्जवासाउया ते नियमा छम्मासावसेसा-उया परभवियाउयं पकरेंति तत्थण जेते सखिज्ज वासाउयते दुविहा पराणत्ता तं जहा सोवक्कमाउ आय निरुवक्कमाउआय तत्थण जेते निरुवक्कमाउ-अयाय ते नियमा तिभागवसेसाउया परभवियाउय पकरेंति ॥ तत्थण तेते सोवक्कमाउया तेण सियति भागावसेसाउया परभवियाउय पकरेंति, सिय ति-भागासियतिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउय पकरेंति, सियतिभागतिभागतिभागावसेसाउया पर-भवियाउय पकरेंति ॥ एव मणुस्साવि वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया जहा नेरया ॥

पन्नवणा श्वासोश्वास पद ६ सूत्र २४ ॥

तओ अहाउय पालेंति त जहा अरहता चक्क-वट्टी बलदेव वासुदेवा ॥

ठाणाग ३ उ० १ सू० ३४

जीवाणं भंते ! किं सोवक्कमाउया णिरुवक्कमाउया ? गोयमा ! जीवा सोवक्कमाउयावि णिरुवक्कमाउयावि ॥१॥ णेरइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! णेरइया णो सोवक्कमाउया, णिरुवक्कमाउयावि । एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवी काइया जहा जीवा । एव जाव मणुस्सा । वाणमंतर जोइस वेमाणिया जहा णेरइया ॥२॥

भगवती सूत्र शतक २० उ० १०

परिशिष्ट नं० २

त० अ० ६ सूत्र ७ से इस पाठ का सबध है।

जीवेण भंते ! अधिगरणी अधिगरण ?

गोयमा ! जीवे अधिगरणी वि अधिगरणपि। से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जीवे अधिगरणीवि अधिगरणंपि ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेण जाव अधिगरणपि। णेरइएण भंते ! किं अधिगरणी अधिगरण ? गोयमा ! अधिगरणीवि अधिगरणपि ! एव जहेव जीवे तहेव णेरइएवि। एवं णिरतर जाव वेमाणिए। जीवेण भते ! किं साहिगरणी णिरहिगरणी ? गोयमा ! साहिगरणी णो णिरहिगरणी। से केणट्ठेणं पुच्छा ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेण जाव णो णिरहिगरणी। एवं जाव वेमाणिए ! जीवेण भंते ? किं

आयाहिगरणी पराहिगरणी तदुभयाहिगरणी ? गोयमा ! आयाहिगरणी वि पराहिगरणी वि तदु-भया हिगरणीवि ! से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जाव तदुभयाहिगरणीवि । गोयमा ! अविरति पडुच्च से तेणट्ठेण जाव तदुभयाहिगरणीवि । एव जाव वेमाणिए । जीवाण भते । अधिगरणे किं आयप्प-ओगणिव्वत्तिए परप्पओगणिव्वत्तिए तदुभयप्प-ओगणिव्वत्तिए ? गोयमा ! आयप्पओगणिव्वत्तिए वि परप्पओगणि व्वत्तिए वि तदुभयप्पओगणि व्वत्तिए वि । से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! अविरति पडुच्च । से तेणट्ठेण जाव तदु भयप्पओगणिव्वत्तिए वि एव जाव वेमाणियाण । कइण भते ! सरीरगा पराणत्ता ? गोयमा । पच सरीरगा पराणत्ता—त जहा ओरालिए जाव कम्मए । कइण भते ! इदिया पराणत्ता ? गोयमा पच इदिया पराणत्ता—त जहा सोइदिय जाव

फासिन्दिए । कइएा भंते । जोए पएणत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोए पएणत्ते—तं जहा मणजोए वयजोए कायजोए । जीवेण भंते ! ओरालियसरीरं णिव्वत्तेमाणे किं-अधिगरणी अधिगरणं ? गोयमा ! अधिगरणी अधिगरणंपि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अधिगरणी वि अधिगरणंपि ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च । से तेणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि । पुढवी काइएण भंते ! ओरालियसरीरं णिव्वत्ते माणे किं अधिगरणी अधिगरणं ? एवं चेव । एवं जाव मणुस्से । एवं वेउव्वियसरीरं पि णवरं जस्स अत्थि । जीवेण भंते ! आहारगसरीरं णिव्वत्ते-माणे किं अधिगरणी पुच्छा ? गोयमा ! अधि-गरणीवि अधिगरणंपि । से केणट्ठेणं जाव अधि-गरणंपि ? गोयमा ! पमादं पडुच्च ! से तेणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि । एवं मणुस्सेवि । तेया सरीरं जहा ओरालियं । णवरं सव्व जीवाणं भाणियव्वं । एवं

कम्मगसरीरवि । "जीवेणं भंते" सोइंदियं णि व्वत्तेमाणे किं—अधिगरणी अधिगरणं ? एवं जहेव ओरालियसरीर तहेव सोइंदियंपि भाणि यव्व । णवर जस्स अत्थि सोइंदिय । एव चक्खिं- दिय—घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदिया णवि नवर जाणियव्व जस्स जं अत्थि । जीवेणं भंते मणजोग णिव्वत्तेमाणे किं अधिगरणी अधि- गरण ? एव जहेव सोइंदिय, तहेव णिरवसेस, वइजोगो एव चेव । णवर एगिंदियवज्जाण । एव कायजोगो वि णवर सव्वजीवाण । जाव वेमा- णिए । सेव भंते भंतेत्ति ॥

व्याख्याप्रज्ञप्ति, शतक १६ उद्देश्य १

त० अ० ६ सूत्र ६ से इस पाठ का सम्बन्ध है ।

जेण णिग्गंथो वा जाव पडिग्गहेत्ता गुणुप्पायण हेउं अण्णदव्वेण सद्धिं संजोएत्ता आहारमाहरेइ एस ण गोयमा ! संजोयणा दोसदुट्ठे पाणभोयणे

एयण गोयमा ! सइंगालस्स सधूमस्स संजोयणा दोसदुट्ठस्स पाणभोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ! अह भंते ! वीइंगालस्स वीयधूमस्स सजोयणा दोसविप्पमुक्कस्स पाणभोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ! गोयमा ! जेण णिग्गंथे वा जाव पडिग्गहेत्ता असमुच्छिए जाव आहारेइ ! एसण गोयमा ! वीइंगाले पाणभोयणे ! जेण निग्गंथे वा जाव पडिग्गहेत्ता नो महया अप्पत्तिय जाव आहारेइ, एसणं गोयमा ! वीयधूमे पाणभायणे जेण निग्गंथे वा जाव पडिग्गहेत्ता जहा लद्ध तहा आहारमाहारेइ एसण गोयमा ! सजोयण दोस विप्पमुक्के पाणभोयणे एसण गोयमा वीइंगालस्स वीयधूमस्स सजोयणादोस विप्पमुक्कस्स पाणभोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥

(व्याख्याप्रज्ञति शतक ७ उद्देश्य १)

न विता अहमेव लुप्पए लुप्पंति लोगंसि

पाणिणो एवं सहि एहि पासए अनिहे से पुट्ठे हियासए ॥

—सूयग० अ० २ उ० १ गा० १३

त० सूत्र अ० ४ सूत्र ११ से इस पाठ का सम्बन्ध है

पिसायभूया जक्खा य रक्खसा किन्नरा किं पुरिसा।
महोरगा य गंधव्वा, अट्ठ विहा वाणमंतरा ॥

उत्तराध्ययन, अध्य० ३६ । २०६

त० अ० ६ सू० ६ से इस पाठ का सम्बन्ध है ।

संजोयणाहिगरण किरिया य निव्वतणाहिगरण किरिया य ।

—व्याख्या० प्र० शतक ३ उ० २

ओहोवहोवग्गहियं भंडग दुविह मुणी ।
गिण्हतो निक्खिवंतो वा, पउजेज्ज इमं विहिं ॥

—उत्तराध्ययन अ० २४ सू० १३

संरम्भ समारम्भे, आरंभे य तहेव य ।
मण पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जय जई ॥२१॥

संरम्भ—समारम्भे, आरंभे य तहेव य ।
वयं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई ॥२३॥
संरम्भ—समारम्भे, आरंभे य तहेव य ।
कायं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई ॥२५॥

—उत्तराध्ययन अध्य० २५

तत्त्वार्थसूत्र अ० ७ सूत्र १४, १५ से इन पाठों का सम्बन्ध है

बितियं च अलियं वयणं ।

—प्रश्न व्या० द्वितीय अधर्मद्वार

तइयं च अदत्ता दाणं ।

—प्रश्न व्या० तृतीय अधर्मद्वार

तत्त्वार्थ सूत्र अ० ७ सूत्र १४-१५-१६ से इस पाठ का सम्बन्ध है ।

तस्स य णामाणि गोरणाणि होंति तीसं तं जहा—अलियं १ सढं २ अणज्जं ३ मायामोसो ४ असंतकं ५ कूडं कवडमवत्थुगं च ६ निरत्थयमवत्थयं च ७ विद्देसं गरहणिज्जं ८ अणुज्जुकं ९

कक्कणाय १० वंचणाय ११ मिच्छा पच्छा कड च १२ सातीउ १३ उच्छन्न १४ उक्कूल च १५ अह १६ अब्भक्खाणं च १७ किब्बिस १८ वलय १९ गहण च २० मम्मण च २१ नूम २२ नियथी २३ अप्पच्च ओ २४ असमओ २५ असच्च सधत्तण २६ विवक्खो २७ अवहीय २८ उवहि असुद्ध २९ अवलोवोत्ति ३० अवियतस्स एयाणि एवमाईणि नामधेज्जाणि होंति तीस सावज्जस्स अलियस्स वइ जोगस्स अणेगाइ ॥ प्रश्न व्याकरण सूत्र अ० २ सू० ६ ।

तस्स य णामाणि गोन्नाणि होंति तीस त जहा चोरिक्क १ परहड २ अदत्त ३ कुरि कड ४ पर लाभो ५ असजमो ६ परधणमि गेही ७ लोलिक्कं ८ तक्करत्तणति य ९ अवहारो १० हत्थलहुत्तणं ११ पावकम्मकरण १२ ते णिक्क १३ हरणविप्पणासो १४ आदियणा १५ लुपणा धणाणं १६ अप्पच्चयो १७ अवीलो १८ अक्खेवो १९ खेवो २०

घिक्खेवो २१ कूडया २२ कुलमसी २३ य कंखा २४ लालप्पणपत्थाण य २५ आससणाय वसणं २६ इच्छामुच्छा य २७ तगहागेहि २८ नियडिकम्म २९ अपरच्छति विय ३० तस्स पयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीस अदिन्नादाणस्स पाव कलिकलुसकम्मबहुलस्स अणेगाइ ॥ प्रश्न० अ० ३ सू० १० ॥ तस्स य णामाणि गोन्नाणि इमाणि होंति तीस त जहा अबभ १ मेहुण २ चरत ३ससग्गि ४ सेवणाधिकारो ५ सकप्पो ६ बाहण पदाणं ७ दप्पो ८ मोहो ९ मणसखेवो १० अणिग्गहो ११ वुग्गहो १२ विघाओ १३ विभगो १४ बिब्भमो १५ अधम्मो १६ असीलया १७ गामधम्मतित्ती १८ रती १९ रागचिंता २० कामभोगमारो २१ वेरं २२ रहस्स २३ गुज्झं २४ बहुमाणो २५ बभचेरविग्घो २६ वावत्ति २७ विराहणा २८ पसंगो २९ कामगुणो ३० त्ति विय तस्स एयाणि एवमादीणि नाम

घेज्जाणि होंति तीस।

—प्रश्न व्याकरण सूत्र अ० ४ सू० १४

त० अ० ३ सू० २७-२८ से इस पाठ का सम्बन्ध है

कइण भंते। कम्म भूमीओ पण्णत्ताओ? गोयमा! पण्णरस कम्मभूमिओ पण्णत्ताओ, त जहा--पंच भरहाइ पंच एरवयाइ पंच महाविदेहाइं। कइण भंते! अकम्म भूमिओ पण्णत्ताओ गोयमा! तीस अकम्म भूमिओ पण्णत्ताओ! त जहा—पंच हेमवयाइ, पंच हेरण्णवयाइ, पंच हरिवासाइ, पंचरम्मग वासाइं, पंच देवकुराइ, पंच उत्तरकुराइ। एयासु ण भंते? तीसासु अकम्म भूमिसु अत्थि उस्सप्पिणीति वा ओसप्पिणीति वा? णो इणट्ठे समट्ठे। एएसु णं भंते! पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु अत्थि उस्सप्पिणीति वा ओसप्पिणीति वा हंता अत्थि। एएसुण पंचसु महाविदेहेसु णेवत्थि उस्सप्पिणीति वा ओसप्पि-

णीति वा अवट्ठिएण तत्थ काले पण्णत्ते समणा-उसो !

—व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र शतक २० उद्देश्य ८

त० अ०७ सूत्र १३ से इस पाठ का सम्बन्ध है—

जीवाण भंते ! किं आयारंभा, परारंभा, तदुभयारंभा, अणारंभा ? गोयमा ! अत्थेगइया जीवा आयारंभावि, परारंभावि, तदुभयारंभावि, णो अणारंभा, अत्थे गइया जीवा णो आयारंभा, णो परारंभा, णो तदुभया रंभा, अणारंभा। से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्च० ? अत्थेगइआ जीवा आयारंभावि, एवं पडिउच्चारेयव्वं । गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता तं जहा—संसार समावण्णगाय, असंसार समा पण्णगाय । तत्थण जे ते असंसारसमावण्ण-गाय तेणं सिद्धा। सिद्धा ण णो आयारंभा जाव अणारंभा । तत्थणं जे ते संसार समावण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता तं जहा—संजयाय असंजयाय

तत्थण जे ते संजया ते दुविहा पएणत्ता त जहा—पमत्त संजया य अपमत्तसंजयाय। तत्थण जे ते अपमत्तसंजया तेण णो आयारंभा, णो परारंभा जाव अणारंभा। तत्थण जे ते पमत्तसंजया ते सुह जोग पडुच्च णो आयारंभा, णो परारंभा, जाव अणारंभा। असुह जोग पडुच्च आयारंभावि जाव णो अणारंभा। तत्थण जे ते असंजया ते अविरतिं पडुच्च आयारंभावि जाव णो अणारंभा। से तेणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ अत्थेगइया जीवा जाव अणारंभा।

त० अ० ६ सू० ५ से इस पाठ का सम्बन्ध है—

दो किरियाओ पन्नताओ त जहा—जीव किरिया चेव अजीवकिरिया चेव! जीवकिरिया दुविहा पन्नत्ता त जहा—सम्मत्तकिरिया चेव मिच्छत्त किरिया चेव २, अजीव किरिया दुविहा पन्नत्ता त०—इरियवहिया चेव संपराइगा चेव ३,

दो किरियाओ प० त० काइया चेव अहिगरणिया चेव ४, काइया किरिया दुविहा पन्नत्ता तं० अणुवरय कायकिरिया चेव दुप्पउत्तकाय किरिया चेव ५, अहिकरणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता त० सयोजणाधिकरणिया चेव णिव्वत्तणाधिकरणिया चेव ६, दो किरिया ओ प० त० पाउसिया चेव पारियावणिया चेव ७, पाउसिया किरिया दुविहा प० त० जीवपाउसिया चेव अजीवपाउसिया चेव ८, पारियावणिया किरिआ दुविहा प० त० सहत्थ पारियावणिया चेव परहत्थ पारियावणिया चेव ९, दो किरियाओ प० तं० पाणातिवाय किरिया चेव अपच्चक्खाण किरिया चेव १०, पाणातिवाय किरिया दुविहा प० त० सहत्थ पाणातिवाय किरिया चेव परहत्थ पाणातिवाय किरिया चेव ११, अपच्चक्खाण किरिया दुविहा प० त० जीव अपच्चक्खाण

किरिया चेव अजीवअपच्चक्खाण किरियाचेव १२, दो किरियाओ पं० तं० आरंभिया चेव परिग्गहिया चेव १३, आरम्भिया किरिया दुविहा प०त० जीव आरंभिया चेव अजीवआरम्भिया चेव १४, एव परिग्गहियावि १५, दो किरियाओ प० तं० माया वत्तिआ चेव मिच्छादंसणवत्तिया चेव १६, मायावत्तिया किरिया दुविहा प० त० आय भाववंकणता चेव परभाववकणता चेव १७, मिच्छा दंसणवत्तिया किरिया दुविहा प० त० ऊणाइरित्त मिच्छादंसणवत्तिया चेव, तव्वइरित्तमिच्छा दसण वत्तिया चेव १८, दो किरिया ओ प० त० दिट्ठिया चेव पुट्ठिया चंव १६, दिट्ठिया किरिया दुविहा प० त० जीवदिट्ठिया चेव अजीवदिट्ठिया चेव २०, एव पुट्ठियावि २१, दो किरियाओ पं० तं० पाडुच्चिया चेव सामतोवणीवाइया चेव २२, पाडुच्चिया किरिया दुविहा प० त० जीवपाडुच्चिया

चेव अजीवपाडुच्चिया चेव २३, एव सामतोवणि वाइयावि २४, दो किरियाओ पं० त० साहत्थिया चेव णेसत्थिया चेव २५, साहत्थिया किरिया दुविहा प० तं० जीवसाहत्थिया चेव अजीवसाहत्थिया चेव २६, एव णेसत्थियावि २७, दो किरिया ओ प० त० आणवणिया चेव वेयारणिया चेव २८, जहेव णेसत्थियाओ २९-३०, दो किरिया ओ प० त० अणाभोगवत्तिया चेव अणवकखवत्तिया चेव ३१, अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा प० तं० अणा उत्तआइयणता चेव अणाउत्तपमज्जणता चेव ३२, अणवकखवत्तिया किरिया दुविहा पं० त० आयसरीरअणवकखवत्तिया चेव परसरीर अणवकखवत्तिया चेव ३३, दो किरियाओ प० तं० पिज्जवत्तिया चेव दोसवत्तिया चेव ३४, पेज्ज वत्तिया किरिया दुविहा प० तं० मायावत्तिया चेव लोभवत्तिया चेव ३५, दोसवत्तिया किरिया

दुविहा प० त० कोहे चेव माणे चेव ३६ (सू० ६०)
स्थानाग सूत्र स्थान २ उद्देश्य १ ।

त० अ० १० सू० ७-५ से इस पाठ का सम्बन्ध है

सव्वकामविरया, सव्वरागविरया, सव्वसंगातीता, सव्वसिणेहाइकता, अकोहा, निकोहा, खीणकोहा, एव माणमायालोहा अणुपुव्वेण अट्ठ कम्मपयडीओ खवेत्ता, उप्पि लोयग्गपइट्ठाणा हवति--औपपातिक सूत्र प्रश्न २१ ॥ सू० १३ ॥

त० अ० १० सू० १-२ से इस पाठ का सम्बन्ध है

पिज्ज दोस मिच्छादसणविजएण भते जीवे कि जणइ ? पि० नाणदसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ । अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगण्ठि विमोयणयाए तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठविसइविह मोहणिज्ज कम्म उग्घाएइ, पचविह नाणावरणिज्ज, नवविह दसणावरणिज्ज, पचविह अतराइयं, एए तिन्नि वि कम्मं से जुगवं खवेइ । तओ

पच्छा अणुत्तर कसिण पडिपुएण निरावरणं विति मिर विसुद्ध लोगालोगप्पभावं केवलवरनाण दंसण समुप्पादेइ। जाव सजोगी भवइ ताव इरियावहिय कम्म निबधइ सुहफरिस दुसमय-ठिइय । त पढमसमए बद्ध बिइयसमए वेइय तइय समयेनिजिएणा त बद्ध पुट्ठ उदीरिय वेइयं नि-जिएण सेयालेय अकम्मचावि भवइ । उत्तराध्ययन सू० अ० २६ सू० ७१ अह आउय पालइत्ता अंतो मुहुत्त-द्धावसेसाए जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइ सुक्कज्झाण झायमाणे तप्पढमयाए मणजोग निरुम्भइ, वयजोग निरुम्भइ, कायजोगं निरुम्भइ, आणपाणुनिरोह करेइ, ईसिपंचरहस्स-क्खरुच्चारणट्ठाए य ण अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कज्झाण झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्त च एए चत्तारि कम्मसे जुगवंखवेइ उत्तराध्ययन सू० अ० २६ प्र० ७२ तओ ओरालिय

तेय कम्माइ सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अ फुसमाणगई उड्ढ एगसमएण अविग्गहेण तत्थ गता सागारोवउत्ते सिज्झई बुज्झइ जाव अन्त करेइ । उत्तराध्ययन अ० २६ प्र० ७३ ।

त० सू० अ० ७ सू० १० ।

दुख मेव वा एसोसो पाणवहस्स फल विवागो इहलोइयो पारलोइयो अप्पसुहो बहुदुक्खो मह ब्भयो बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चती, नय अवेदयित्ता-अत्थिहु मोक्खोति । प्रश्न व्याकरण सू० अ० १-२-३-४-५
एसोसो अलियवयणस्स फलविवागो
एसोसो अदिण्णादाणस्स फलविवागो
एसोसो अबभस्स फलविवागो
एसोसो परिग्गहस्स फलविवागो

तत्वार्थसूत्र अ० ३ सू० ५ से इस पाठ का सम्बन्ध है

पन्नरस परमाहम्मिया पएणत्ता—तं जहा-अंबे १ अंबरिसि २ चेव सामे ३ सबलेत्ति आवरे ४ रुद्दो ५ वरुद्द ६ काले अ ७ महा कालेत्ति ८ आवरे ॥ १ ॥ असिपत्ते ६ धणु १० कुंभे ११ वालुए १२ वेयरणित्ति अ १३ खरसरे १४ महा घोसे १५ एते पन्नरसाहिआ ॥ २ ॥ समवायंग सू० समवाय १५ वां नरयवाला। व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक ३ उद्देश ६। आवश्यक सूत्र० श्रमण सूत्र०। ठाणांग सूत्र० स्थान ६। उत्तराध्ययन सू० अ० ३१। प्रश्न व्याकरण अ० १० ॥

तत्त्वार्थसूत्र अ० १ सूत्र १ से इस पाठ का सम्बन्ध है।

दंसण नाण-चरित्ते, तव विणए सच्च समिइ गुत्तीसु।
जो किरिया भावरुइ, सो खलु किरिया रुई नाम ॥

उत्तराध्ययन अ० २८ गा० २५।

तत्वार्थ सू० अ० ३ सू० २० से इस पाठ का सम्बन्ध है

जम्बुद्दीवेणं दीवे चउद्दस महानईओ पुव्वावरेण लवणसमुद्दं समुप्पेंति-तं जहा-गंगा सिंधू रोहिआ

रोहिअसा हरी हरीकता सीआ सीओदा नरओ-कंता नारिकांता सुवण्णकूला रूप्पकूला रत्ता रत्त वइ ॥

समवायाग सूत्र, समवाय १४ वॉ

तत्त्वार्थ सू० अ० ३ सू० १५ मे इस पाठ का सम्बन्ध है

पउमद्दहपुडरीयद्दहाय दस दस जोयणसयाइ आयामेण पण्णत्ता ॥

समवायाग सूत्र, सू० ११३ ।

तत्त्वार्थ सूत्र अ० ३ सू० १८ से इस पाठ का सम्बन्ध है ।

महापउममहापुडरीयदहाण दो दो जोयण सहस्साइ आया मेणं पण्णत्ता—समवायाग सूत्र-सू० ११५ । **तिगिच्छि केसरी दहाण चत्तारि चत्तारि जोयण सहस्साइं आयामेणं पण्णत्ताइ ॥** समवायाग सूत्र० सू० ११७ ॥

तत्त्वार्थ सूत्र अ० ३ सू० २० से इस पाठ का सम्बन्ध है

तस्स उण पउमद्दहस्स पुरत्थिमिल्लेणं तोर-

णेणं गगा महा नई पवूढा समाणी पुरत्थाभिमुही पंच जोयण सयाइ पव्वएणं गता गंगा वत्तण कूडे आवत्ता समाणी पंच ते वीसे जोयण सए तिण्णि अप्पगूण वीसइ भाए जोयणस्स दाहिणाभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुह पवत्तएण मुत्तावलिहार-संठिएणं साइरेग जोयण सइएणं पवाएणं पवडइ . एवं सिंधू एवि णेयव्वं जाव तस्स ण पउमद्दहस्स पच्चत्थिमिल्लेण तोरणेणं सिंधू आवत्तण कूडे दाहिणाभि मुही सिंधुप्पवाय कुंडं सिंधुद्दीवो अट्ठो सो चेव ॥.. तस्सणं पउमद्द-हस्स उत्तरिल्लेण तोरणेण रोहिअंसा महानई पवूढा समाणी दोण्णि छावत्तरे जोयण सए छच्च एगूण वीसइ भाए जोयणस्स उत्तराभिमुही पव्वएणं गता महया घडमुह पवत्तिएण मुत्तावलिहार सठि-एणं साइरेग जोअण सइएणं पवाएण पवडइ ॥ जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र ४ वक्षस्कार सूत्र ७४ तस्सण महा

पउमद्दहस्स दक्खिणिल्लेण तोरण रोहिआ महाणई पवूढा समाणी सोलस पचुत्तरे जोयण सए पंच य एगूण वीसइ भाए जोयणस्स दाहिणाभिमुही पव्व एणगता महया घडमुहपवित्तिएण मुत्ता वलिहार सठिएण साइरेग दो जोयण सइएण पवाएण पवडइ

तस्सण महा पउमद्दहस्स उत्तरिल्लेण तोरणे ण हरिकता महाणई पवूढा समाणी सोलस पचुत्तरे जोयणसए पच य एगूण वीसइ भाए जोयणस्स उत्तराभिमुही पव्वएण गंता महया घडमुह पव-त्तिएण मुत्तावलिहार सठिएण साइरेग दुजोयण सइएण पवाएण पवडइ ॥ जबू द्वीप० ४ वक्षस्कार सू० ८०

तस्सण तिगिच्छिद्दहस्स दक्खिणिल्लेणं तोरणेणं हरि महाणई पवूढा समाणी सत्त जोअण सहस्साई चत्तारि अ एकवीसे जो अणसए एग च एगूण वीसइ भाग जो अणस्स दाहिणाभिमुही पव्वएण गता महया घड मुह पवित्तिएण जाव साइरेग चउ

जोश्रण सइएग पवाएण पवडइ ॥ तस्सण तिगिच्छिद्दहस्स उत्तरिल्लेण तोरणेण सीश्रोश्रा महाणई पवूढा समाणी सत्तजोश्रणसहस्साइ चत्तारि श्र एगवीसे जोश्रणसए एग च एगूण वीसइ भाग जोश्रणस्स उत्तराभिमुही पव्वएण गता, महया घडमुहपवित्तिएण जाव साइरेग चउजोश्रण सइएणं पवाएण पवडइ जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र, ४ वक्षस्कार (सू० ८४) जम्बूद्दीवे २ णीलवते नाम वासहर पव्वए पएणत्ते, पाईण पडीणायए उदीणदाहिण विच्छिएणे णिसह वत्तव्वया, णीलवतस्स भाणियव्वा, णवर जीवा दाहिणेण, धणु उत्तरेण, एत्थण केसरिद्दहो, दाहिणेणं सीश्रा महाणई पवूढा श्रवसिट्ठ तं चेवत्ति । एव णारिकंताvि उत्तराभिमुही णेयव्वा । जम्बूद्वीप०४० वक्षस्कार (सू० ११०) जम्बूद्दीवे दीवे रुप्पीणाम वासहर पव्वए पएणत्ते । पाईणपडीणायए उदीण दाहिण

विच्छिरणे एव जा चेव महाहिमवतवत्तव्वया सा चेव रुप्पिस्सवि, णवरं दाहिणेण जीवा, उत्तरेणं धणु, अवसेस त चेव। महापुण्डरीए दहे णरकताणदी दक्खिणेण णेयव्वा जहा रोहिआ पुरत्थिमेण गच्छइ—रुप्पकूला उत्तरेणं णेयव्वा जहा हरिकता पच्चत्थिमेण अवसेस तं चेवत्ति
जबूद्दीवे दीवे सिहरी णाम वासहर पव्वए पणत्ते ?
अवसिट्ठ त चेव। पुण्डरीए दहे सुवण्णकूला महाणई दाहिणेण णेयव्वा जहा रोहिअसा पुरत्थिमेण गच्छइ, एव जह चेव गगा सिधूओ तह चेव रत्ता रत्तावईओ णेयव्वाओ, पुरत्थिमेण रत्ता पच्चत्थिमेणं रत्तवइ अवसिट्ठ त चेव (अवसेस भाणियव्वंति), जबुद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र, वक्षस्कार ४ सू० १११

त० अ० ४ सू० २० से इस पाठ का सम्बन्ध है।

कइविहेणं भते! वेउव्वियसरीरे प० ? गोयमा

दुविहे प० त० एगिंदिय वेउव्विय सरीरे, पंचिंदिय-वेउव्वियसरीरे अ एवं जाव सण कुमारे आढत्तं, जाव अणुत्तराण, भवधारणिज्जा, जाव तेसिं रयणी रयणी परिहायइ ॥ समवायांग सूत्र शरीर द्वार (सू० १५२)

तत्त्वार्थसूत्र अ० ३ सूत्र ६ से इस पाठ का सम्बन्ध है।

कहिण भंते ! जंबूद्दीवे ? के महालएण भंते ! जंबूद्दीवे ? २ किं संठिए ण भंते ! जंबूद्दीवे ३ ? किमायार भावपडोयारेण भंते ! जंबूद्दीवे ४ पण्णत्ते गोयमा ? अयण्णं जंबूद्दीवे २ सव्वदीव समुद्दाणं सव्वब्भतराए १ सव्वखुड्डाए २ वट्टे तेल्लापूयसंठाण संठिए वट्टेरह चक्कवाल संठाण संठिए वट्टे पुक्खर कण्णिया संठाण संठिए वट्टे पडिपुण्णचन्द संठाण संठिए ४ एग जोयण सय सहस्स आयाम विक्खभेण तिण्णि जोयण सयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दुण्णि य सत्तावीसे जोयण सए तिण्णि य कोसे

अट्ठावीस च धणु सय तेरस अगुलाइ अद्धगुल च किंचि विसेसाहिय परिक्खेवेण पराणत्ते ।

जबूद्वीप प्रज्ञप्ति वक्षस्कार १ सूत्र (सू० ३)

तत्त्वार्थसूत्र अ० ३ सू० २० मे इस पाठ का सम्बन्ध है ।

जबू मदर—उत्तर दाहिणेण चुल्लहिमवत सिहरीसु वास हरपव्वयंसु दो महद्दहा प० त० बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अराणमराण णातिवट्टति आयामविक्खभउव्वेहसठाणपरिणा-हेण त०--पउमद्दहे चेव पुडरीयदहे चेव ! तत्थण दो देवयाओ महड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठि तीयाओ परिवसति–त०–सिरी चेव लच्छी चेव । एव महाहिमवत रूप्पीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा प० त० वहु सम० जाव तं० महा पउमद्दहे चेव महा पोडरीयद्दहे चेव देवताओ हिरिच्चेव बुद्धिच्चेव एव निसढ नीलवतेसु तिगिंछिद्दहे चेव केसरिद्दहे चेव देवताओ धिती चेव किंत्ति

च्चेव जबू मदर० दाहिणेण महा हिमवताओ वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दहाओ दो महा णइओ पवहति तं० रोहियच्चेव हरिकंता चेव । एवं निसढाओ वासहर पव्वताओ तिगिं च्छिद्दहाओ दो म० त० हरिच्चेव सीओअच्चेव जबू मंदर०उत्तरेण नीलवताओ वासहर पव्वताओ केसरि द्दहाओ दो महानईओ पवहति त० सीता चेव नारिकता चेव एव रूप्पीओ वासहर पव्व-ताओ महापोंडरीयद्दहाओ दो महानईओ पव-हति त० णरकंता चेव रुप्पकूला चेव जबूमदर दाहिणेणं भरहे वासो दो पवायद्दहा प० त० बहु सम तं० गगप्पवातद्दहे चेव सिंधुप्पवायद्दहे चेघ एव हिमवपवासे दो पवायद्दहा प० तं०-बहु० तं० रोहियप्पवायद्दहे चेव रोहियसपवातद्दहे चेव जंबूमंदर दाहिणेणं हरिवासे वासे दो पवाय दहा प० बहु० सम० तं० हरिपवातद्दहे चेव हरि-

कंत पवातद्दहे चेव जंबू मंदर उत्तर दाहिणेणं महा विदेहवासे दो पवायद्दहा प०बहु सम०जाव सीअप्प वातद्दहे चेव सीतोदप्पवायद्दहे चेव जबूमदरस्स उत्तरेणं रम्मपवासे दो पवायद्दहा—प०त०बहु०जाव-नरकतप्पवायद्दहे चेव णारीकतप्पवायद्दहे चेव एव हेरन्नवते वासे दो पवायद्दहा प०तं०बहु०सुवन्न कुलप्पवायद्दहे चेव रूप्पकूल प्पवायद्दहे चेव जबूमदर उत्तरेण एरवए वासे दो पवायद्दहा प० बहु० जाव रत्तप्पवायद्दहे चेव रत्तावइ प्पवायद्दहे चेव जबूमदर दाहिणेण भरहे वासे दो महानई-ओ प० बहु० जाव गगा चेव सिंधू चेव एव जधा पवात द्दहा एव णईओ भाणियव्वाओ जाव ए-रवए वासे दो महानई ओ प० बहु सम तुल्लाओ जाव रत्ता चेव रत्तवती चेव ॥ ठाणाग सूत्र, स्थान २ उ० ३ सू० ८८।

त० अ० ४ सूत्र ११ से इस पाठ का सम्बन्ध है।

पिसाय भूय जक्ख रक्खस किंनर किंपुरिसमहोरग गधव्वा ॥ प्रश्न व्याकरण अ० ५ सूत्र १६ ॥
अट्ठ विधा वाणमतरा देवा पं० तं० पिसाया भूता जक्खा रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गधव्वा ॥ ठाणग सूत्र स्थान ८ उद्देश ३ (सू० ६५४)
पिसायभूया जक्खा य रक्खसा किन्नराय किंपुरिसा महोरगा य गधव्वा अट्ठविहा वाणमतरिया—देविंद थ० गा० ६७।

त० अ० ८ सू० १ से इस पाठ का सम्बन्ध है

अज्झत्थहेउं निययस्स बंधो संसारहेउं च वयति बधो—उत्तराध्ययन सू० अ० १४ काव्य १६ ॥

त० अ० ५ सू० ४ से इस पाठ का सम्बन्ध है

कतिविहेणं भंते बंधे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे बधे पण्णत्ते, तं जहा—इरियावहियबंधे य । सम्पराइय बधेय ॥ व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक ८ उ० ८ ॥

तत्त्वार्थ अ० ६ सू० ३४ व ३५ से सम्बन्ध है

आर्तं रौद्र भवेदत्र, मन्द धर्म्यं तु मध्यमम्।
षट् कर्म प्रतिमा-श्राद्ध-व्रत-पालनसंभवम् ॥ २५ ॥
अस्तित्वात् नो कषायाणामत्रार्तस्यैव मुख्यता।
आज्ञाद्यालंबनोपेत--धर्मध्यानस्य गौणता ॥

--गुण स्थान क्रमारोहण

त० सूत्र अ० ५ सूत्र ३६ से इस पाठ का सम्बन्ध है

से किं त बंधणपच्चइए २ जण्णं परमाणु-पोग्गला दुपएसिया तिपएसिया जावदस पएसिया संखेज्ज पएसिया असंखेज्जपएसिया अणंत पए सियाणं खंधाणं वेमाय निद्धयाए वेमाय लुक्ख-याए वेमाय निद्ध लुक्खयाए एवं बंधण पच्चइ-एणं बंधे समुप्पज्जइ जहण्णेणं एक्कसमयं उक्को-सेणं असंखेज्ज काल मेत्त बंधण पच्चइए ॥ व्याख्या प्रज्ञप्ति श० ८ उ० ६

त० सूत्र अ० ३ सू० १०-११ से इस पाठ का सम्बन्ध है

इहेव जंबूद्दीवे दीवे सत्त वासहर पव्वया प०

त० चुलहिमवते, महाहिमवने, निसढे, नील-
वते, रुप्पि, सिहरी, मदरे।" जंबूद्दीवे दीवे सत्त
वासा प० त० भरहे, हेमवते, हरिवासे, महा
विदेहे, रम्मए, एररणव्वए, एरवए । समवायांग
सूत्र समवाय ७ ॥

त० सूत्र अ० ५ सूत्र ११ नतो अच्छेज्जा प० त०
समये, पदेसे, परमाणु १ एवमभेज्जा २ अडज्झा
३ अगिज्झा ४ अणट्ठा ५ अमज्झा ६ अपएसा ७।
नतो अविभातिमा प० समते, पएसे, परमाण्।
स्थानांग सूत्र स्थान ३ उद्देश २ सू० (१६५)

तत्त्वा० अ० २ सू०२३ से इस पाठ का सम्बन्ध है—

इंदिय-परिबुड्ढि-कायव्वा।

—प्रज्ञापना, पद १५ उ०२

त० सूत्र अ० ५ सूत्र ३६ से इस पाठ का सम्बन्ध है

कालश्च अद्धा समए—प्रज्ञापन सूत्र पद १ (सू० ३)

त० सू० अ० ५ सूत्र २०–२१।

जीवेणं भंते ! सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार परक्कमे आयभावेणं जीवभाव उवदंसेई ति वत्तव्वंसिया ? हंता गोयमा ! जीवेणं सउट्ठाणे जाव उवदंसेईति वत्तव्वंसिया से केणट्ठेणं जाव वत्तव्वंसिया जीवेणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, एवं सुयनाणपज्जवाणं ओहिनाणपज्जवाणं मणनाणपज्जवाणं केवलनाणपज्जवाणं, मइअन्नाण पज्जवाणं, सुयअन्नाणपज्जवाणं, विभंगनाणपज्जवाणं, चक्खुदंसणपज्जवाणं, अचक्खुदंसण पज्जवाणं, ओहि दंसण पज्जवाणं, केवलदंसणपज्जवाणं, उवओग गच्छइ उवओगलक्खणेणं जीवे से, एणट्ठेणं एवं वुच्चइ गोयम ! जीवे सउट्ठाणे जाव वत्तव्वंसिया । व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक २ उद्देश्य ॥१०॥

त० सू० अ० ३ सू० ३६ से इस पाठ का सम्बन्ध है।

तिरिक्खजोणियाणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्त, उक्को-

सेण तिन्नि पलिओवमाइं। जीवाभिगम सू० प्रतिपत्ति ३ उ० २ सू० २२२।

तत्वा० अ० ५ सू० १५ से इस पाठ का सम्बन्ध है।

दव्वओण एगे जीवे सअंते, खेत्तओणं जीवे असंखेज्ज पएसिए, असखेज्ज पएसोगाढे।

—व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक २ उ० १ सू० ६१

त० सू० अ० ३ सू० १

एगमेगाए पुढवीहि तिवलएहिं सव्वओस-मता सपरिक्खित्ता त० घणोदधि वलएणं घणवात वलएण तणुवाय वलएण। स्थानाग सू० स्थान ३ उ० ४ सू०

त० सू० अ० ५ सूत्र ८

केवतियाण भंते! लोयागासपएसा पन्नत्ता? गोयमा! असखेज्जा लोयागासपएसा पन्नत्ता। एगमेगस्सण भंते! जीवस्स केवइया जीवपएसा पन्नत्ता? गोयमा! जावतियालोगागासपएसा

एगमेगस्स णं जीवस्स एवतिया जीवपएसापन्नत्ता ।
व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक ८ उद्देश्य १० सू० ३५८

त० सू० अ० २ सूत्र ११

जे इमे असन्निणो पाणा त जहा—पुढविकाइया वणस्सइ काइया छट्ठावेगइया तसा पाणा जेसिं नो तक्काइवा सन्नाइवा पन्नाइवा मणाइवा वइवा ।
सूयगडाग सूत्र, द्वितीय श्रुतस्कध अ० ४ सूत्र ४

त० सू० अ० ४ सूत्र १३

अत्थं पव्वय एयं पव्वइन्दे पदाहिणावत्तं मडलायर मेरुं अणु परियट्टति ॥ २८ ॥
जीवाभिगम सू० तृतीय प्रतिपत्ति—मनुष्य क्षेत्र वर्णन ॥

त० सूत्र अ० ७ सूत्र ८

तत्थिमा पढमा भावणाः—सोतसेण जीवे मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइ सुणेइ, मणुण्णामणुण्णेहिं-सद्देहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा णो मुज्झेज्जा णो अज्झोवज्जेज्जा णो विणिघायमाव-

जेज्जा केवली बूया णिग्गंथेण मणुराणामणुराणेहिं सद्देहिं सज्जमाणे जाव विणिग्घायमावज्जमाणे सति भेया सति विभगा सति केवलि पराणत्ताओ धम्माओ भसेज्जा (१०६४)

ण सका ण सोउं सद्दा सोयविसयमागता।
रागदोसाउ जे तत्थ, त भिक्खू परिवज्जए (१०६५)

सोयओ जीवो मणुराणामणुराणाइं सद्दाइ सुणेति० पढमा। (१०६६)

अहावरा दोच्चा भावणा, चक्खूओ जीवो मणुराणामणुणुइ रूवाइ पासइ मणुराणामणुराणेहिं रूवेहिं णो सज्जेज्जा णो रज्जेज्जा जावणो विणिग्घाय मावज्जेज्जा केवली बूया मणुराणामणुराणेहिं रूवेहिं सज्जमाणे रज्जमाणे जाव विणिग्घायमावज्जमाणे संति भेया सति विभगा जाव भंसेज्जा (१०६७)

ण सका रूवमदट्ठु चक्खुविसयमागय।

राग दोसाउ जे तत्थ त भिक्खू परिवज्जए (१०६८)

चक्खूओ जीवो मणुण्णा मणुण्णाइ रूवाइ पासति० दोच्चा भावणा (१०६६)

अहावरा तच्चा भावणा घाणतो जीवो मणुण्णा मणुण्णाइ गधाइ अग्घायइ मणुण्णामणुण्णेहिं गधेहिं णो सज्जेज्जा णो रज्जेज्जा जाव णो विणि-ग्घायमावज्जेज्जा केवली बूया मणुण्णमणुण्णेहिं गधेहि सज्जमाणे रज्जमाणे जाव विणिग्घाय-मावज्जमाणे सति भेदा सति विभगा जाव भसेज्जा (१०७०)

णो सक्का गधमग्घाउ णासाविसयमागय ।
रागदोसाउ जे तत्थ त भिक्खू परिवज्जए (१०७१)

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गधाइं अग्घायति० तच्चा भावणा (१०७२) अहा वरा चउत्था भावणा जिब्भाओ जीवो मणुण्णा मणुण्णाइ रसाइ अस्सादेति मणुण्णामणुण्णेहिं

रसेहिं णो रज्जेज्जा जावणो विणिग्घायमाव ज्जेज्जा केवली बूया णिग्गथेण मणुण्णामणुण्णेहिं रसेहिं सज्जमाणे जाव विणिघायमावज्जमाणे सति भेदा जाव भसेज्जा (१०७३)

णो सक्क रसमणास्सातु जीहाविसयमागय ।
रागद्दोसा उ जे तत्थ तभिक्खू परिवज्जए (१०७४)

जीहाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइ रसाइ अस्सा देति च उत्था भावणा (१०७५)

अहावरा पचमा भावणा मणुण्णामणुण्णाइ फासाइ पडिसवेदेति मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा णो गिज्झेज्जा णो मुज्झेज्जा णो अज्झोवज्जेज्जा णो विणिग्घायमाव-ज्झेजा केवली बूया णिग्गथेणं मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं सज्जमाणे जाव विणिग्घायमावज्जमाणे संति भेदा सति विभगा संति केवली पण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा (१०७६)

णो सक्का फास ण वेदेतुं फास विसयमागयं
राग दोसा उ जे तत्थ ते भिक्खू परिवज्जए (१०७७)
फासओ जीवो मणुरणामणुरणाइ फासाइ पडिसं-
वेदेति० पचमा भावणा (१०७८) एत्ता वयाव मह-
व्वते सम्म काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए
अहिट्ठिते आणाए आराहिये यावि भवति । पचम
भते महव्वय (१०७६) इच्चे तेसिं महव्वतेसिं पण-
वीसाहिं य भावणाहिं सपरणे अणगारे अहासुय
अहाकप्प अहामग्ग सम्म काएण फासित्ता
पालित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आणाए आराहियावि
भवति (१०८०)

निम्नलिखित पाठ तत्त्वार्थ सूत्र अ० २ सूत्र ४२ के साथ सम्बन्ध रखता है ।

नेया सरीर जहा ओरालियं णवर ।
सव्व जीवाण भाणियव्वं एव कम्मग सरीरपि ॥
व्या० श० १६ उ० १०

निम्नलिखित पाठ तत्त्वार्थसू० अ० ६ सू० ११ वें से सम्बन्ध रखता है।

पादोसियाण भंते ! किरिया कतिविहा प० ? गोयमा ! तिविहा प० त०–जेण अप्पणो वा परस्स वा तदुभयस्स वा असुभ मणं संपधारेति, सेत्तं पादोसिया किरिया, पारियावणियाणं भंते ! किरिया कतिविहा प०? गोयमा ! तिविहा प०त०–जेणं अप्पणो वा परस्स वा तदुभयस्स वा अस्साय वेदणं उदीरेति सेत्त पारियावणिया किरिया, पाणातिवाय किरियाण भंते ! कतिविहा प० गोयमा ! तिविहा प० त० -जेण अप्पाणं वा पर वा तदुभय वा जीवियाओ ववरोवेइ सेत पाणाइवाय किरिया।

प्रज्ञापना सू० पद २२ सू० २७९

निम्नलिखित पाठ तत्त्वार्थ सू०अ० सू० १० से सम्बन्ध रखता है।

बहु दुक्खाहु जतवो—

आचाराङ्ग सू० प्रथम श्रुतस्कन्ध अ० ६ उद्देश्य १ सू० ३४३

अहो असुभाण कम्माणं निज्जाणं पावग इम ।

उत्तराध्ययन सू० अ० २१ गा० ६

निम्नलिखित पाठ—त० अ० १–सू० २ से सम्बन्ध रखता है ।

नाणेण जाणई भावे दंसणेण य सद्दहे ।
चरित्तेण निगिण्हाइ तवेण परिसुज्झई ॥

उत्त० अ० २८ गा० ३५

परिशिष्ट नं० ३

दिगम्बर श्वेताम्बराम्नायसूत्रपाठभेदः ।

प्रथमोऽध्यायः

सूत्राङ्का. दिगम्बराम्नायी सूत्रपाठ	सूत्राङ्का श्वेताम्बराम्नायी सूत्रपाठ
१५ अवग्रहेहावायधारणा	१५ अवग्रहेहापायधारणा
x x x	२१ द्विविधोऽवधि.
२१ भवप्रत्ययोवधिर्देवनारकाणाम्	२२ भवप्रत्ययो नारकदेवानाम्
२२ क्षयोपशमनिमित्त षड्विकल्प' शेषाणाम्	२३ यथोक्तनिमित्त
२३ ऋजुविपुलमती मन. पर्यय.	२४ *पर्याय

* भाष्य के सूत्रों मे सर्वत्र मन' पर्यय के बदले मन पर्याय पाठ है ।

२५ विशुद्धक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमन पर्यययो	२६ पर्यययो
२८ तदनन्तभागे मन पर्ययस्य	२९ .... पर्ययस्य
३३ नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्द-समभिरूढैवम्भूता नया	३४ सूत्रशब्दा नया
× × ×	३५ आद्यशब्दौ द्वित्रिभेदौ

द्वितीयोऽध्यायः

५ ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदा सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च	५ , दर्शनदानादिलब्धय ..
७ जीवभव्याभव्यत्वानि च	७ भव्यत्वादीनि च
१३ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतय. स्थावरा	१३ पृथिव्यब्वनस्पतय. स्थावरा

१४ द्वीन्द्रियादयस्त्रसा	१४ तेजोवायूद्वीन्द्रियादयश्च त्रसा
x x x	१६ उपयोग' स्पर्शादिषु
२० स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तदर्था	२१ शब्दास्तेषामर्था
२२ वनस्पत्यन्तानामेकम्	२३ वाय्वन्तानामेकम्
२६ एकसमयाऽविग्रहा	३० एकसमयोऽविग्रह
३० एक द्वौ त्रीन्वाऽनाहारक	३१ एक द्वौ वानाहारक
३१ सम्मूर्च्छनगर्भोपपादा जन्म	३२ सम्मूर्च्छनगर्भोपपाता जन्म
३३ जरायुजाण्डजपोताना गर्भ.	३४ जराय्वण्डपोतजाना गर्भ
३४ देवनारकाणामुपपाद	३५ नारकदेवानामुपपात
३७ पर पर सूक्ष्मम्	३८ तेषा पर पर सूक्ष्मम्
४० अप्रतीघाते	४१ अप्रतिघाते
४३ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्य	४४ . कस्याऽऽचतुर्भ्य

४६ औपपादिक वैक्रियिकम्	४७ वैक्रियमोपपातिकम
४८ तैजसमपि	X X X
४९ शुभ विशुद्धमव्याघाति चाहारक प्रमत्तसयतस्यैव	४९ चतुर्दश-पूर्वधरस्यैव
५२ शेषास्त्रिवेदा	X X X
५३ औपपादिकचरमोत्तमदेहा. सख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुष'	५२ औपपातिकचरमदेहोत्तमपुरुषा-सख्य

तृतीयोऽध्याय:

१ रत्नशर्करावालुकापङ्कधूमतमो-महातम:प्रभाभूमयो घनाम्बु-वाताकाशप्रतिष्ठा: सप्ताधोऽध'	१ सप्ताधोऽध पृथुतरा
२ तासु त्रिंशत्पञ्चविंशतिपञ्चदश-दशत्रिपञ्चोनेकनरकशतसहस्रा-	२ तासु नरका

णि पञ्च चैव यथाक्रमम्	
३ नारका नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रिया	२ नित्याशुभतरलेश्या
७ जम्बूद्वीपलवणोदादय शुभनामानो द्वीपसमुद्रा	७ जम्बूद्वीपलवणादय शुभनामानो द्वीपसमुद्रा
१० भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षा क्षेत्राणि	१० तत्र भरत
१२ हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममया	× ×
१३ मणिविचित्रपार्श्वा उपरिमूले च तुल्यविस्तारा	× ×
१४ पद्ममहापद्मतिगिञ्छकेसरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषा-	

मुपरि	X	X
१५ प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्ध-विष्कम्भो ह्रदः		
१६ दशयोजनावगाह.	X	X
१७ तन्मध्ये योजन पुष्करम्	X	X
१८ तद्द्विगुणद्विगुणाह्रदा पुष्क-राणि च	X	X
१९ तन्निवासिन्यो देव्य श्रीह्रीधृति-कीर्तिबुद्धिलक्ष्म्य पल्योपम-स्थितय. ससामानिकपरिषत्का	X	X
२० गङ्गासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्ध-रिकान्तासीतासीतोदानारीनर-कान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तो	X	X

दाः सरितस्तन्मध्यगा	x	x
२१ द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगा	x	x
२२ शेषास्त्वपरगाः	x	x
२३ चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गङ्गा-सिन्ध्वादयो नद्यः	x	x
२४ भरतः षड्विंशतिपञ्चयोजनशत-विस्तारः षट् चैकोनविंशति-भागा योजनस्य	x	x
२५ तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्ष-धरवर्षाविदेहान्ता	x	x
२६ उत्तरा दक्षिणतुल्या	x	x
२७ भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्सम-याभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम्	x	x

२८ ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिता:		X	X
२९ एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हैम- वतकहारिवर्षकदैवकुरुवका		X	X
३० तथोत्तरा		X	X
३१ विदेहेषु सख्येयकाला:		X	X
३२ भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य- नवतिशतभाग:		X	X
३८ नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमा- न्तर्मुहूर्ते	१७	परापरे	
३९ तिर्यग्योनिजानाञ्च	१८ तिर्यग्योनीनाञ्च		

चतुर्थोऽध्याय:

२ आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्या	३ तृतीय: पीतलेश्य:
	७ पीतान्तलेश्या:

८ शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराः	९ ... ... प्रवीचाराद्वयोर्द्वयोः
१२ ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च	१३ .....सूर्याश्चन्द्रमसौ..... प्रकीर्णतारकाश्च
१९ सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्र-ब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्टशुक्र-महाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानत-प्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्तजयन्ता-पराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च	२० सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्र-ब्रह्मलोकलान्तकमहाशुक्रसहस्रारे .. .. सर्वार्थसिद्धे च
२२ पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु	२३ .. लेश्या हि विशेषेषु
२४ ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः	२५ लोकान्तिकाः
२५ सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोय-	२६ ..

तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च	व्याबाधमरुतः (अरिष्टाश्च) ४
२८ स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां	२९ स्थितिः
सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीन-	३० भवनेषु दक्षिणार्धाधिपतीनां
मिताः	पल्योपममध्यर्धम्
x x	
x x	३१ शेषाणां पादोने
x x	३२ असुरेन्द्रयोः सागरोपममधिकं च
२९ सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके	३३ सौधर्मादिषु यथाक्रमम्
	३४ सागरोपमे
	३५ अधिके च
३० सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त	३६ सप्त सानत्कुमारे
३१ त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपञ्चद-	३७ विशेषत्रिसप्तदशैकादशत्रयोदश-
शभिरधिकानि तु	पञ्चदशभिरधिकानि च

३३ अपरा पल्योपमधिकम	३९ अपरा पल्योपममधिकं च
	४० सागरोपमे
	४१ अधिके च
३९ परा पल्योपमधिकम्	४७ परा पल्योपमम्
४० ज्योतिष्काणां च	४८ ज्योतिष्काणामधिकम्
	४९ ग्रहाणामेकम्
	५० नक्षत्राणामर्द्धम्
	५१ तारकाणां चतुर्भाग
४१ तदष्टभागोऽपरा	५२ जघन्या त्वष्टभागः
x x	५३ चतुर्भागः शेषाणाम्
४२ लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम	x x

पञ्चमोऽध्यायः

२ द्रव्याणि	२ द्रव्याणि जीवाश्च
३ जीवाश्च	x x
८ असङ्ख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैक जीवानाम्	७ असङ्ख्येयाः प्रदेशाधर्माधर्मयोः
x x	८ जीवस्य च
१६ प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत्	१६ . विसर्गाभ्यां
२६ भेदसङ्घातेभ्य उत्पद्यन्ते	२६ संघातभेदेभ्य उत्पद्यन्ते
२९ सद्द्रव्यलक्षणम्	x x
३७ बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च	३६ बन्धे समाधिकौ पारिणामिकौ
३९ कालश्च	३८ कालश्चेत्येके
x x	४२ अनादिरादिमांश्च
x x	४३ रूपिष्वादिमान्
x x	४४ योगोपयोगौ जीवेषु

३ शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य	३ शुभ. पुण्यस्य
	४ अशुभ' पापस्य
५ इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पञ्चचतुः पञ्चपञ्चविंशतिसंख्या पूर्वस्य भेदाः	६ अव्रतकषायेन्द्रियक्रिया' × ×
६ तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभावाधिकरण- वीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः	७ × भाववीर्याधिकरण- विशेषे—
१७ अल्पारम्भपरिग्रहत्व मानुषस्य	१८ अल्पारम्भपरिग्रहत्व स्वभावमा- र्दव च मानुषस्य
१८ स्वभावमार्दव च	× ×
२१ सम्यक्त्वं च	× ×
२३ तद्विपरीत शुभस्य	२२ विपरीत शुभस्य
२४ दर्शनविशुद्धिविनयसम्पन्नता शी-	. ... .

लब्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णज्ञानोप- योगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदा- चार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यका- परिहाणिर्मार्गप्रभावना प्रवचन- वत्सलत्वमितितीर्थकरत्वस्य		ऽभीक्ष्ण सङ्घसाधुसमाधिर्वैयावृत्यकरण . तीर्थकृत्त्वस्य

सप्तमोऽध्यायः

४ वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमि- त्यालोकितपानभोजनानि पञ्च	X	X
५ क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्याना- न्यनुवीचिभाषणं च पञ्च	X	X
६ शून्यागारविमोचितावासपरोपरो- धाकरणभैक्ष्यशुद्धिसधर्म्माविसं-	X	X

वादा पञ्च	
७ स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहराङ्ग-	x x
निरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टर-	
सस्वशरीरसंस्कारत्यागा पञ्च	x x
८ मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेष-	
वर्जनानि पञ्च	
९ हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम्	४ हिंसादिष्विहामुत्र चापायावद्यदर्शन
१२ जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैरा	७ जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैरा-
ग्यार्थम्	ग्यार्थम्
२८ परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीता	२३ परविवाहकरणेत्वरपरिगृहीता
परिगृहीतागमनानङ्गक्रीडाकाम-	
तीव्राभिनिवेशा	
३२ कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्य्यासमीक्ष्या-	२७ कन्दर्पकौकुच्य ..

धिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि	णोपभोगाधिकत्वानि
३४ अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादानसस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि	२६ सस्तारो
	.. नुपस्थापनानि
३७ जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबंधनिदानानि	३२ निदानकारणानि

अष्टमोऽध्यायः

२ सकषायत्वाज्जीवः कर्म्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बन्ध	२ पुद्गलानादत्ते
x x	३ स बन्धः
४ आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः	५ .. .... मोहनीयायुष्कनाम

६ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानाम्	७ मत्यादिनाम्
७ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च	८ . ... स्त्यानगृद्धिवेदनीयानि च
९ दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायाकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदा सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यऽकषायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः	१० .. मोहनीयकषायनोकषाय . द्विषोडशनव .. . तदुभयानि कषायनोकषायावनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरणसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदाः

१३ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम्	१४ दानादीनाम्
१६ विंशतिर्नामगोत्रयो.	१७ नामगोत्रयोर्विंशतिः
१७ त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुष	१८ युष्कस्य
१९ शेषाणामन्तमुंहूर्ता	२१ मुहूर्तम्
२४ नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिता' सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशा	२५ .. क्षेत्रावगाहस्थिताः ..
२५ सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणिपुण्यम्	२६ सद्वेद्यसम्यक्त्वहास्यरतिपुरुष-वेदशुभायु
२६ अतोऽन्यत्पापम्	× ×

नवमोऽध्यायः

६ उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्य-संयमतपस्त्यागाकिञ्चन्यब्रह्मचर्या-	६ उत्तम क्षमा . .

णि धर्म	
१७ एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकान्नविंशति	१७ विंशते'
१८ सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसाम्पराययथाख्यातमिति चारित्रम्	१८ छेदोपस्थाप्य यथाख्यातानि चारित्रम्
२२ आलोचनप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापना	२२ स्थापनानि
२७ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात्	२७ निरोधो ध्यानम्
× ×	२८ आमुहूर्तात्
३० आर्तममनोज्ञस्य सम्प्रयोगे त	३१ आर्तममनोज्ञाना

द्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहार	.. ....
३१ विपरीत मनोज्ञस्य	३३ विपरीत मनोज्ञानाम्
३६ आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम्	३७ . .... धर्ममप्रमत्तसंयतस्य
x x	३८ उपशान्तक्षीणकषाययोश्च
३७ शुक्ले चाद्ये पूर्वविद.	३९ शुक्ले चाद्ये
४० त्र्येकयोगकाययोगायोगानाम्	४२ तत्त्र्येककाययोगायोगानाम्
४१ एकाश्रय सवितर्कविचारे पूर्वे	४३ सवितर्के पूर्वे

दशमोऽध्यायः

२ बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्या कृत्स्न-कर्मविप्रमोक्षो मोक्षः	२ बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्या।
x x	३ कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्ष
३ औपशमिकादिभव्यत्वाना च	४ औपशमकादिभव्यत्वाभावाच्चा-

।	न्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शन-सिद्धत्वेभ्यः
४ अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शन सिद्धत्वेभ्य'	X X
६ पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बन्धच्छेदा-तथागतिपरिणामाच्च	६ . . परिणामाच्च तद्गतिः
७ आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगत-लेपालाबुवदेरण्डबीजवदग्निशि-खावच्च	X X
८ धर्मास्तिकायाभावात्	X X

—*—

तत्त्वार्थसूत्र जैनागमसमन्वय
हिन्दी भाषानुवाद सहित

यह जो पुस्तक आपके हाथों में है इसका एक अलग संस्करण हिन्दी अनुवाद सहित भी छपा हुआ है। अनुवादक हैं—जैन ससार के धुरन्धर विद्वान्, साहित्यरत्न, जैनधर्मदिवाकर उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज। भाषानुवाद बड़ा सरल और विस्तृत है। प्राकृत के साथ सस्कृत छाया भी दे दी गई है। टीका के सम्बन्ध में विशेष प्रशसा की आवश्यकता नही। टीकाकार मुनिजी का नाम-मात्र ही पर्याप्त है। मूल्य २) डाकव्यय अलग छपाई बढ़िया बड़े मोटे टाइप में हुई है।